Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ज्योति-पथ

जीवन को
प्रेरित करनें वाले
महापुरुषों के
उद्‌बोधक प्रसंग

CC-0 Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

सत्यानन्द आर्य

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

10.3

अर्पिता

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

॥ ओ३म् ॥

ज्योति-पथ

सत्यानन्द आर्य

विचार प्रकाशन

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ज्योति-पथ

प्रथम संस्करण —१९९९

मूल्य : २५ रुपये

प्रकाशक :

● **विचार प्रकाशन**
सुक्षिति १९, बालीगंज
सरकुलर रोड, कलकत्ता-१९

● सुक्षिति ७/७८, पंजाबी वाग
नई दिल्ली-११००२६

मुद्रक :

मयंक प्रिंटर्स, ६४, नाईवाला
करौल वाग, नई दिल्ली-११०००५
दूरभाष : ५७८३४०९, ५७५१३३०

CC-0.Panini Kaṇya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुरोवाक्

त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्
उर्वारुकमिव वन्धनान्मृत्योर्मुक्षीयमामृतात॥

वेद के इस मन्त्र में मानव द्वारा अच्छा जीवन जीकर फिर अमरत्व प्राप्त करने की भगवान् से प्रार्थना की गई है। अच्छे जीवन के लिए पके हुए खरवूजे की उपमा दी गई है। खरवूजा पक जाने पर अच्छी सुगन्ध और अच्छी मिठास देकर अपनी लता से अपने आप पृथक् हो जाता है। इसी प्रकार हम जव अपने शरीर को त्यागें तव अपने शुभ क़र्मों की सुगन्ध और मिठास इस दुनियाँ को देकर जाएं ताकि इस लोक में रहने पर भी हमारे कर्मों, गुणों और स्वभाव की चर्चा सदैव वनी रहे।

अच्छा जीवन विताकर संसार को सुगन्धि देने वालों की प्रशंसा चिरकाल से होती आई है। दिवंगत होने वाले महात्माओं, संतों, विचारकों, वैज्ञानिकों, वीर योद्धाओं और त्यागी तपस्वियों के गुणों का जव हम ध्यान करते हैं तव ऐसा लगता है आज भी हमारे मध्य में वे उपस्थित हैं। उनकी यह उपस्थिति निराशा के क्षणों में आशा, क्रोध में शान्ति, कायरता में वीरता तथा भयभीत अवस्था में अभयदान के विचारों का संचार करती है। इस विशाल सृष्टि में ऐसे अमर और महान् आत्माओं की कोई कमी नहीं है। सर्वत्र विखरे हुए इन रत्नों को अपनी झोली में जितना प्राप्त कर सकें, यह हमारी क्षमता पर निर्भर है। हर काल, देश, भाषा और सम्प्रदायों के मध्य से चुनने की उदारता और योग्यता हममें होनी चाहिए। ऐसा मन वना लेने पर प्रत्येक सन्त और सन्त वाणी हमें अपना लगने लगती है।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इन सब अच्छाइयों को प्राप्त करने में हमारे प्राचीन ग्रंथ रामायण, महाभारत से लेकर प्रत्येक काल के इतिहास, व्यक्तियों के जीवन वृत्तों और आत्मचरित्रों के साथ-साथ लोक कथाएं भी वहुत अच्छे स्रोत हैं। घटनाएँ घटित होती हैं फिर इतिहास लिखे जाते हैं। महान् व्यक्ति संसार से विदा हो जाते हैं तव उनके जीवन चरित्र प्रकाशित होते हैं। निष्काम भाव से लिखने वाले लेखकों का योगदान मानव कल्याण में वहुत उपयोगी होता है। रत्नों को पहचान कर उनको दर्शनीय वना देने के इस जौहरी सदृश्य दायित्व को निभाने वाले लेखकों का हमें कृतज्ञ होना चाहिए। यह कृतज्ञता कितनी महत्वपूर्ण है इसका एक उदाहरण आदि कवि वाल्मीकि द्वारा प्रणीत रामायण है। रामायण कथा का वखान करने वाले वाल्मीकि की तीनों लोकों में भ्रमण करने वाले देवर्षि नारद से भेंट हुई। भेंट का सुयोग पाकर वाल्मीकि ने एक जिज्ञासा देवर्षि के सम्मुख रखी। तपस्वी ने पूछा कि हे देव! वर्तमान समय में इस लोक में गुणवान तथा बलशाली कौन है? धर्मात्मा तथा वचन का पक्का और दूसरों के द्वारा किए गए उपकार को मानने वाला कौन है? चरित्र का धनी प्राणीमात्र का हितैषी, विद्या बुद्धि सम्पन्न शक्तिमान् और सर्वांगीण सुन्दर व्यक्ति कौन है? इस प्रकार के अनेक प्रश्न देवर्षि से कर दिये। देवर्षि ने वहुत सोच कर उत्तर दिया कि समस्त गुण एक व्यक्ति में होने अत्यन्त दुर्लभ है। किन्तु वर्तमान में इक्ष्वाकु वंश में उत्पन्न मर्यादा पुरुषोत्तम रामचन्द्र इन सव गुणों में पूर्णतया शोभित हैं। देवर्षि ने वाल्मीकि के सामने श्रीराम जी का पूरा जीवन वृत्त सुना दिया। इतने सुन्दर जीवन गाथा को सुनकर ऋषि ने उसे पद्यमय भाषा में निर्मित करने का संकल्प कर लिया। रामायण जैसे अद्वितीय काव्य ग्रंथ की रचना करके आदि कवि ने युगों-युगों तक के मानवों

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

को श्रेष्ठ उपहार दे दिया। मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान् राम के चरित्र गान में इतना माधुर्य और आदर्श भरा है कि भगवान् के प्रत्येक कार्य और भगवान् से संवंधित सभी प्रियजन गुणों की सुगन्धि से ओत-प्रोत हैं। लाखों वर्ष पूर्व का यह इतिहास आज भी नूतन है। इसी के आधार पर सैकड़ों प्रकार की रामायण वर्तमान में प्रचलित है। भगवान् राम का जीवन पतित पावन है। इसकी कथा में हृदय परिवर्तन की एक घटना का उल्लेख कर देना चाहता हूँ। दो भाइयों के वीच सम्पत्ति वंटवारे का झगड़ा था। आपस में फैसला न होने से कचहरी में मामला चल रहा था। कचहरी की सुनवाई वाले दिन एक भाई कुछ पहले आ पहुँचे। बाहर के प्राँगण में बैठकर रामचरित मानस का पाठ करने लगा। चित्रकूट का वह प्रसंग सामने था, जिसमें अयोध्या के भाइयों के बीच अयोध्या का राज्य गेंद बना हुआ था। कोई लेने को तैयार न था। कचहरी में बैठे भाई की इस घटना ने मानो आखें खोल दी। दूसरे भाई के पास जाकर कोरे कागज़ पर सही करके दे दिया जो चाहो लिख लो, मुझे कुछ नहीं चाहिए। दूसरा भाई भी पसीज गया। कचहरी से वाहर ही फैसला करके घर आ गये। इतनी लम्बी कहानी को लिखने का तात्पर्य है कि जो बात वड़े-वड़े उपदेशों, प्रवचनों और सलाहों से नहीं बन पाती, वही वात किसी घटना के सुनने-पढ़ने से सुलझ जाती है। आवश्यकता है, ऐसे साहित्य को अपने घरों में कार्यालयों और यात्राओं में साथ रखने की।

महापुरुषों के जीवन की झांकियों को संकलित करने का एक प्रयोग प्रिय अनुज सत्यानन्द आर्य ने किया है। इनकी इस प्रतिभा को सम्वल दिया आचार्य यशपाल जी सुधांशु ने। "जीवन सौरभ" नाम के प्रथम संकलन को श्रद्धेय सुधांशु जी ने वड़ी आत्मीयता से

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुधार और संवार कर अपनी ओर से भूमिका लिख कर उसे जन-जन तक प्रचारित और प्रसारित करने में बहुत सहयोग दिया है। जीवन सौरभ के अनेक संस्करण निकल चुके हैं इसका अंग्रेजी अनुवाद भी चल निकला है। विश्व जागृति मिशन ने इसे अपने प्रकाशन विभाग में सम्मिलित किया हुआ है। पाठकों ने इस प्रयोग को बहुत अधिक पसन्द किया है।

इसी प्रोत्साहन से उत्साहित श्री सत्यानन्द आर्य ने यह दूसरा संकलन "ज्योति-पथ" पाठकों को भेंट करने का प्रयास किया है। पूर्व "जीवन सौरभ" की भांति "ज्योति-पथ" में भी सूक्तियों को बहुत अधिक महत्त्व दिया गया है। किसी गम्भीर बात को कम शब्दों में व्यक्त कर देना सूक्ति की विशेषता होती है। सूक्तियाँ सहजता से स्मरण हो जाती हैं और यही स्मृति किसी तरह की परेशानियों में दिलासा देने का नुस्खा बन जाती है।

"विचार प्रकाशन" का उद्देश्य जन साधारण में रचनात्मक, विधेयात्मक तथा युक्तियुक्त विचारों को पहुँचाना है। इसी उद्देश्य की कड़ी है "ज्योति-पथ"

विश्वास है अपने पाठकों के सहयोग से विचार प्रकाशन अपने उद्देश्य में सदैव तत्पर रहेगा।

स्वस्ति पन्थामनुचरेम।

गजानन्द आर्य
"विचार-प्रकाशन"

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दो शब्द

विश्व के महान् पुरुषों का जीवन व जीवन की कतिपय घटनाएँ, मनुष्य व समाज के लिए प्रकाश और प्रेरणा का स्रोत होती हैं। वे सभी हृदयों को आन्दोलित तो करती ही हैं साथ ही उनसे जीवन निर्माण के अनेक अनमोल सूत्र भी सहज ही हाथ लगते हैं।

महापुरुषों के जीवन के प्रेरक शिक्षादायक रोचक प्रसंग आज के तनावपूर्ण वातावरण में अध्यात्मिक औषधि व आनन्द की अनुभूति प्रदान करते हैं।

इन प्रसंगों को संकलित करने के लिए अनेक ग्रंथों, जीवन चरित्रों, पत्रिकाओं व पुस्तकों की सहायता ली गई है—जिनको सार रूप व रोचकता के साथ पुस्तकमाला के रूप में सबके प्रति आभार सहित प्रस्तुत करने का प्रयास किया है। महान आत्माओं के ऐसे कुछ ही नहीं हज़ारों प्रसंग हैं जिनसे प्रेरणा पा कर प्रत्येक व्यक्ति अपने जीवन को दिशा दे सकता है, वास्तव में ये प्रकाश स्तम्भ हैं जिनसे आलोकित होती हैं हम सबकी जीवन राहें।

इस लिए इसे नाम दिया है "ज्योति-पथ" आशा है इससे जीवन के हर यात्री को प्रेरणा और प्रकाश मिलेगा, इसी आशा के साथ —

— सत्यानन्द आर्य

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अनुक्रमांक

१.	सादर समर्पण प्रेरणा के स्त्रोत	९
२.	परमार्थ में सच्चा आनन्द	५७
३.	ऐसे थे गुरु	७१
४.	दयालु हृदय	९९
५.	जीना इसी को कहते हैं	११३
६.	उत्साह ही जीवन	१६५
७.	मातृभूमि को समर्पित	१८१

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सादर समर्पण

उन समस्त महान पुरुषों के प्रति जिनके जीवन हम सबके लिए ज्योतिर्मय हैं और प्रेरणा के स्रोत हैं।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दूषित अन्न का प्रभाव

पितामह भीष्म युद्ध-भूमि में शरशय्या पर पड़े, सूर्य के उत्तरायण में होने की प्रतीक्षा कर रहे थे। उन्होंने यह महाविनाश देखने के लिये ही जीवन धारण कर रखा था। इस असह्य पीड़ा को झेलना अब उन्हें कठिन लग रहा था।

श्रीकृष्ण की सलाह मानकर पाँचों पाण्डव द्रौपदी सहित पितामह के समीप आये। युधिष्ठिर ने पितामह से धर्म और नीति का अन्तिम उपदेश देने की प्रार्थना की। धर्मज्ञ पितामह ने राजधर्म और मानव-धर्म की शिक्षा देना प्रारम्भ किया। वे बोल ही रहे थे कि द्रौपदी अचानक हँस पड़ी।

पितामह की वाणी रुक गई आश्चर्यचकित होकर उन्होंने द्रौपदी से पूछा— "पुत्री! इन गम्भीर बातों के बीच तू हँसी क्यों? इसका कारण बता।"

द्रौपदी ने हाथ जोड़ कर कहा— "मुझसे भूल हो गई। पितामह मुझे क्षमा कर दें। मैं कुछ और ही सोच रही थी, इसीलिये हँसने की अभद्रता कर बैठी।"

पितामह इस उत्तर से संतुष्ट नहीं हुए। बोले—"तू गुणवती है, ज्ञानी है। बड़े ऊंचे कुल में तेरा जन्म हुआ है। कोई भी शीलवती कुलवधू गुरुजनों के सम्मुख अकारण हँसने की धृष्टता नहीं कर सकती। तेरी हँसी का कोई गूढ़ रहस्य है। जब तक तू संकोच त्याग कर इस हँसी का कारण सँही-सही नहीं बतायेगी, तब तक मैं कोई उपदेश नहीं दूँगा।"

श्रीकृष्ण और पाण्डव भी हठ करने लगे। उन्हें भी द्रौपदी की

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अभद्रतापूर्ण हँसी अच्छी नहीं लगी।

द्रौपदी सिर झुका कर वोली— "पूज्यवर! आपकी आज्ञा मैं नहीं टाल सकती। मैंने आज तक आपका असम्मान कभी नहीं किया है। आप सुनना ही चाहते हैं तो कहती हूँ। आज आपके मुँह से धर्म और नीति की ऊंची शिक्षाएँ सुनकर मुझे वह दिन याद आ गया जब कौरवों की भरी सभा में नीच दुःशासन मेरे वस्त्र खींच रहा था और मैं असहाय अवला की भांति रो-रो कर चीत्कार कर रही थी। मैंने वहाँ वैठे हुए सभी ज्ञानियों, आचार्यों और धर्मज्ञों को दुहाई दी और चीख-चीख कर न्याय की भिक्षा मांगी थी, लेकिन सभी मौन थे। मैंने आज समझा है कि यह सारा धर्मज्ञान आपने उस घटना के वाद सीखा है। इसी बात पर मैं अपनी हँसी नहीं रोक पाई। मैं अपनी धृष्टता के लिये पुनः आपसे क्षमा माँगती हूँ।

मर्माहत भीष्म पितामह की आँखों से आंसू की दो वूंदें ढुलक पड़ीं। उन्होंने मन की सारी वेदना उँडेलते हुए अवरुद्ध कण्ठ से कहा— "पुत्री! क्षमा तुझे नहीं, मुझे माँगनी चाहिये। धर्म का ज्ञान मुझे तव भी था, किन्तु दुर्योधन का दूपित अन्न खाने से मेरी वुद्धि भ्रष्ट हो गई थी, मेरा विवेक नष्ट हो गया था। मैं द्यूतसभा में धर्म-अधर्म का निर्णय करने में असमर्थ हो गया। अव मेरे शरीर का सारा रक्त, जो दूषित अन्न से वना था, निकल चुका है। मेरी वुद्धि की मलिनता दूर हो गई है। वुद्धि शुद्ध हो जाने के वाद मैं सत्य और धर्म को भली भाँति देख और समझ पा रहा हूँ। याद रखना पुत्री! दूषित अन्न खाने वाला व्यक्ति वुद्धि पर आवरण पड़ जाने से, आंखों के रहते हुए भी अन्धा वन जाता है और गलत आचरण करता है।"

□

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रार्थना की सार्थकता

एक प्रार्थना सभा के पश्चात् एक वकील साहब ने गांधी जी से पूछा कि महात्मा जी आप प्रार्थना करने में इतने घंटे व्यतीत करते हैं, अगर इतना ही समय आपने देश की सेवा में लगाया होता तो अभी तक अपने देश की कितनी सेवा की होती? गांधी जी अचानक गम्भीर हो गये फिर बोले— वकील साहब आप भोजन करने में कितना समय लगाते हैं। वकील साहब ने कहा कि मैं भोजन करने में बीस मिनट लगाता हूँ। इस पर गांधी जी ने कहा कि वकील साहब आप भोजन करने में इतना समय बर्बाद करते हैं। अगर इतना ही समय आपने मुकदमें की तैयारी में लगाया होता तो अभी तक आपने कितने मुकदमों की तैयारी कर ली होती। वकील साहब ने चकित होकर कहा कि "महात्मा जी अगर मैं भोजन नहीं करूँगा तो मुकदमे की तैयारी कैसे करूँगा?" इस पर गांधी जी ने कहा— "वकील साहब! जिस प्रकार आप बिना भोजन के मुकदमे की तैयारी नहीं कर सकते, वैसे ही मैं भी प्रार्थना के बिना देश की सेवा नहीं कर सकता। प्रार्थना मेरी आत्मा का भोजन है। इससे मेरी आत्मा को शक्ति मिलती है जिससे मैं देश की सेवा करता हूँ।

गांधी जी की प्रार्थना सभा में जीवन दर्शन छिपा हुआ था। जैसे अन्न के थोथे छिलकों से शरीर को पुष्ट नहीं किया जा सकता, उसी प्रकार सारहीन लालसाएँ आत्मा को स्वस्थ नहीं कर सकती। यदि शरीर को समय पर भोजन न दिया तो वह दुर्बल हो जाता है और भूख प्यास से व्याकुल हो कर रोटी पानी के लिए तड़पने लगता है। यही बात आत्मा पर भी लागू होती है। इसे एकान्त में प्रार्थना करने की आवश्यकता होती है। इससे सार्थक बल मिलता है ☐

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्री राम की नीतिमत्ता

लंका के युद्ध में रावण के मरने पर राम की सेना में जव विजय के वाजे वजने लगे तो अचानक एक अप्रत्याशित दृश्य उपस्थित हो गया। राम की सेना का एक विश्वस्त और अनुशासित योद्धा अङ्गद ओज और आवेश में भरा हुआ राम के आगे आकर वोला— "ये विजय के वाजे वन्द कर दिये जाएं। यह विजय अधूरी है, क्या यह भी निश्चित है कि यह विजय है किसकी? जिसे आप अपनी विजय समझ रहे हैं, उसे ही मैं अपनी सफलता मानता हूँ। मेरे पिता वाली के दो शत्रु थे— एक रावण और दूसरे उनकी जीवन लीला समाप्त करने वाले आप। योग्य पुत्र का कर्त्तव्य है कि मैं अपने पिता की भावना का संरक्षण करूँ। अतः आपको पूर्ण सहयोग देकर मैंने अपने पिता के एक शत्रु को तो समाप्त कर दिया है, इसलिए रावण की मृत्यु को मैं अपनी विजय मानता हूँ और अनुभव करता हूँ कि पिता का आधा ऋण मैंने चुका दिया किन्तु मैं जव तक आपको पराजित नहीं करता, पितृऋण से उऋण नहीं हो सकता। अतः अब मेरा और आपका युद्ध होगा और फिर विजयश्री जिसको भी प्राप्त होगी, वही उत्सव मनाने का अधिकारी होगा।

राम ने इस विषम परिस्थिति को अपनी दूरदर्शिता से चुटकियों में सुलझा दिया। राम ने आगे वढ़कर अङ्गद की पीठ थपथपाते हुए कहा— 'अङ्गद! तुम्हारे परिचय काल से ही तुम्हारी वीरता, विनम्रता और कार्यकुशलता ने मुझे प्रभावित किया है। तुम्हारी इस भावना से मैं तुमसे अत्यन्त प्रसन्न हूँ। निश्चय ही तुम वीर पिता के अनुव्रत पुत्र हो। मैं भी इस विजय को तुम्हारी विजय स्वीकारता हुआ अपने को भी इसका भागीदार समझता हूँ। तुम्हें स्मरण है, जीवन के

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अन्तिम क्षणों में तुम्हारे पिता ने मुझको तुम्हें सौंपते हुए मुझसे यह वचन लिया था कि मैं पुत्र की तरह तुम्हें संरक्षण दूँ। इस प्रकार तुम मेरे पुत्र हो और शास्त्रों का यह वचन है कि सर्वस्माज्ज़यमिच्छेत् पुत्रादिच्छेत्पराजयम्"— मनुष्य सवसे अपनी जीत चाहे, किन्तु अपने पुत्र से अपनी पराजय पसन्द करे। इस रूप में तुम जीते और मैं हारा। तुम्हारी इस विजय में मैं भी सम्मिलित होता हूँ। मुझे दुहरी प्रसन्नता है कि मैं तुम्हारे पिता को दिये वचन का पालन कर सका।"

यह श्री राम के जीवन का और उनकी नीतिमत्ता का एक स्वर्णिम उदाहरण है और अङ्गद के वीरोचित जीवन का भी, जिसके कारण श्री राम के हृदय में उसको स्नेहपूर्ण स्थान मिला। □

आदर्श पुरुषों को कठिनाइयों में घिर जाने पर उसे वाहर निकलने का रास्ता मालूम रहता है।

— समर्थ गुरु रामदास

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पटेल— सही जननायक

पटेल देश की आज़ादी का महान् नायक राजनीतिज्ञ सभा मंचों की चकाचौंध और तालियों की गड़गड़ाहट से दूर दीन दुःखियों की पीड़ा को सहला कर कर्म संदेश दे रहा था कि राजनीति वाग्जाल या व्यवसाय नहीं अपितु निश्छल सेवा का विराट् पथ है। विराट् पथ के एक आदर्श यात्री थे सरदार पटेल। उस दिन अहमदाबाद नगर को प्रलयंकर वाढ़ ने घेर लिया था। अर्द्धरात्रि का समय था। लोग अपने घरों की छतों पर भीगते हुए उस कालरात्रि में सहमे वैठे थे। सरदार की वेचैनी वढ़ रही थी। उनकी व्यथा घनीभूत हो उठी। अचानक रात्रि के १२ वजे घनघोर वर्षा और तीव्र आंधी को चीरते हुए वे घर से निकल पड़े। एक द्वार पर जा कर दस्तक दी। "कौन'? गृहस्वामी ने पूछा। "मैं वल्लभभाई पटेल।" उद्विग्न सरदार ने उत्तर दिया। गृहस्वामी हरिलाल कांपड़िया चकित हुए— पटेल पर कौन सी विपदा आई जो इस प्रलयंकर रात्रि में घर से निकल पड़े।

"जल्दी चलो मेरे साथ।" सरदार ने कहा, अहमदाबाद डूब रहा है उसे वचाने के लिए कुछ करना होगा। "सरदार पटेल हरिलाल कापड़िया को लेकर सैकड़ों अन्य कार्यकर्ताओं और अधिकारियों को एकत्र कर जुट पड़े। अनवरत चार दिन-रात आंधी पानी में भीगते हज़ारों नगरवासियों की प्राण रक्षा के लिए जुटे रहे। कार्यकर्ताओं ने सलाह दी कि "सरदार थोड़ी देर को तो आराम कर लीजिए, हम सब तो हैं ही यहाँ।"

"आराम, क्या मुझे घर पर एक क्षण भी आराम मिल पायेगा जवतक नगर के लोग संकट में घिरे रहेंगे?" सरदार ने गंभीरता से

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उत्तर दिया। सरदार पटेल के नेतृत्व में जुटे सैकड़ों कार्यकर्ताओं और अधिकारियों ने जब बाढ़ का पानी निकाल कर नगर को बचा लिया तब सरदार के चेहरे पर वैसी ही विजय रेखा चमक उठी, मानो उन्होंने स्वतंत्रता संग्राम जीत लिया हो।

□

वही आदर्श है जो समय पर वही करता है जो वह कर सकता है। सीखें बघारने वाला कुछ नहीं कर सकता

— बरनार्ड शा

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सार्थक सहायता

सेठ जुगलकिशोर जी विरला अपने परिचित जनों के साथ कलकत्ता के "लेक" क्षेत्र पर घूमने गये थे। वहाँ पर कुछ वंगाली युवकों ने उन्हें पहचान लिया और प्रणाम किया। सेठजी ने कुशल क्षेम पूछा और कहा– "और मेरे लायक कोई सेवा कार्य हो तो आप लोग निःसंकोच वतलाइये। आपकी इच्छा पूरी करके मुझको वहुत खुशी होगी।"

उनमें से कुछ वोले– "वावूजी! कम पढ़े लिखे गरीव घरों के युवक हैं। वेरोजगारी के कारण परेशान हैं। आप हमें अपने कारखाने में रोज़गार दिलवा दें तो व्रड़ी मेहरवानी होगी। हम अपने पैरों पर खड़े हो सकेंगे।

तभी एक और युवक वोला– "वावू जी! आप जैसे भी उचित समझे, हमारी मदद कीजिये। हम आपके पास वड़ी बड़ी आशाएँ लेकर आये हैं।"

वावू जी बोले– "मैं कल आपकी वस्ती में आकर सोचूँगा कि आप लोगों की क्या मदद की जाए।"

दूसरे दिन सेठ जी ने कलकत्ता के एक विश्वासपात्र को साथ लिया और उन वस्तियों का निरीक्षण किया। उनके वच्चों आदि के लिए फल, मिठाई, कपड़े, पुस्तकें आदि साथ ले गये। जरूरतमन्दों को झोपड़ पट्टियों में घुस-घुस कर वांटे। वीमारों का कुशल क्षेम पूछा और उपचार की व्यवस्था करवाई। कोई ५-६ घंटे तक घूम कर उन्होंने वस्ती की स्थिति देखी और पाया कि १०० से भी ऊपर युवक यहाँ वेरोजगार हैं। अव वात उनकी सहायता की चली तो वावू जी के कलकत्ता वाले परिचित ने कहा, वावू जी इन्हें १००-५०० रुपये जैसा आप उचित समझें कर दें और कहीं संभव हो तो मजूरी

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के लिये काम दिलाने का आश्वासन दे दें।

वाबूजी वोले— "सौ–पाँच सौ की सहायता देना कोई अर्थ नहीं रखता। वैसे अभी ये वेरोजगार भिखारी प्रवृत्ति के नहीं हैं पर ऐसी सहायता पाकर ये निश्चित ही भीख मांगने के आदी हो जाएंगे। इस तरह तो तरुणाई कामकाज में लग सकती है वह भिखारियों की संख्या बढ़ाने में लग जाएगी। कुछ स्थायी समाधान करना ज्यादा ठीक होगा।

आपस में विचार विमर्श के वाद सोचा गया कि धंधे पर लगाने के हाथ खर्च के लिए १००–२०० रुपये आदि दे दिये जाएँ। एक–एक को हाथ ठेला खरीद दिया जाए और कोयला, तरकारी, किराया आदि प्रारम्भिक व्यापार के लिए कुछ इन्हें दिलवा दिया जाये ताकि ये खरीद विक्री के लिए कुछ दिन परेशान न हों। इससे इन्हें पैरों पर खड़े रहने लायक काम फिलहाल तो मिल ही जाएगा। यह व्यवस्था इन वेराज़गारों को एक महत्त्वपूर्ण सहारा देगी, जो वाकई काम करना चाहते हैं, वे आगे इससे थोड़ी बड़ी दुकान भी जमा लेंगे।

उन्होंने अधिकांश युवकों को तुरन्त व्यक्तिगत रूप से वुला कर पूछा और जो जिस तरह की दुकानदारी में रुचि रखता बताता, उसे वैसा सामान दिलाने, ठेला दिलाने और थोड़ा हाथ खर्च देने की व्यवस्था उन्होंने करवा दी।

दूसरे वर्ष उन्होंने उन्हीं परिचित सज्जन से पता करवाया तो पता पाया कि अधिकांश युवकों ने अपना कारोवार वदस्तूर जारी रखा है और वेरोजगारी के आतंक से वे मुक्त हैं। व्यावहारिक सार्थक सहायता थी यह।

□

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दुर्योधन का नैतिक स्तर

कर्ण के साथ मैत्री की निर्व्याजता, अपनी वात रखने के लिए सव निछावर करने की धुन दुर्योधन के चरित्र का अविभाज्य अंग है। कर्ण के सेनापति वनने पर अश्वत्थामा ने यह प्रण कर लिया था कि मैं उसके सेनापतित्व में शस्त्र नहीं उठाऊँगा। जव अर्जुन ने कर्ण को युद्ध में मार दिया, तव समाचार पाते ही अश्वत्थामा गर्जता हुआ दुर्योधन के पास पहुँचा और वोला, "राजन! जिस कर्ण के ऊपर आपने पाण्डवों को परास्त करने की आशा वाँध रखी थी, वह उनका कुछ भी विगाड़ न सका और संसार से चल वसा। अव तुम मेरा जौहर देखना! मैं केवल एक दिन में ही 'निष्पाण्डवा मेदिनी' संसार से पाण्डवों को विहीन कर दूँगा।"

राजनीति की यह सामान्य सी वात है कि अपने विजय के लक्ष्य को पूरा करने के लिए जहाँ से भी सहायता मिले, ले लेनी चाहिए। कर्ण तो अव संसार से गया, उससे अव किसी प्रकार की आशा ही कहाँ हो सकती थी? अतः दुर्योधन को अश्वत्थामा से लाभ उठाना चाहिए था। किन्तु दुर्योधन ने यहाँ माननीय और नैतिक पक्ष को प्राथमिकता देते हुए कहा— "गुरुपुत्र! तुमने यह प्रतिज्ञा की थी कि 'जव तक कर्ण जीवित है, मैं शस्त्र नहीं उठाऊँगा।" अव तुम यह प्रतिज्ञा और कर लो कि जव तक दुर्योधन नहीं मर जाता, मैं शस्त्र नहीं उठाऊँगा। मेरे दृष्टि में तुम और अर्जुन एक समान हो। एक ने मेरे मित्र कर्ण के भौतिक शरीर को नष्ट किया और तुम उसके मरने पर कटु वचन कहके उसके यशरूपी शरीर को नष्ट कर रहे हो। जैसे मैं अपने मित्र के शत्रु अर्जुन से दी हुई राज्यलक्ष्मी को स्वीकार नहीं कर सकता, उसी प्रकार तुम्हारे शौर्य से लाभ उठाना मैं वैसा ही नीचकर्म समझता हूँ।' यह है दुर्योधन का नैतिक स्तर, जिसे आज की राजनीति स्वप्न में भी नहीं पा सकती।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परमात्मा कहाँ है?

'गीतांजलि' लिखी जा चुकी थी और रवीन्द्रनाथ ठाकुर को नोबेल पुरस्कार मिल चुका तो उनके पड़ोसी एक बूढ़े ने पूछा, 'रवीन्द्र, क्या तुमने वास्तव में परमात्मा को जान लिया है? तुमने ईश्वर की प्रशंसा में गीत गाये हैं।'

प्रश्न सुन कर रवीन्द्रनाथ चौंक पड़े कि मैंने सोचा तक नहीं था कि कभी कोई ऐसा प्रश्न भी पूछ लेगा तो मैं क्या उत्तर दूँगा? वे कितनी रात सोये नहीं। पड़ोसी पुनः वह प्रश्न न पूछ ले, इसलिए उन्होंने अपना रास्ता ही बदल दिया। लेकिन प्रश्न का उत्तर खोजे विना उन्हें चैन नहीं था।

वर्षा के दिन थे, आषाढ़ का महीना। तालाब, पोखर, नदी, डबरे भरे हुए थे। प्रातःकालीन सूर्य की किरणें समुद्र पर बिखरीं। सब में सूरज झलकता था। वह न समुद्र के जल से खारा था, न गंदले पानी से गंदा। बस रवीन्द्रनाथ को परमात्मा समझ में आ गया। "वह सर्वशक्तिमान् सत्ता, पुण्यात्मा, आकाश, पाताल के प्रत्येक जीवन में विद्यमान है।" यही उत्तर उन्होंने अपने पड़ोसी को दिया। □

अच्छा नहीं होता अगर हम सब एक जैसा सोचते — यह विचार का ही भेद है जो ज्ञान को और विकसित होने का अवसर प्रदान करता है।

— मार्क ट्वेन

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक वाक्य ने जीवन बदल दिया

महर्षि दयानन्द जिन दिनों जेहलम में थे, उन दिनों वहाँ महता अमीचन्द जी वहुत सुन्दर भजन गाया करते थे, परन्तु वे थे शरावी और उनका आचार भी कुछ विगड़ चुका था। नित्य स्वामीजी के पास आते। एक दिन महता अमींचन्द ने प्रभुभक्ति का वहुत ही मनोहर गीत गाया। स्वामी जी ने सुना तो कहा "अमीचन्द! हो तो हीरे, परन्तु कीचड़ में पड़े हो।"

वस, तीर चल गया; निशाना ठीक वैठ गया था। उसी समय से महता अमींचन्द का जीवन पलट गया। मदिरा छोड़ दी, व्यभिचार को महापाप समझने लगे और महता अमींचन्द सचमुच ईश्वर के सच्चे भक्त वन गए। महर्षि के एक वाक्य ने एक शरावी, व्यभिचारी को भक्त और शुद्धाचारी वना दिया।

सत्संग से उकताइये नहीं। निरन्तर प्रयत्नशील रहिए। प्रतीक्षा कीजिये आपके भाग्योदय की घड़ी अवश्य आएगी।

कवीर संगति साधु की, नित प्रति कीजै जाय।
दुरगति दूर वहावरी, देसी सुगति वताय॥

जो पाप का आचरण त्याग करके धर्म का आचरण करते हैं वे सव काल में सुखी होते हैं।

— स्वामी दयानन्द

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ऐसे बना भारतीय विद्याभवन

घुटने तक की मोटी लट्ठे की धोती, मैली सी वण्डी, सिर पर राजस्थानी शैली से वंधी पगड़ी पहने एक व्यापारी अपने वकील के दफ्तर में पहुँचे और वोले :—

"अभी–अभी मैंने छः लाख रुपये कमाये हैं। अव मेरी वड़ी इच्छा है कि यह छः लाख रुपये किसी श्रेष्ठ काम के लिए दान की सार्थकता सिद्ध करें। आप मेरे वकील हैं, सलाह मशविरा करने के लिए आया हूँ। इस पैसे को दान करने के लिए कैसे क्या करूँ।"

वह वकील नगर का व्यस्ततम वकील था उतनी वड़ी दान राशि के दानदाता की फटेहाल हालत से वह भौचक्का रह गया। फिर भी उन्होंने उन्हें टालने के लिए कह दिया – "ठीक है सेठ साहव! जव भी आपको दान करना हो, मैं आपको सलाह ज़रूर दूँगा कि आप किस काम के लिए दान दें।"

वह सेठ थे मूँगालाल और वकील थे कन्हैयालाल मणिकलाल मुंशी। वकील साहव तो इस बात को भूल ही गये। पर एक दिन उसी हालत में सेठ जी उनके दफ़्तर फिर आये बोले, "आपसे भेंट करने के वाद ही टाटा शैफर्ड के शेयर के भावों में अचानक ही भारी तेज़ी आ गयी। उन छः लाख रुपयों के आठ लाख रुपये वन चुके हैं। यह दो लाख जो अतिरिक्त आ गये इनको भी कहाँ पर खर्च किया जाये?"

वकील के.एम. मुंशी चौंके। उन्हें लगा कि यह व्यापारी या तो पागल है या खप्ती। अभी छः लाख का तो पता ही नहीं चला और अव आठ लाख की वात कर रहा है। मुंशी जी को लगा कि मूंगालाल सेठ की यह सव कल्पना की तरंगे भर हैं दान पुण्य करने की लम्वी

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चौड़ी वातें करके वे दिल को वहला लेते हैं।

तीन हफ्ते वाद एक दिन सवेरे-सवेरे ही के.एम. मुंशी के घर जा पहुँचे और वोले — "हुज़ूर आज सोमवती अमावस्या है, इसलिए मैं इस शुभ मुहूर्त में छः लाख रुपये तो गौ की सेवा के लिए और दो लाख रुपये संस्कृत भाषा की तरक्की के लिए खर्च करने को दान करता हूँ।"

सुनते ही मुंशी जी गुस्सा हो उठे। वौखला कर वोले — "अरे सेठ रोज़ दान-दान करते हो। तुम्हारे पास है भी कुछ या ढपोरशंख की तरह लाखों की वातें कर रहे हो इस तरह से।"

हाथ जोड़कर मूँगालाल ने अत्यन्त नम्र भाव से कहा — "हुक्म! रुपया तो तैयार है आपकी अनुमति के लिए आया था। जरा आप मुझे टेलीफोन दीजिए मैं अपने दलाल से कहकर अभी हुज़ूर की हथेली पर रखकर छुट्टी पा लेता हूँ।

मुंशी जी अव तक भी इस वात को खत्म ही मान रहे थे। पर जव दलाल नोटों की पोटली वाँधकर सचमुच आ गया। वे कभी सेठ की मैली लट्ठे की धोती, वण्डी को घूरते, कभी नोटों को, कभी दान का संकल्प करने की आतुरता दिखलाते सेठजी को। सेठ मूँगालाल ने अपने संकल्प को पूरा किया, इच्छा-पूर्ति से वे वड़े प्रसन्न थे।

सेठ मूंगालाल के इसी चमत्कारिक दान से भारतीय विद्याभवन की स्थापना दिवंगत के.एम. मुंशी ने की जिसका लक्ष्य रहा — "आनो भद्रा क्रतवो यन्तु विश्वतः (प्रत्येक दिशा के शुभ विचार हमें प्राप्त हों।)

सेठ मुंगालाल का पुरुषार्थ व आलौकिक दान औरों के लिए प्रेरणा का आदर्श उदाहरण है।

□

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुख:दुःख की तुलना

शेख सादी मस्जिद में रोज नमाज़ पढ़ने जाते थे। उनके जूते फटे हुए थे। एक दिन एक धनी नमाज़ पढ़ने आया। उसके पास सोने की करचोटी वाले जूते थे।

शेख सादी ने पूछा— "आप कब-कब नमाज पढ़ते हैं?" उसने उत्तर दिया— "साल में एक बार।" इस पर शेख सादी दुःखी हुए और बोले, "हे ईश्वर! रोज नमाज़ पढ़ने वाले को फटे जूते और जो साल में एक बार पढ़ता है उसे सोना लगे? यह कैसा इंसाफ?" वे यह सब सोच ही रहे थे कि एक बिना पैर वाला अपंग घिसटता हुआ आया और नमाज़ पढ़ने लगा।

शेख सादी का विचार बदल गया। उन्होंने शिकायत के स्थान पर भगवान् को धन्यवाद दिया और कहा—"मुझे पैर मिले हुए हैं, यही क्या कम है? सम्पन्न से अपनी तुलना करने पर मनुष्य दुःखी होता है, किन्तु जब दुखियों से तुलना करता है तो प्रतीत होता है कि जो मिला है, वह भी कम नहीं है।"

अजीब बात है कि सुख की अभिलाषा ही हमारे दुःख का एक अंश है।

— खलील जिब्रान

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आत्मनिर्भरता का उदाहरण

विनोवा भावे के सर्वोदय आन्दोलन में अन्य वातों के अलावा आत्मनिर्भर गांवों की कल्पना भी शामिल है। दिसम्बर १९४९ में हैदरावाद से वापस आने के वाद विनोवा ने पवनार आश्रम में इसका प्रयोग प्रारम्भ किया।

उन्होंने विना वैलों के आश्रम में खेती की और सब्ज़ी बोई। सिंचाई के लिए पानी निकालना वड़ा कठिन कार्य था। रहट में एक डंडे के स्थान पर आठ डंडे लगाए गए जिसके फलस्वरूप एक घंटे में सात सौ चक्कर लगे जव कि पहले केवल २५ चक्कर लगते थे। इस प्रकार थोड़े परिश्रम से भरपूर पानी मिला और देखते ही देखते समस्त भूमि हरी भरी हो गई। ईंट पत्थर निकालने के वाद १२५ मन सब्ज़ी पैदा हुई। हाथों से की जांने वाली खेती को विनोवा जी ने ऋषि खेती का नाम दिया।

पानी की कमी को पूरा करने के लिए पांच छः महीनों में खोद कर एक कुंआ तैयार कर लिया गया। एक साल में ही खेती से १३५ किलो ज्वार, ४ क्विंटल मूंगफली और ६ क्विंटल अरहर पैदा हुई।

आश्रमवासी अपने वस्त्र भी हाथ से कते सूत के ही पहना करते थे। इस प्रकार आश्रमवासी विनोवा जी के मार्गदर्शन में पूर्णरूप से आत्मनिर्भर हो गए। उसके वाद अनेक गांवों ने उनका अनुकरण किया। विनोवा जी ने भी पद यात्रा करके आत्मनिर्भरता का यह संदेश देश के कोने-कोने में फैलाया। इससे असहाय ग्रामवासियों को वड़ी राहत मिली।

□

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

खरा–खरा लिखने वाले गणेशशंकर

"आप इन देशी नरेशों की आलोचना क्यों करते हैं जबकि अंग्रेज़ों की दासता का विरोध ही आपका उद्देश्य है।"

"गणेशशंकर विद्यार्थी से इन्दौर नरेश के एक चाटुकार ने पूछा।

विद्यार्थी जी ने कहा, "मेरी नीति समूचे अन्याय के विरुद्ध संघर्ष करने की है, फिर वे अपने हों या पराये।" उन्होंने आगन्तुक से प्रश्न किया, "क्या देशी नरेशों को अपनी प्रजा के साथ ज़ुल्म करने की छूट देना दासता के समर्थन जैसा ही पाप न होगा?"

ब्रिटिश शासन के विरुद्ध अपनी निर्भीक लेखनी वाले विद्यार्थी जी ने इन्दौर नरेश तुकोज़ीराव की काली करतूतों का भंडाफोड़ करना जारी रखा। इन्दौर नरेश की ओर से अनेक प्रलोभन, दवाव और धमकियाँ दी गयीं कि वे ऐसे लेख छापना वन्द कर दें लेकिन लोकहित के लिए समर्पित ये स्वर वन्द न हुए।

कुछ समय के पश्चात् अंग्रेज़ों की छद्म योजना के तहत इन्दौर नरेश के विरुद्ध हिन्दी, उर्दू और प्रैस द्वारा एक प्रचार अभियान शुरू किया गया। अंग्रेजी सरकार के इशारे पर तरह–तरह के प्रलोभन देकर समाचार पत्रों का प्रवल विरोध तूफ़ान वनकर उठ खड़ा हुआ। तव विद्यार्थी ज़ी ने इन्दौर नरेश का समर्थन करते हुए अंग्रेजी सरकार को खूव फटकारा। विद्यार्थी जी ने लिखा था, "यह अंग्रेजी सरकार की घोर ज्यादती व अंधेरगर्दी है—खुला प्रतिशोध है, देशी रियासतों को हड़पने का घिनौना षड्यंत्र है।" इस विचारोत्तेजक तथा तर्कपूर्ण अग्रलेख ने समाचार पत्रों के विरोध की दिशा वदल

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दी और सारे पत्र इन्दौर नरेश को गद्दी से हटाने का विरोध करने लगे।

इन्दौर नरेश विद्यार्थी जी के इस अप्रत्याशित समर्थन से आश्चर्यचकित रह गये। उन्हें आश्चर्य था कि बड़े से बड़े प्रलोभन को ठुकराने वाले विद्यार्थी जी ने इस संकट में उनका समर्थन कैसे किया? नरेश इस सहयोग के प्रति आभारी थे। उन्होंने तुरन्त एक व्यक्ति को विद्यार्थी जी के पास भेजा ताकि उन्हें बुला कर उनका आदर सत्कार किया जाय। सन्देशवाहक ने नरेश की ओर से आभार प्रकट करते हुए विद्यार्थी जी से रियासत का आतिथ्य ग्रहण करने की पेशकश की। विद्यार्थी जी आभार प्रदर्शन और निमंत्रण पर किंचित मुस्कराये। बोले, "मैंने नरेश का समर्थन उन्हें उपकृत करने के लिए नहीं किया। मैंने सदैव उनकी गलतियों का विरोध किया है।" गम्भीरता पूर्वक उन्होंने कहा, "हमारी पत्रकारिता का कर्तव्यबोध राष्ट्रहित है, किसी व्यक्ति का विरोध या समर्थन नहीं। इसलिए अंग्रेज़ों द्वारा छलपूर्वक देशी रियासतों को हड़पने के विरुद्ध आवाज़ उठाना भी हमारा प्रथम कर्तव्य है। इसके लिए मुझे नरेश के किसी आतिथ्य की आवश्यकता नहीं।"

❑

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भगवान् कैसे मिलते हैं?

"मैं तो इतने दिनों से भगवान् की भक्ति कर रही हूँ— पर मुझे तो आज तक उन्होंने कभी स्वप्न में भी दर्शन नहीं दिये। आप कहते हैं कि वे आपसे कभी अलग नहीं होते।" एक स्त्री ने महात्मा आनन्द स्वामी को वताया।

वात यह थी कि वह स्त्री भक्ति तो करती थी, पर अपने परिवार, पड़ोसी और सम्वन्धियों, सवके साथ उसका व्यवहार वहुत रूखा और अहंकारपूर्ण था। घर वाले भी उसके आचरण से दुःखी थे।

स्वामी जी वोले— "आज भगवान् से पूछकर वतायेंगे, आपसे क्यों नहीं मिलते।" दूसरे दिन स्त्री मिली तो वह वोले— "भाई, भगवान् तुम पर नाराज़ हैं, कह रहे थे, वह हमारे वच्चों से लड़ती, मारती–पीटती और द्वेष रखती है, उससें मिलने का मन नहीं करता।"

स्त्री समझ गयी। उस दिन से उसने अपना व्यवहार मीठा वना लिया। फलस्वरूप दूसरे लोग उसे इतना प्यार और आदर देने लगे कि वह उस शान्ति में ही भगवान् की उपस्थिति अनुभव करने लगी। □

> स्तुति से ईश्वर में प्रीति, उसके गुण, कर्म, स्वभाव से अपने गुण कर्म स्वभाव का सुधारना। प्रार्थना से निरभिमानता तथा उत्साह तथा उपासना से परव्रह्म से मेल और उसका साक्षात्कार संभव है। — स्वामी दयानन्द

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सन्त तिरुवल्लूवर की शान्तिप्रियता

दक्षिण भारत में एक वहुत वड़े सन्त हुए हैं जिनका नाम था– सन्त तिरुवल्लूवर। उनकी शांतिप्रियता के किस्से सर्वत्र सुने जाते थे। एक दिन एक आदमी उनके पास उनकी परीक्षा लेनें के लिए गया कि उन्हें क्रोध आता है या नहीं?

सन्त जी कपड़ा वेचा करते थे। कपड़े से जो आय होती थी, उसी से गुज़ारा कर लेते थे। वही आदमी उनके कपड़े का मूल्य पूछने लगा। उन्होंने कहा, "एक रुपया।" उस आदमी ने उस कपड़े के दो टुकड़े कर दिये और एक का दाम पूछा। उन्होंने कहा, "५० पैसे।" " उस आदमी ने फिर एक टुकड़ा हाथ में लेकर दो टुकड़े कर दिये और उसका दाम पूछा। उन्होंने कहा, "२५ पैसे।"

आगे इसी तरह उस आदमीं ने उन कपड़ों को तार तार कर दिया और फिर दाम पूछा। सन्त तिरुवल्लूवर उसी शांति से वोले, "१ पैसा।"

संत का उत्तर सुनकर वह आदमी उनके चरणों पर गिर गया और अपने किये पर क्षमा माँगने लगा। सन्त जी ने कहा, 'इसमें क्षमा की कोई आवश्यकता नहीं है। मैंने तो अपने कपड़े का दाम वताया था। यह तो मेरा रोज़ का काम है।"

□

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सहायक

राष्ट्रपति अब्राहम लिंकन को एक सहायक की आवश्यकता थी। उन्होंने सभी उम्मीदवारों को दफ्तर में बुलाया और दरवाज़े के पास रास्ते में एक पुस्तक डाल दी। सभी उम्मीदवार पुस्तक को कुचलते हुए राष्ट्रपति की मेज़ तक पहुँचे।

एक उम्मीदवार उम्र और ज्ञान दोनों में सबसे कम था। वह सबके बाद दफ्तर में आया। उसने पुस्तक को उठा कर रूमाल से साफ़ किया और उसे राष्ट्रपति की मेज़ पर रखकर एक तरफ खड़ा हो गया।

लिंकन ने उसे ही सहायक चुना, दूसरे उम्मीदवारों ने ऐतराज किया, तो राष्ट्रपति ने कहा—'आपकी उम्र, आपके अनुभव और आपके प्रमाण-पत्र लेकर मैं क्या क़रूँगा? मुझे तो एक सहायक की आवश्यकता है। इस युवक ने अपने व्यवहार से सिद्ध कर दिया है कि इसे अपने से ज्यादा मेरी चिंता है। मैं इस पर पूरी तरह विश्वास कर सकता हूँ।'

❑

व्यवहार कुशलता के बिना आप कुछ नहीं सीख सकते

— डिजरेली

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निर्णय की दृढ़ता

एमोन डि वैलेरा के माता-पिता अमेरिका में आकर रहने लगे थे। कुछ वड़ा होने पर डि वैलेरा ने देखा कि उनका अपना देश आयरलैण्ड परतन्त्र है। अपने देश को स्वतन्त्र कराने के लिए डि वैलेरा ने एक सशस्त्र दस्ते का गठन किया और स्वयं उसके सेनापति वन गये। व्रिटिश सरकार द्वारा पकड़े जाने पर उन्हें मृत्यु दंड दिया गया।

फांसी के तख्ते पर झूलने से पूर्व डि वैलेरा सिगरेट पी रहे थे। उसी समय उन्हें क्षमादान की सूचना दी गयी। सूचना मिलने पर डि वैलेरा ने कहा, "मैंने इस सिगरेट को अपने जीवन की अन्तिम सिगरेट समझा था। इस कारण अव यह अन्तिम ही रहेगी।' इसके वाद उन्होंने फिर कभी सिगरेट नहीं पी। एमोन डि वैलेरा आयरलैण्ड के प्रथम राष्ट्रपति वने। निर्णय की परिपक्वता और कर्मठता व्यक्ति को महान् वना देती है।

□

महान कार्य शक्ति से ज्यादा दृढ़ता से किए जाते हैं।

— टॉमस डर्फी

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चण्ड से प्रियदर्शी अशोक

सम्राट् विन्दुसार के पुत्र अशोक ने प्रारम्भ से ही युद्धों में निरन्तर विजय प्राप्त करके, अपनी असाधारण वीरता का परिचय दिया। विद्रोहियों का निर्दयतापूर्वक दमन करने के फलस्वरूप उसका स्वभाव उग्र और क्रूर होता गया। लोग उसे 'चण्ड अशोक' के नाम से पुकारने लगे।

सिंहासनारूढ़ होते ही उसकी युद्ध लिप्ता प्रवल हो उठी। क्रूरता और अहंकार ने उसे हिंसा और अधर्म के मार्ग पर चलने के लिये उकसाया। उसने शक्तिशाली कलिङ्ग राज्य पर आक्रमण कर दिया। अशोक के बर्वर सैनिकों ने निरीह कलिङ्गवासियों का निर्ममतापूर्वक संहार करते हुए, समूचे कलिङ्ग को रौंद डाला। हिंसा का नग्न ताण्डव इतना भयानक था कि उसे देख कर पत्थर का कलेजा भी काँप उठता।

विजय के उन्माद में अशोक ने जव ध्वस्त कलिङ्ग को अपनी आंखों से देखा और कलिङ्गवासियों का आर्तनाद सुना तो उसकी आत्मा उसे धिक्कारने लगी। वह स्वयं को अपराधी समझने लगा। उसे हिंसा और युद्ध से घृणा हो गई। उसका हृदय परिवर्तन हुआ और वह मन की शान्ति प्राप्त करने के लिये भगवान् बुद्ध की शरण में जा पहुँचा।

बुद्ध धर्म अपना कर 'चण्ड अशोक' धर्म के मार्ग पर चलने लगा। वह प्रियदर्शी अशोक वन गया। उसने अनेक स्तम्भ बनवा कर उन पर अपने आदेश लिखवाये, अपने विशाल साम्राज्य में प्रजा को धर्माचरण करने की आज्ञाएँ शिलालेखों पर अंकित कराई।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अशोक के शिलालेखों में पशु–पक्षियों तक की हत्या पर प्रतिवन्ध लगाये गये; मनुष्य को कैसा आचरण करना चाहिये, इसके विषय में आदेश निर्देश दिये। उसने धर्म में आस्था रखने, शान्तिपूर्ण और सात्विक जीवन व्यतीत करने तथा हिंसा, दुराचरण और दुष्प्रवृत्तियों से दूर रहने के लिये सवको प्रेरित किया और इतिहास में महान् सम्राट् अशोक के रूप में अपनी अमरकीर्ति छोड़ गया। उसके शिलालेख आज भी उसके महान् विचारों के अमिट प्रमाण हैं। ❑

मनुष्य ठीक उसी परिणाम में महान बनता है जिस परिणाम में वह ओरों की कल्याण के लिए श्रम करता है।

— सुकरात

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

छोटी सी सलाह

लाल वहादुर शास्त्री अपने सहयोगियों के साथ किसी विपय पर चर्चा करते हुए कई वार अपने किसी नौकर या माली से पूछ वैठते, 'क्यों भई, तुम्हारी इस पर क्या राय है' एक वार उनके मित्र ने पूछा, 'मुझे आज तक आपका यह व्यवहार समझ में नहीं आया है। कहाँ राजनीति की पेंचीदा वातें और कहाँ यह नौकर।'

इस पर शास्त्री जी मुस्कराते हुए बोले, 'गुरुत्वाकर्षण के सिद्धान्त की खोज करने वाले न्यूटन के घर उनकी प्यारी बिल्ली ने वच्चे दिये। रात को जव घर के सारे दरवाज़े बन्द हो जाते तो वह विल्ली और उसके वच्चे वाहर निकलने के लिए मिमियाने लगते, तव न्यूटन ने विल्ली और वच्चों के लिए दरवाज़े में दो छेद, एक छोटा और एक वड़ा वनाने के लिए अपने नौकर से कहा तो नौकर ने सुझाया कि एक वड़ा छेद ही काफी है, छोटे छेद की ज़रूरत नहीं, क्योंकि जिस छेद से विल्ली गुज़रेगी उसी छेद से बिल्ली के वच्चे और भी आसानी से गुज़र जायेंगे। यह वात सुनकर न्यूटन हैरान रह गये कि इतनी मामूली सी बात उन्हें क्यों नहीं सूझी।'

मंद मंद हंसते हुए शास्त्री जी बोले, 'हमेशा याद रखो कि कभी-कभी छोटे व्यक्ति की राय भी आड़े वक्त काम दे जाती है।'

□

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मनोभाव ही स्वर्ग और नरक

चीन के एक प्रसिद्ध दार्शनिक के पास एक सेनापति कुछ जिज्ञासाओं का समाधान करने गया। वह स्वर्ग और नरक के विषय में सुनी हुई दिलचस्प बातों की सच्चाई जानना चाहता था।

दार्शनिक ने उसका परिचय पूछा तो उसनें स्वयं को सेना का एक उच्च अधिकारी बताया और अपने कुछ वीरतापूर्ण कार्यों का भी वर्णन किया।

दार्शनिक ने बड़ी ज़ोर से ठहाका लगाया। बोलें "सूरत शकल से तो आप मुझे सेनापति नहीं, बल्कि भिखारी लगते हैं। मुझे विश्वास नहीं होता कि आपमें हथियार पकड़ने की क्षमता है। आप अवश्य ही कोई छद्मवेशी हैं।"

सेनापति को अपमानजनक बातों से क्रोध आया। उसने उत्तेजित होकर, कमर से लटकती हुई अपनी तलवार म्यान से बाहर निकाल ली और दार्शनिक की गर्दन काटने पर उतारु हो गया।

सेनापति को क्रोधित देखकर दार्शनिक फिर हँसे। बोले—"अच्छा, तो आप तलवार भी रखते हैं। शायद काठ की होगी, लोहे की होती तो अब तक हाथ से छूटकर गिर गई होती। आपकी कलाइयों में हथियार उठाने की ताकत ही नहीं है। आप मेरी गर्दन भला कैसे काटेंगे?"

सेनापति अब आपे से बाहर हो गया। क्रोध से उसकी आँखें अंगारों की तरह दहकने लगीं, नथुने फड़कने लगे। ऐसा लगा कि वह वार कर बैठेगा। दार्शनिक गम्भीर हो गये। बोले—"सेनापति! देख रहे हो? यही नरक है। क्रोध में उन्मत्त होकर तुमने विवेक खो

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दिया और पाप करने के लिये तैयार हो गये।"

सेनापति शान्त हो गया। उसने तलवार म्यान में रखी ली। दार्शनिक बोले— "यही स्वर्ग है। जब चित्त शान्त हो जाता है, विवेकशीलता के कारण अपनी भूलों का बोध होने लगता है, मन-मस्तिष्क में स्थिरता आ जाती है, मन में एक विलक्षण आनन्द की अनुभूति होती है। इसी आनन्दपूर्ण स्थिति का नाम स्वर्ग है।"

□

अति क्रोध, कटु वाणी, स्वजनों से वैर, नीचों का संग, दरिद्र मन — यही नरक के लक्षण हैं।

— चाणक्य

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मोहनदास का हृदय परिवर्तन

"वचपन के दो प्रसंग सदा मुझे याद रहे हैं। पिताजी की खरीदी हुई एक किताव पर मेरी नज़र पड़ी। वह था "श्रवण-पितृभक्ति नाटक। उसे पढ़ने की इच्छा हुई और मैं उसे बड़े चाव से पढ़ गया। उन दिनों काठ के बक्से में शीशे से चित्र दिखाने वाले दरवाज़े-दरवाज़े फिरा करते थे। उनसे मैंने श्रवण के अपने माता-पिता को काँवर में विठाकर यात्रा के लिये ले जाने का चित्र देखा। दोनों चीजों का मुझ पर गहरा असर पड़ा। मुझे भी श्रवण के समान होना चाहिये, यह भाव मन में उठने लगा।"

"इसी बीच कोई नाटक कम्पनी आई। मुझे उसका नाटक देखने की इज़ाजत मिली। उसमें राजा हरिश्चन्द्र की कथा थी। यह नाटक देखने से मेरी तृप्ति ही नहीं होती थी। उसे वार वार देखने को जी चाहता था, पर वार-वार जाने कौन देता? किन्तु अपने मन में इस नाटक को सैकड़ों वार दोहराया होगा। हरिश्चन्द्र के सपने आया करते थे। हरिश्चन्द्र जैसे सत्यवादी सव क्यों नहीं हो जाते? यह धुन रहती। हरिश्चन्द्र पर जैसी विपत्तियाँ पड़ीं थीं, वैसी विपत्तियों को भोगना और सत्य का पालन करना ही वास्तविक सत्य है। मैंने तो मान लिया था कि नाटक में लिखी विपदाएँ हरिश्चन्द्र पर अवश्य पड़ी होंगी। हरिश्चन्द्र का दुःख देखकर, उसे याद कर, मैं खूव रोया हूँ। आज मेरी वुद्धि समझती है कि हरिश्चन्द्र कोई ऐतिहासिक व्यक्ति नहीं थे, फिर भी मेरे मन में श्रवण और हरिश्चन्द्र आज भी जीवित हैं।"

महात्मा गांधी के 'सत्य के प्रयोग' ग्रन्थ का एक अंश। □

CC-0 Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मैं क्यों निराश होऊँ?

ब्रूसी को वार वार हारना पड़ा। वह लड़ाई की नये सिरे से तैयारी करता, पर परिस्थिति अनुरूप न पड़ने से उसे असफलता मिलती। ग्यारह वार हारने के उपरान्त उसकी हिम्मत टूट गई और वह किसी अज्ञात स्थान में छिप कर दिन गुज़ारने लगा।

एक दिन ब्रूसी विस्तर पर पड़ा था। छत पर मकड़ी जाल बुन रही थी। धागा वार-वार टूट जाता। फिर भी मकड़ी निराश नहीं हुई। मकड़ी को ठीक वारहवें प्रयत्न में सफलता मिली और जैसा चाहती थी, वैसा जाला बुन लिया।

इस दृश्य का ब्रूसी पर वड़ा प्रभाव पड़ा। जब मकड़ी ग्यारह वार की असफलता से निराश नहीं हुई तो मैं क्यों निराश होऊँ और नए सिरे से प्रयत्न क्यों न करूँ? वारहवें प्रयत्न में वह जीता और राजा वन गया। प्रयास करने वालों को सफलता अवश्य ही मिलती है। प्रयास करने वालों को कभी हार नहीं माननी चाहिये और न ही प्रयास करने से थकना चाहिए।

□

उत्साह मनुष्य की भाग्यशीलता का मापदण्ड है।
—सन्त तिरुवल्लुवर

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

माँ महान् क्यों?

स्वामी विवेकानन्द से एक जिज्ञासु ने प्रश्न किया— "माँ की महिमा संसार में किस कारण से गायी जाती है?"

स्वामीजी मुस्कराये। उस व्यक्ति से वोले— "पाँच सेर वजन का एक पत्थर ले आओ।"

जव वह व्यक्ति पत्थर ले आया तो स्वामी जी ने उससे कहा— "अव इस पत्थर को किसी कपड़े में लपेट कर अपने पेट पर बाँध लो और चौवीस घंटे के वाद मेरे पास आओ तो मैं तुम्हारे प्रश्न का उत्तर दूँगा।"

स्वामी जी के आदेशानुसार उस व्यक्ति ने पत्थर को अपने पेट पर वाँध लिया और चला गया। पत्थर वाँधे हुए वह दिनभर अपना काम करता रहा, किन्तु हर क्षण उसे परेशानी और थकान महसूस हुई। शाम होते होते पत्थर का वोझ संभाले हुए चलना फिरना उसके लिये असह्य हो उठा। सात–आठ घंटों में ही उसे दिन में तारे नज़र आने लगे। वह थका–मांदा स्वामीजी के पास आया और वोला—"अव और अधिक मैं इस पत्थर को वाधे नहीं रख सकूँगा। एक प्रश्न का उत्तर पाने के लिए मैं इतनी कड़ी सजा नहीं भुगत सकता।"

स्वामी जी मुस्कुराते हुए वोले— "पेट पर वंधे हुए इस पत्थर का वोझ तुमसे आठ घटे भी उठाया नहीं गया और मां अपने गर्भ में पलने वाले शिशु को पूरे नौ मास तक ढोती है, गृहस्थी का सारा काम करती है, और तनिक भी विचलित नहीं होती। संसार में माँ के सिवा कोई इतना धैर्यवान और सहनशील नहीं है, इसीलिये मां से वढ़कर इस संसार में कोई और महान् नहीं है। उसकी महिमा जितनी भी गायी जाये कम है।"

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शक्ति की सीमा

श्रीकृष्ण ने जब शिशुपाल का वध किया तो अर्जुन ने साश्चर्य पूछा— 'देव जैसे आज निमिष मात्र में इस दुष्ट को मृत्यु दंड का पात्र मान लिया वैसे भूतकाल में भी आप उसे किसी भी अपराध में मार सकते थे। वह तो सदैव आपका अपमान करता आया है।'

श्रीकृष्ण ने आत्मस्थ गाम्भीर्य के साथ उत्तर दिया— "धनञ्जय, मैं तुम्हारे तर्क को मानता हूँ। यह भी स्वीकार करता हूँ कि आज की तरह कभी भी मैं उसका संहार कर सकता था, किन्तु मेरे सम्मुख सदैव एक प्रश्न रहा है कि क्या बल का धर्म सदैव दण्ड का ही है, क्षमा या सहन करने का नहीं? क्षमा बलवान ही कर सकता है. दुर्बल क्या क्षमा करेगा? सहन भी वही करेगा, जिसके पास सहनशक्ति होगी। अशक्त क्या सहन करेगा? परंतप, मैं अब तक अपनी इस शक्तियों की परीक्षा कर रहा था। मैं अपनी ही थाह ले रहा था कि मुझमें जो शक्ति है, वह कितनी मेरी है; क्योंकि शक्ति उतनी ही हमारी होती है, जिस पर हमारा, हमारे संकल्प का अंकुश रह सकता है।'

□

प्रतिभावान मनुष्य भूलें नहीं करता, उसकी भूलें इच्छाशक्ति से प्रेरित होती है और उपलब्धि के द्वार खोलती है।

— गेटे

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

काल पर विजय

एक वार धर्मराज युधिष्ठिर के पास कोई निर्धन व्राह्मण याचना करने आया। उस समय वे राजकाज में व्यस्त थे। उन्होंने नम्रतापूर्वक व्राह्मण से कहा— "व्रह्मदेव! आप कल पधारने की कृपा करें, आपको अभीष्ट वस्तु प्रदान की जायेगी।"

व्राह्मण चला गया। उसके जाते ही भीमसेन उठे और राजप्रसाद के मुख्य द्वार पर आकर ज़ोर-ज़ोर से दुन्दुभी बजाने लगे। उन्होंने सेवकों को भी मंगलवाद्य वजाने की आज्ञा दे दी।

यह आवाज जव राजसभा में पहुँची तो वहाँ उपस्थित सभी लोग चौंक पड़े और एक दूसरे का मुँह देखने लगे। किसी को कुछ समझ में नहीं आया। युधिष्ठिर ने चकित होकर एक सेवक को उस कोलाहल का कारण पता लगाने के लियें भेजा।

सेवक लौटकर वोला— "महाराज! ये वाद्य भीमसेन के आदेश से वजाये जा रहे हैं। मैंने उन्हें भी दुन्दुभी वजाते देखा है।" युधिष्ठिर ने भीमसेन को वुलवाया और थोड़ा अप्रसन्न होकर पूछा—क्या वात है भीम, यह सव क्या हो रहा है?'

भीम वोले—"महाराज! आज तो वड़े आनन्द का दिन है। आपने काल को जीत लिया है। आपकी इस जीत ने मुझे खुशी से पागल कर दिया है।"

युधिष्ठिर ने आश्चर्य से पूछा— "तुमने कैसे जाना कि मैंने काल को जीत लिया है? क्या काल को जीतना सम्भव है?"

भीम ने हँसकर कहा— "संभव है, तभी तो आपने दान जैसे पुण्य कार्य को कल पर टाल दिया है। तीनों लोकों में प्रसिद्ध है कि

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आपके मुँह से हँसी में भी असत्य वात नहीं निकलती। जव आपनें व्राह्मण देवता को कल वुलाया, उसी समय मैंने जान लिया कि कम से कम कल तक तो अवश्य ही काल पर आपका अधिकार है।"

अव युधिष्ठिर को अपनी भूल का वोध हुआ। वे वोले— "भैया भीम, अच्छा हुआ, तुमने मुझे सावधान कर दिया। पुण्य कार्य तत्काल करना ही उचित है। उन व्राह्मण देवता को ढूँढकर उपस्थित करो। मैं आज ही उनकी इच्छा पूरी करूँगा।" ❑

उत्तम दान वह है जो देश, काल और पात्र को जानकर सत्य विद्या, धर्म की उन्नति रूप परोपकार हेतु देवे। मध्यम वह है जो कीर्ति व स्वार्थ हेतु करे।

— समर्थ गुरु रामदास

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जो दिल खोजा आपना

ईसा के सामने वह महिला सिर नीचा किये खड़ी थी। क्या कहती बेचारी? साथ आई हुई भीड़ ज़ोर-ज़ोर से चिल्ला कर कह रही थी, "इस कुलटा को ऐसी कठोर सज़ा दीजिये, ताकि कभी भी कोई ऐसा बुरा काम करने की हिम्मत न करे, इसे पत्थर मारे जायें" वे सब समाज के आगे अपने आप को निर्दोष मान कर उस महिला की निन्दा कर रहे थे।

ईसा शान्त भाव से सुनते रहे। फिर बोले– "यदि यह दोषी है तो इसे पत्थर से मारना ही चाहिए ताकि भविष्य में सबको सबक मिले। पर इसको पत्थर वही लोग मारे जिन्होंने जीवन में अभी तक कोई भी पाप न किया हो। दोषी व्यक्ति को क्या अधिकार है कि वह अन्य दोषी को दण्ड दे?"

यह सुनते ही भीड़ के प्रत्येक आदमी का सिर नीचा हो गया, क्योंकि एक भी ऐसा व्यक्ति वहाँ नहीं था जिसने अपने जीवन में किसी भी प्रकार का पाप न किया हो। धीरे-धीरे एक के बाद एक सब वहाँ से चले गये। सचमुच महामानव के सोचने का तरीका बहुत ही भिन्न होता है!

'जो दिल खोज आपना-मुझ से बुरा न कोय!'

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साम्प्रदायिकता को तिलाञ्जलि

नेताजी सुभाषचन्द्र बोस ने भारत के बाहर स्वाधीनता की लड़ाई लड़ी। बड़ी संख्या में भारतीय सैनिकों ने उनका साथ दिया। विदेशी सरकार की दृष्टि से यह भयंकर अपराध था। जब वे सैनिक पकड़े गये, तो सरकार ने उन पर राजद्रोह का मुकदमां चलाया। उस समय सारा भारत भी उनको छुड़ाने के लिए तत्पर हो उठा। गांधी जी इस सम्बन्ध में प्रधान सेनापति से मिले।

वह बन्दियों से भी मिले। काबुल लाइंस में, फिर लालकिले में। उन लोगों ने गांधीजी से कहा, "जब हम लड़ रहे थे, हमने नेताजी बोस के प्रेरक नेतृत्व में अपने बीच से साम्प्रदायवाद को सर्वथा तिलांजलि दे दी थी। हमारी आज़ाद हिन्द फौज में हिन्दू-मुसलमानों के लिए अलग-अलग भोजनालय नहीं थे, परन्तु युद्धबंदी के रूप में भारत लौटने पर छावनी के अधिकारी फिर हम पर ज़बर्दस्ती 'हिन्दू चाय' और 'मुसलमान चाय' का अभिशाप लाद रहे हैं।'

गांधी जी ने कहा, "इसे बर्दाश्त नहीं करना चाहिए। आपको दोनों चाय आधी आधी मिला कर आपस में बांटनी चाहिए।" सैनिकों ने कहा, "हम ठीक यही कर रहे हैं।"

छावनी के अंग्रेज अफसर पर इसका गहरा असर हुआ। जब गांधी जी विदा होने लगे तब सैनिकों ने कंटीले तारों के पीछे गोलाकार खड़े होकर, कवि रवीन्द्रनाथ ठाकुर के 'जनगणमन' का हिन्दी रूपातर गाया।

उनका राष्ट्रगान इतना सहज था कि अफसर बोल उठा, "ये लोग बहुत अच्छे हैं। मुझे आशा है कि इनका मामला अच्छी तरह निपट जायेगा।" □

CC-0 Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सत्यप्रिय गोखले

परम देशभक्त श्रीयुत गोपाल कृष्ण गोखले वाल्यावस्था में जव स्कूल में पढ़ते थे, तव एक दिन शिक्षक ने कुछ गणित के प्रश्न घर से करके लाने के लिये दिये। गोपाल कृष्ण को उनमें एक प्रश्न नहीं आता था, इसलिये उसे दूसरे विद्यार्थी की मदद से कर लिया। स्कूल में सव लड़कों की कापी देखी गयी, केवल गोपालकृष्ण के सारे प्रश्न सही निकले।

यह देखकर शिक्षक वहुत ही प्रसन्न हुए और उनको कुछ इनाम देने लगे। वालक गोपालकृष्ण ने इनाम तो लिया नहीं, वे उल्टे रोने लगे। यह देखकर शिक्षक को वहुत ही आश्चर्य हुआ और उनसे रोने का कारण पूछा। वालक ने हाथ जोड़ कर नम्रता से कहा कि 'आपने तो यह समझा होगा कि इन सव प्रश्नों के उत्तर मैंने अपनी वुद्धि से निकाले हैं; पर यह सच नहीं है। इनमें से एक प्रश्न में मैंने अपने एक मित्र से मदद ली है। अव वतलाइये कि मैं इनाम पाने लायक हूँ या सज़ा पाने लायक?

यह सुनकर शिक्षक वहुत ही प्रसन्न हुए और उसके हाथ में इनाम देते हुए कहा कि 'अव यह इनाम मैं तुझको तेरी सत्यप्रियता के लिये देता हूँ।'

□

CC-0 Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शासक का कर्तव्य

हज़रत उमर वेश वदल कर लोगों के वीच घूमा करते थे। देखते थे किसी को कोई कष्ट तो नहीं है। एक वार वह किसी झोंपड़ी के पास से गुजर रहे थे। उन्होंने देखा एक स्त्री फ़र्श पर वीमार पड़ी है। चूल्हे पर हाँडी चढ़ी हैं, पर वच्चे भूख से तड़प रहे हैं। उन्होंने स्त्री के नज़दीक जाकर पूछा, "तुम वच्चों को खाने को क्यों नहीं देतीं?"

स्त्री ने उनकी ओर देखा और वोली, "इन्हें खिलाने को मेरे पास है क्या?"

"इस हांडी में क्या पक रहा है?"

"मुझसे क्या पूछते हो, अपने आप क्यों नहीं देख लेते!"

हजरत उमर ने देखा—उसमें खाली पानी उवल रहा था। स्त्री ने वच्चों को वहलाने के लिए यह तदवीर की थी।

उमर ने कहा, "तुम्हारे पास कुछ नहीं था तो तुम ख़लीफ़ा के पास क्यों नहीं गयीं?'

स्त्री वोली, "क्या ख़लीफ़ा का यह फ़र्ज़ नहीं कि इसकी जानकारी रखे?"

हज़रत उमर ने सहम कर कहा, "खलीफा के राज्य में इतने लोग हैं। वह आखिर हर किसी की देखभाल कैसे कर सकते हैं?"

स्त्री के चेहरे पर तनाव आ गया। बोली, "अगर खलीफा मेरे पति को लड़ाई में भेज सकते हैं तो क्या उन्हें उसके स्त्री वच्चों के खाने पीनें का इंतज़ाम खुद नहीं करना चाहिए?"

वात उसकी सही थी। उमर ने फौरन शाही भंडार से खाने का सामान मंगवाया, सवको खिलाया और आगे का सारा इंतजाम भी कर दिया। □

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गुस्सा क्यों नहीं आता

एक दिन सन्त एकनाथ से एक आदमी मिलने आया। उसने कहा, "महाराज, आपका जीवन कितना सादा है। आप कभी किसी पर गुस्सा नहीं होते। सब पर प्रेम करते हैं। ऐसा क्यों है?"

एकनाथ ने कहा, "इस सबको छोड़ो। लेकिन सुनो, मुझे एक बात मालूम हुई है।"

उस आदमी ने पूछा, "क्या?"

एकनाथ बोले, "सात दिन के भीतर तुम मर जाने वाले हो।"

इतना सुनना था कि वह आदमी हैरान हो गया। एकनाथ ऊंचे सन्त थे। उनकी बात झूठी कैसे मानी जा सकती थी?

वह आदमी दौड़ा-दौड़ा घर आया। उसे कुछ सूझता ही नहीं था क्या करे, क्या न करे। परेशानी के मारे वह बीमार पड़ गया।

इस तरह छह दिन बीत गये। सातवें दिन एकनाथ उस आदमी के घर आये। बोले, "कहो, भई, क्या हाल है?"

उसने कहा, "महाराज, अब तो एक दिन बाकी रह गया है।"

एकनाथ ने पूछा, "क्यों, इन दिनों में कितना पाप किया?"

"आप पाप की बात कहते हैं" वह बोला, "मुझे तो हर घड़ी मौत सामने खड़ी दिखाई देती है। ऐसे में पाप कौन कर सकता है!"

एकनाथ ने कहा, "तुमने मुझसे जो सवाल किया था, उसका जवाब मिल गया न?"

□

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दुनियाँ का बादशाह

सिकन्दर बादशाह का नाम सब जानते हैं। एक बार की बात है। वह कहीं से लौट रहा था। देखता क्या है कि एक पेड़ के नीचे एक फ़कीर बैठा मस्ती में गा रहा है।

उसकी मस्ती देखकर सिकन्दर ने पूछा, "तुम कौन हो?"

फ़कीर ने जवाब दिया, "मैं दुनियाँ का बादशाह हूँ।"

यह सुनकर सिकन्दर को बड़ा अचरज हुआ। मन ही मन बोला, "अरे बादशाह तो मैं हूँ। लाखों रुपया खर्च करता हूँ, इतनी बड़ी फौज रखता हूँ, कसकर मेहनत करता हूँ। यह फकीर दुनियाँ का बादशाह कहाँ से हो गया।"

उसने फकीर से पूछा, "क्यों भाई, तुमने ऐसा क्या किया है, जो दुनियाँ के बादशाह बन गये?"

फ़कीर जोर से हंस पड़ा। बोला, "तुमने सुना नहीं— 'मन जीते, जग जीते।' जिसने मन को जीत लिया, उसने दुनियाँ को फतह कर लिया।"

इतना कह कर उसने फिर मस्ती से तान छेड़ दी।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सच्चे शिव की खोज

ऋषि दयानन्द के जीवन की वह घटना देखने में साधारण प्रतीत होती है—शिव की पिण्डी पर चूहे को देखकर सोचा यह सच्चा शिव नहीं है—लेकिन इस छोटी सी घटना ने उनका जीवन ही वदल दिया तथा सच्चे शिव की खोज में निकल पड़े। प्रसंग इस प्रकार है—

वालक मूलशंकर चौदह वर्ष के हुए तव पिता जी ने उन्हें शिवरात्रि का व्रत रखने की आज्ञा दी। पहिले तो मूलशंकर भी हिचके, परन्तु स्वर्ग प्राप्ति आदि के अनेक प्रलोभनों से आकृष्ट होकर और इस व्रत का महात्म्य सुनकर यह व्रत रखने के लिए उत्साहित हो गये। शिवरात्रि को नगर के वाहर एक वड़े शिवालय में नगर के सर्वसाधारण भक्त और प्रतिष्ठित जन आकर व्रत पूर्वक पूजा पाठ, जप और जागरण किया करते थे। प्रथम प्रहर की पूजा वड़ी भक्ति भाव से सम्पन्न हुई जैसे–तैसे दूसरे प्रहर की पूजा भी पूरी की गई, परन्तु तीसरा प्रहर आरम्भ होते–होते लोगों की आंखें मिचने लगी। सव सो गये परन्तु मूलशंकर जाग रहे थे। जब उन्हें निद्रा आती थी, तव वह अपनी आंखों पर पानी के छींटे मार मारकर अपने आपको सचेत और सावधान कर लेते थे। उन्हें भय था कि निद्रा आने से व्रत भंग हो जाएगा। इसी समय उन्होंने आश्चर्य से देखा कि कुछ क्षुद्र मूपक (चूहे) विलों में से निकल कर शिवपिण्डी पर चढ़ कर उछल कूद मचाने लगे और दण्ड पेलने लगे। वे पिण्डी पर चढ़े नैवेद्य को आनन्द से खाने लगे और अपने मलमूत्र से उस पिण्डी को भी अपवित्र करने लगे। जैसे वादलों में विद्युत् रेखा कौंध जाती है, उसी प्रकार इस दृश्य को देखने का

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मूलशंकर के हृदय में भी विचारों की तरंगें उठने लगीं। वह सोचने लगे कि यह कैसा शिव है जो क्षुद्र चूहों से भी अपनी रक्षा नहीं कर सकता है। जब उनकी जिज्ञासा शान्त नहीं हुई तब उन्होंने पिताजी को जगा कर शंका समाधान करनी चाही। वहाँ डांट डपटके सिवाय कोई उत्तर नहीं था। इस घटना से मूलशंकर की आस्था बदल गयी। मैं सच्चे शिव के दर्शन करूँगा, ऐसा दृढ़ निश्चय कर घर से निकल पड़े।

वेदों का पुनरुद्धार करके, मानवता को अंधकार, अविद्या, अंधविश्वास से मुक्त कर सत्य व विवेक का मार्ग दर्शाया। जीवन पर्यन्त मानव जाति के उत्थान में लगे रहे। ☐

वड़े-वड़े महान संकल्प आवेग में ही जन्म लेते हैं।

— मुन्शी प्रेमचन्द

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुभाष का संकल्प

सुभाष अभी बच्चे ही थे। मां की गोद में से उठकर ज़मीन पर सोये। मां के पूछने पर उसने बताया— आज अध्यापक कह रहे थे कि हमारे पूर्वज ऋषि मुनि थे, ज़मीन पर सोते और कठोर जीवन जीते थे। मैं भी ऋषि बनूँगा, सो कठोर जीवन का अभ्यास कर रहा हूँ। पिताजी जाग गए उन्होंने कहा— "जमीन पर सोना ही पर्याप्त नहीं, ज्ञान संचय और सेवा में संलग्न होना भी आवश्यक है। अभी तुम मां के पास सो जाओ, बड़े होने पर तीनों काम करना। सुभाष ने अध्यापक की ही नहीं, पिता जी की भी बात गिरह बांध ली। आई. सी. एस. पास करके जब अफसर बनने की बात सामने आयी, तो उन्होंने कहा मैं जीवन का लक्ष्य निश्चित कर चुका हूँ। मातृभूमि कीं सेवा करूँगा और महान् बनूँगा। बचपन का निश्चय उन्होंने मरण पर्यन्त निभाया। ऐसे होते हैं महामानव।

❑

सज्जनों के संकल्प कल्पवृक्ष के फलों की भांति शीघ्र ही परिपक्व हो जाते हैं।

— कालिदास

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वामी श्रद्धानन्द व ईसाई प्रचारक

स्वामी दयानन्द के शिष्य तथा आर्यसमाज के तपोनिष्ठ स्वामी श्रद्धानन्द ने गुरुकुल कांगड़ी में एक विद्यालय की स्थापना की। यहाँ अन्य विषयों के अलावा वेदान्त धर्म की शिक्षा भी दी जाती है।

एक वार रुड़की के एक अंग्रेज पादरी ने स्वामी जी को लिखा कि "मैं धर्म प्रचार के लिए हिन्दी सीखना चाहता हूँ। इसके लिए मैं कुछ माह तक गुरुकुल में रहने की अनुमति चाहता हूँ। मैं आपको वचन देता हूँ कि वहाँ निवास के दौरान ईसाई धर्म का प्रचार विल्कुल नहीं करूँगा।"

कुछ दिन वाद पादरी महोदय को स्वामी श्रद्धानन्द का उत्तर मिला, "गुरुकुल में आपका स्वागत है। आप हमारे अतिथि वन कर रहेंगे। परन्तु यह भी वचन दीजिए कि गुरुकुल में आप ईसाई धर्म का प्रचार पूरी तरह करेंगे, जिससे हमारे छात्र महात्मा ईसा के जीवन तथा धर्म को भी जान सकें। धर्म आपस में वैर करना नहीं, प्रेम करना सिखाता है।"

पादरी महोदय गुरुकुल आए तो स्वामी जी ने उनके लिए उचित व्यवस्था कर दी और पूर्ण सम्मान के साथ हिन्दी सीखने की सुविधा प्रदान की। गुरुकुल में उन पर किसी प्रकार का प्रतिवन्ध नहीं था।

भारतीय धर्मों के वारे में पादरी महोदय की पूर्व धारणाएँ मिट गई और वे स्वामी जी के भक्त वन गए। वे जीवन पर्यन्त स्वामी श्रद्धानन्द और गुरुकुल के मित्र तथा शुभचिन्तक वने रहे। □

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दायरे के बाहर

नई दुनियाँ की खोज करने वाले कोलम्वस ने भारत पहुँचने का इरादा किया था, परन्तु पहुँच गया अमरीकी महाद्वीप में। उस समय तक यह महाद्वीप पूरी तरह अज्ञात था। साहसी नाविकों के एक दल को ले कर जव वह अतलांतिक महासागर में उतरा तो वहुत कम लोगों को आशा थी कि वह जीवित लौट सकेगा। कोलम्वस एक अटूट आशा ले कर निर्भीकतापूर्वक वढ़ता गया। उसके साथियों ने विद्रोह कर दिया, आगे वढ़ने से इन्कार कर दिया, परन्तु वह नई दुनियाँ की खोज कर सकुशल स्पेन वापस लौट आया।

कोलम्वस के अदम्य साहस, धैर्य और अविचल आशावादिता की चारों ओर प्रशंसा होने लगी। किन्तु कुछ उसकी कीर्ति से द्वेष करने लगे।

भोजन की मेज़ पर उसके अनेक मित्र मौजूद थें। उनमें से कुछ ने कहा "नई दुनियाँ को खोज निकालना कौन सा कठिन कार्य है। अंतलांतिक सागर में पश्चिम की ओर चले और पहुँच गएं।"

कोलम्वस ने विनम्रतापूर्वक कहा, "दोस्तो, संसार में कोई कार्य कठिन नहीं है। आप कृपा करके इस अंडे को मेज़ पर खड़ा कर दीजिए।" इतना कह कर उसने एक उवला हुआ अंडा उठाया। सभी ने कोशिश की परन्तु सफल न हो सके। तव कोलम्वस ने उसके चौड़े भाग को पिचका कर अण्डा खड़ां कर दिया और कहा, "देखिए कितना सरल है।"

सभी मित्र शरम से पानी-पानी हो गए। उन्हें पता चल गया कि कोलम्वस कैसे सफल हुआ?

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साहित्य का उद्देश्य

जापान की एक वौद्ध संस्था ने उपलब्ध सारे धर्म-ग्रंथों को प्रकाशित करने का संकल्प किया। उसके लिये धनराशि भी एकत्रित की। जव राशि लगभग पूरी होने को आई, तभी भयंकर वाढ़ आई और भयंकर दुर्भिक्ष पड़ गया।

प्रकाशन के लिये एकत्रित राशि पीड़ितों की सहायता के लिये खर्च कर दी गई। समय ठीक होने पर प्रयत्न फिर से आरम्भ किया गया और धन नये सिरे से एकत्रित करके आवश्यकता पूरी करने का प्रवन्ध किया गया। इसी वीच दूसरी वार भी वाढ़ आ गई। संग्रहित धन लोगों की जान वचाने में खर्च कर दिया गया।

तीसरी वार वह प्रयत्न फिर हुआ, तव जाकर पहला संस्करण छप सका। पर प्रकाशित पुस्तकों पर तीसरा संस्करण छपा था। इसका कारण वताते हुए भूमिका में स्पष्ट किया गया कि दो वार संग्रह किया गया धन उस तात्कालिक आवश्यकला के कार्य में खर्च किया गया जो इस प्रकाशन के समान ही महत्त्वपूर्ण था। साहित्य का उद्देश्य यही तो है कि वह करुणा और सेवा की भावनाओं को कार्यान्वित करे। इन ग्रंथों के प्रथम दो संस्करण उसी प्रयोजन की पूर्ति में लगे समझे जायें। □

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुयोग्य शासक कौन?

मौर्य सम्राट् विन्दुसार के अनेक पुत्र थे। परम्परा के अनुसार, सम्राट् अपने वड़े पुत्र को उत्तराधिकारी वनाना चाहते थे, परन्तु मन्त्रीगण चाहते थे कि जो सवसे योग्य हो उसे ही गद्दी का उत्तराधिकार मिलना चाहिए। यह विवाद वना रहा।

महात्मा पिंगलवत्साजीव सम्राट् के अतिथि वन कर आए। सम्राट् ने उनसे अनुरोध किया कि वे उनके पुत्रों की परीक्षा लें और यह वताएँ कि सवसे योग्य कौन है? महात्मा ने स्वीकार कर लिया।

सभी राजकुमारों को एक बड़े मंडप में वुलाया गया। अशोक एक सामान्य हाथी पर, विना सज धज के वहाँ पहुँचा। अन्य राजकुमार खूव सज धज कर आए थे। दोपहर का भोजन भी राजकुमारों ने मंडप में ही किया। अन्य राजकुमारों ने सोने के पात्रों का प्रयोग किया जवकि अशोक ने मिट्टी के वर्तनों में भोजन किया। महात्मा ध्यान से देख रहे थे।

महात्मा ने सभी राजकुमारों को एक-एक कर साक्षात्कार के लिए वुलाया। अंत में अशोक को वुलाया और पूछा, "पुत्र! तुमने क्या पढ़ा है?" अशोक ने उनको नमस्कार कर कहा, "वैसे तो वहुत कुछ पढ़ा है परन्तु मुख्य शिक्षा यही पाई है कि वड़ों का आदर करो, दुःखियों के कष्ट मिटाओ और कमज़ोर की मदद करो और मैं इन शिक्षाओं को अमल में लाने का यथाशक्ति प्रयास भी करता हूँ।"

महात्मा पिंगलवत्साजीव ने सम्राट् को अपनी राय दी कि उनके पुत्रों में अशोक ही सवसे योग्य है।

महात्मा का अनुमान सही था। यही वालक वड़ा होकर सम्राट् अशोक के नाम से प्रख्यात हुआ। □

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परमार्थ में सच्चा आनन्द

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पराए दुःख दर्द का साथी

फ्रांस के योद्धा सम्राट् नेपालियन के वचपन की घटना है। एक दिन वह वाग में टहल रहा था। उसकी वहन इलायजा भी साथ थी। दोनों सड़क पर आए तो उसकी वहन की टक्कर से एक गरीव वालिका के फलों की टोकरी गिर पड़ी, वालिका रोने लगी। इलायजा ने भाई के कान में कहा, "चलो भाग चलें।"

लेकिन नेपालियन ने कहा, "पहले उसके फलों को उठाओ"। दोनों ने विखरे हुए फल इकट्ठा करके टोकरीं में डाल दिए। उसके वाद नेपालियन उस गरीव वालिका को ले कर माँ के पास गया और वोला, "माँ, आज मुझसे एक कसूर हो गया है। मेरी टक्कर से इस लड़की की टोकरी गिर पड़ी और वहुत से फल खराव हो गए। आप इसको फलों की कीमत दे दीजिए।"

माँ ने नाराज़ होते हुए कहा, "ठीक है, लेकिन तुम्हें डेढ़ महीने तक कोई ज़ेब खर्च नहीं मिलेगी।"

"मुझे स्वीकार है, पर इस लड़की को अभी पैसे दे दीजिए।"

इतना सुनने के वाद वहन अपने को न रोक सकी। बोली, "माँ, वास्तव में टक्कर तो मुझसे लगी थी। भाई का कोई दोष नहीं, तुम मेरा जेब खर्च काट लेना।"

वच्चों के इस व्यवहार पर माँ का हृदय भर आया। उसने दोनों के सिर पर स्नेह का हा़थ फेर कर गरीब बालिका का दुःख दर्द पूछा। पता चला कि उसके पिता वीमार हैं, दोनों बच्चे तथा उनकी माँ उ़सी समय उस़ गरीव बालिका के घर गए और उसके बीमार पिता के इलाज की व्यवस्था की।

❑

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शान्ति कैसे मिले?

स्वामी विवेकानन्द के पास अनेक प्रकार के लोग समस्याओं के समाधान के लिए आते रहते थे। उन दिनों वे काशीपुर में स्वर्गीय शीलजी के मकान में ठहरे थे। एक युवक ने आकर उनसे जिज्ञासा प्रकट की कि वह अनेक स्थानों में गया, अनेक महापुरुषों से मिला, अनेक उपाय किए। परन्तु शान्ति नहीं मिली।

स्वामी जी ने उससे उसके कार्यों और अनेक लोगों की वताई हुई वातों पर प्रकाश डालने को कहा।

युवक ने कहा, "पंडित भवानीशंकर के उपदेश सुन कर मैंने मूर्ति पूजा की। एक अन्य महाशय के उपदेश पर मन को शून्य करने का प्रयास किया। घंटों एक कोठरी में वैठ कर ध्यान करता हूँ, परन्तु इन उपायों से मुझे शान्ति नहीं मिली।"

स्वामी जी ने स्नेह भरे स्वर में कहा, "सर्वप्रथम अपनी कोठरी का दरवाज़ा खुला रखो। अपने पास पड़ोस के अभावग्रस्त, दुःखी रोगी और भूखे लोगों का पता लगाओ और यथाशक्ति उनकी सेवा सहायता करो, जो अनपढ़ और अज्ञानी हैं उनको पढ़ाओ और समझाओ। तुम्हें अवश्य शान्ति मिलेगी।"

युवक ने शंका प्रकट की, "अगर किसी रोगी की सेवा करने से मैं स्वयं बीमार पड़ जाऊँ तो?"

विवेकानन्द वोले . "तुम्हारी इस आशंका से प्रतीत होता है कि तुम हर अच्छे कार्य में वुराई खोजते हो। इसी कारण तुम्हें शान्ति नहीं मिलती। शुभ कार्य में देरी न करो। और उसमें कमी मत खोजो। यही शन्ति का मार्ग है।"

□

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपनी मुक्ति नहीं चाहिए

प्रयाग में गङ्गातट पर एक महात्मा रहते थे। वे वयोवृद्ध थे। जव कभी महर्षि दयानन्द उन्हें मिलते तो वे महर्षि को "वच्चा" कहकर सम्वोधन करते थे। एक दिन उस वृद्ध सन्त ने महर्षि जी को कहा वच्चा, अगर आप पहले से ही निवृत्ति मार्ग पर स्थिर रहते और परोपकार के झगड़े में न पड़ते तो आपकी इसी जन्म में मुक्ति हो जाती। अव तो आपको एक और जन्म धारण करना होगा।

स्वामी जी ने कहा "महात्मन मुझे अपनी मुक्ति का कुछ भी ध्यान नहीं है, जिन लाखों मनुष्यों की मुक्ति की चिन्ता मुझे चलायमान कर रही है, उनकी मुक्ति हो जाये। मुझे क्यों न कई जन्म धारण करना पड़े। दुःखों के त्रास से दीन दशा से और दुर्वल अवस्था से परमपिता के पुत्रों को मुक्ति दिलाते-दिलाते मैं आप ही आप मुक्त हो जाऊँगा। □

लोगों को चाहिए कि इस जगत में मनुष्य का शरीर धारण कर, उत्तम शिक्षा, अच्छा स्वभाव, धर्म, योगाभ्यास और विज्ञान का सम्यक ग्रहण करके मुक्तिसुख का प्रयत्न करे - यही जीवन की सफलता है।

— स्वामी दयानन्द

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सेवाभावी सुभाष

नगर की गरीव वस्ती में हैज़ा का रोग खूब फैल रहा था। सुभाष ने अपने साथियों की एक टोली वनाई और वस्ती में जाकर लोगों की सेवा करने लगे। अपने पास से औपधि देते और कहानियाँ सुनाकर उन्हें प्रसन्न रखते। संसार में सभी प्रकार के लोग होते हैं। इस वस्ती में कुछ लोगों ने इनका विरोध किया और कहा कि ये धनी लोगों के वालक हमारा अपमान करने आते हैं। पर इन वालकों ने किसी वात की ओर ध्यान न दिया और सेवा करते रहे। इस वस्ती का सवसे वड़ा गुण्डा हैदर खाँ भी इनका विरोधी था। कई वार जेल जा चुका था।

प्रभु की लीला, इसका घर भी इस भयंकर रोग से न वच सका। इसने वहुत से हाथ पाँव मारे कि कोई डाक्टर या वैद्य मिल जाए, पर कोई प्रवन्ध न हुआ। अन्त में निराश होकर माथे पर हाथ धरकर भाग्य को कोसने लगा। इतने में देखता है कि उन्हीं सेवाव्रती वालकों का झुण्ड उसके टूटे-फूटे गन्दे मकान में घुसकर रोगियों की सेवा में जुट गया। मकान को साफ़ किया गया, रोगियों को औषधि दी गई और उनकी उचित सेवा की गई।

इन वालकों ने कई दिन तक उस परिवार की सेवा की और अन्त में प्रभु की कृपा से घर के सभी प्राणी निरोग हो गये। अव तो उस नामी गुण्डे की रुलाई आ गई और उसने हाथ जोड़कर उन वालकों से क्षमा माँगी और वोला— मैं कितना पापी हूँ, मैंने आपका जी भर कर विरोध किया, पर आपने उल्टा मेरे परिवार को जीवन दान दिया। उसका मुँह आँसुओं से भीग गया। यह देखकर उस दल के मुखिया सुभाष ने कहा—तुम इतने दुःखी क्यों होते हो, तुम्हारा

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

घर गन्दा होने से ही रोग घर में आ गया और इसी कारण यह कष्ट उठाना पड़ा।

हैदर खाँ बोले— नहीं, मेरा मन और घर दोनों गन्दे थे, आपकी सेवा ने दोनों का ही मैल साफ़ कर दिया। आपका यह उपकार मैं कभी नहीं भूल सकता। भगवान् आपका सदा भला करें।

❑

अगर ठीक मौके पर साधनों का ख्याल रखकर काम शुरू करो और समुचित साधनों का उपयोग में लाओ तो ऐसी कौन सी बात है जो असंभव हो?

— तिरुवल्लुवर

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गुप्त दान

कई वर्षों पहले की वात है। राजस्थान में भीषण अकाल पड़ा। गौओं की वड़ी दुर्दशा थी। उस समय गीता प्रैस की ओर से राजस्थान में स्थान-स्थान पर सहायता का काम हो रहा था। रतनगढ़ में भाई हनुमान प्रसादजी पोद्दार काम देख रहे थे। वे एक दिन दोपहर को अपनी वैंठक में अकेले डाक देख रहे थे कि वहीं के एक सज्जन, जो वहुत सम्पन्न थे, जिनका वंगाल में वड़ा कारोवार था, वड़े दानी थे, पर जो अपने लिये व्यय करने में वड़े ही अनुदार थे, घुटनों तक की धोती, एक कमरी तथा सिर पर पगड़ी, जाड़े में एक वीकानेरी कम्वल यही उनकी पोशाक थी। वे रिश्ते में भाईजी के मामा लगते थे—आये, भाईजी ने प्रणाम करके आने का कारण पूछा। उनके हाथ में एक कागज का छोटा सा पुलिन्दा था, उसे भाईजी कें हाथ में देते हुए वोले—'ले भैया! ये दस हजार रुपये कें नोट हैं। इस समय तू अकेला मिलेगा, इसी से दुपहरी में आया हूँ, इनको गायों की सेंवा में लगा देना। पर देखना, कहीं .... नाम न आने पाये। भगवान् की चीज़ भगवान् की सेवा में लगे, इसमें देने वाले किसी दूसरे का नाम क्यों आना चाहिए?' भाईजी ने मुस्कुराते हुए नोट ले लिये। वे जानते थे मामाजी की गुप्तदान क्रिया को। भाईजी ने पीछे वताया कि इस प्रकार प्रचुर धन का ये दान करते हैं। ज़गह जगह कुएँ, तालावों की मरम्मत कराते हैं, नये भी वनवाते हैं, पर इनके नाम की जानकारी केवल वहीं होती है, जहाँ विना नाम वताये काम चलता नहीं। आज के दान के नाम पर इन्वेस्टमेंट करने वाले और दान से पहले ही समाचार पत्रों में समाचार भेज देने वाले दानी महोदय इससे शिक्षा ग्रहण कर सकते हैं।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नेकी के लिये झूठ

अव्दाली से हुए युद्ध में मराठा सेनापति महादजी सिंधिया बुरी तरह घायल हो गये। घायल मराठा सेनापति को राणे नाम के एक भिश्ती ने अपने बैल पर लादा और युद्ध मैदान से दूर ले चला, तभी उन्हें घोड़ों के दौड़ने की आवाज़ सुनाई दी। राणे खान ने महादजी सिंधिया को पास के ही झुरमुट में छिपा दिया। थोड़ी ही देर में घुड़सवार सैनिकों ने राणे खान को घेर लिया और उससे मराठा सेनापति के विषय में पूछा। राणे खान ने मना कर दिया कि उसने महादजी सिंधिया को नहीं देखा। एक सैनिक ने राणे खान के गले पर तलवार लगाते हुए कहा, 'तू झूठ बोल रहा है, सही सही बता वरना तेरी गर्दन उड़ा दूँगा।' राणे खान ने आसमान की तरफ देखते हुए कहा, 'अल्लाह कसम, भाई, मैंने सेनापति को नहीं देखा।" सैनिक वहाँ से चले गये और राणे खान वापस झुरमुट में गया। महादजी सिंधिया ने राणे खान से पूछा, 'तुमने एक मुसलमान होते हुए अल्लाह की झूठी कसम क्यों खाई?' राणे खान ने कहा, 'महाराज, मेरे झूठ बोलने से आपकी जान बच गयी थी, अतः अल्लाह भी मुझे माफ़ कर देगा, क्योंकि नेकी के लिए झूठ बोला हूँ।'

□

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ऐसे थे रणजीत सिंह

पंजाव केसरी महाराजा रणजीत सिंह कहीं जा रहे थे। अकस्मात् एक ढेला आकर उनको लगा। महाराज को वड़ी तकलीफ हुई। साथी दौड़े और एक वुढ़िया को लाकर उनके सामने उपस्थित किया।

वुढ़िया भय के मारे काँप रही थी। उसने हाथ जोड़ कर कहा– "सरकार, मेरा वच्चा तीन दिनों से भूखा था, खाने को कुछ नहीं मिला। मैंने पके वेर को देखकर ढेला मारा था। ढेला लग जाता तो वेर टूट पड़ता और उसे खिलाकर मैं वच्चे के प्राण वचा सकती, पर संयोग से आप वीच में आ गये। ढेला आपको लग गया। मैं निर्दोप हूँ, सरकार। मैंने आपको ढेला नहीं मारा था। क्षमा कीजिए।'

वुढ़िया की वात सुनकर महाराजा रणजीत सिंह जी ने अपने आदमियों से कहा, 'वुढ़िया को एक हज़ार रुपये और-खाने का सामान देकर आदरपूर्वक घर भेज दो।" लोगों ने कहा, 'सरकार, यह क्या करते हैं इसने आपको ढेला मारा, इसे तो कठोर दण्ड मिलना चाहिए।'

रणजीत सिंह वोले, "भाई, जव विना प्राणों का तथा विना वुद्धि का वृक्ष ढेला मारने पर सुन्दर फल देता है, तव मैं प्राण तथा वुद्धिवाला होकर इसे दण्ड कैसे दे सकता हूँ।"

□

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तल्लीनता

वाचस्पति पण्डित द्वारा रचित 'ब्रह्मसूत्र' की टीका 'भामती' के विषय में माना जाता है कि बिना 'भामती' के 'ब्रह्मसूत्र' ठीक-ठीक समझा नहीं जा सकता। 'भामती' वाचस्पति पण्डित के सम्पूर्ण जीवन की साधना है। सब कुछ बिसार कर कैसे जीवन के दैनंदिन प्रयोजन सधते हैं, स्नान-ध्यान, भोजन-पान आदि की व्यवस्था कैसे हो पाती है, यह सब बिसार कर अध्ययन-मनन-लेखन करते।

पण्डित वाचस्पति ने जब 'भामती' टीका लिखकर एक प्रभात वेला में पूर्ण की, तो उन्हें होश आया। उन्होंने देखा कि वय: संपन्ना महिला दीप में उजाला रखने के लिए तेल डाल कर चली जा रही है। पण्डित ने विचारा संभवतः नित्य ऐसा होगा। कौन यह उपकारिणी नारी? पण्डित ने स्त्री से पूछा। उत्तर मिला—मैं आपकी परिणीता हूँ महाराज। पण्डित 'धक्' रह गये। हाँ, उनका विवाह तो हुआ था, एक स्वप्न जैसा व्यवहार। उनका अध्ययनोन्मुख मानस कभी पत्नी के विषय में कुछ सोच ही नहीं पाया। पत्नी क्यों होती है? विवाह क्यों? वंश बेल बढ़े। सन्तान हो। पर अब? अब तो उमरिया बीत गयी। बड़ा अपराध हुआ, वंश के प्रति, पत्नी के प्रति। पूछने पर पण्डित जी ने जाना कि पत्नी का नाम भामती है। जीवन की साधना को पण्डित ने नाम दिया 'भामती।' आज वे दोनो पति-पत्नी उसी से जाने जाते हैं। वही उनकी सन्तान है। □

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लघुता में प्रभुता मिले

सिखों के पांचवें गुरु अर्जुनदेव जी जव चौथे गुरु के अखाड़े में शामिल हुए तो उन्हें छोटे-छोटे काम करने को दिए गए, जिनमें झूठे वर्तन साफ़ करना भी शामिल था।

अर्जुनदेव जी को जो भी काम वताया जाता उसे वे वड़ी लगन से पूरा करते थे। छोटे से छोटा काम करने में भी उन्होंने कभी संकोच अनुभव नहीं किया। न इससे उनमें कभी हीन भावना ही पैदा हुई।

अन्य शिष्य सत्संग का आनन्द लेते थे, परन्तु वे आधी रात तक सभी छोटे-छोटे कार्यों को पूरा करके ही विश्राम करते थे।

अन्य लोगों में यह धारणा घर कर गई थी कि गुरु जी अर्जुनदेव को तुच्छ समझते हैं, परन्तु वे लोग यह नहीं जानते थे कि गुरु में आदमी की सच्ची परख है और वे मानव सेवा को सवसे अधिक महत्त्व देते हैं।

समाधि लेने से पूर्व गुरु जी ने काफ़ी सोच विचार के बाद अपने शिष्यों में से एक को उत्तराधिकारी चुन लिया और उसके नाम अधिकार पत्र लिख कर वक्स में वन्द कर दिया।

चौथे गुरु की मृत्यु के वाद वह अधिकार पत्र खोल कर देखा गया तो पता चला कि उन्होंने अपना उत्तराधिकारी अर्जुनदेव को वनाया था।

अन्य शिष्यों ने तभी सेवा के महत्त्व को समझा। पाँचवें गुरु अर्जुनदेव जी ने अपने गुरु की आशाओं के अनुरूप कार्य करके काफ़ी ख्याति अर्जित की।

□

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ऐसे थे महात्मा हंसराज

डी.ए.वी. कालेज के संस्थापक हँसराज का जन्म १९ अप्रैल १८६४ को होशियारपुर के निकट वैजवाड़ा कसवे में हुआ था। वालक हँसराज प्रतिदिन वैजवाड़े से होशियारपुर पढ़ने के लिए जाया करता था। वीच में रेतीला मैदान था, पर कोई छायादार वृक्ष नहीं था। दोपहर को छुट्टी होने पर चिलचिलाती धूप में घर जाना पड़ता। पाँव में जूते न होते। तपती रेत नन्हें वालक के कोमल पाँव जला डालती, तो वालक हँसराज तख्ती को पाँव तले रख कर खड़ा हो जाता। जलन कम होती तो फिर चल पड़ता।

वालक हँसराज पढ़ने में तो होशियार था ही, साथ ही सवका सरदार था। कुछ लड़कों की टोली वना कर वह उनका कप्तान वन जाता और खेल खेलता था। एक वार कसवे के वालकों की आपस में ठन गई। लड़कों के दो दल आमने-सामने डट गए। एक दल का कप्तान हँसराज था। लड़ाई छिड़ने को ही थी कि हँसराज ने कहा, "लड़ाई हाथों की नहीं होगी। जो दल अधिक 'शेर' सुनाएगा वही जीतेगा"। वस मार धाड़ की जगह शेरों का समां वन्ध गया।

वालक हँसराज तव प्राइमरी में ही पढ़ रहा था तो उसकी सास ने एक खत पढ़ने के लिए बुलाया। खत पढ़ लेने के बाद उसने कहा, "हँसराज, तू दूसरों के ख़त ही पढ़ा करता है, अपनी पढ़ाई की ओर ध्यान नहीं देता।" इस पर हंसराज ने उत्तर दिया, "माता जी जो कुछ पढ़ा है यदि वह दूसरों के काम न आया तो फिर पढ़ने का लाभ ही क्या?"

यही वालक वाद में शिक्षा-प्रसार व समाज सुधार का अग्रणी वन कर महात्मा हंसराज के नाम से प्रख्यात हुआ। □

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वास्तविक सुख की खोज

माँ और भाई बहन के संसार में वे सुखी थीं, वहीं स्कपजे के स्कूल में छात्र छात्राओं को कलकत्ता से भेजी गई जेसूस मिशनरियों की चिट्ठियाँ सुनाई जातीं। उन्हीं में थी टेरेसा नाम की एक किशोरी। उन चिट्ठियों ने उसके मन में उथल-पुथल मचा दी।

मात्र अठारह वर्ष की उम्र में कुमारी टेरेसा कलकत्ता आ गई और इंटाली के सेंट मेरी स्कूल में अध्यापन का कार्य करने लगीं। वहाँ वे अठारह वरस तक पढ़ाती रहीं।

लेकिन टेरेसा के मन में अशांति बनी रही। स्कूल की चार दीवारी के बाहर मोती झील बस्ती थी। इंटरवल में वे मोती झील बस्ती में चली जाती। कच्चे घरों के आंगन में बैठ कर लड़के लड़कियों के दुःख सुख की कहानियाँ सुनतीं। लौट कर आतीं तो दरिद्र माता पिता की अबोध सन्तानों की दीनता का चित्र उनकी आँखों के आगे मंडराता रहता। एक दिन पढ़ाई समाप्त होने पर उन्होंने छात्राओं को बुलाया और कहा, "तुम लोग रोज़ इंटरवल के लिए खाना लाया करती हो। सप्ताह में एक दिन का खाना क्या तुम सामने की बस्ती में रहने वाले लड़के लड़कियों को नहीं दे सकते?"

तबसे यह उनकी दिनचर्या बन गई। कुमारी टेरेसा के भीतर व बाहर एक उथल-पुथल मची रहती थी। अब ऐसा लगा कि जिस पथ की खोज थी वह मिल गया है। फिर वे रुक न सकीं। १० दिसम्बर १९४६ को उन्होंने निर्णय कर लिया कि शेष जीवन वह दुःखी, पीड़ित एवं उपेक्षित मानवता की सेवा में अर्पित कर देंगी।

पीड़ित दलित मानवता को, मदर टेरेसा के रूप में एक साक्षात देवी मिल गई। □

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ऐसे थे गुरु

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आत्मीयता इसका नाम है

स्वामी विवेकानन्द के पूर्वाश्रम का नाम नरेन्द्र था। वे कभी-कभी परमहँस रामकृष्ण देव के दर्शन के लिए दक्षिणेश्वर मन्दिरों में भी जाया करते थे। वे कहा करते थे कि वुढ़े संन्यासी के पास मैं उपदेश सुनने नहीं जाता हूँ, मुझे प्रेम की शक्ति उनके पास अपने आप खींच ले जाती है।'

अचानक नरेन्द्र के पिता का देहान्त हो गया। परिवार के भरण पोषण का भार उन्हीं के कन्धों पर आ पड़ा। आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं थी। नौकरी के लिए कलकत्ते की एक-एक गली छान डाली, भूखों मरने तक की नौवत आ गयी।

"नरेन्द्र के पिता का देहान्त हो गया है। आजकल इसकी दशा अच्छी नहीं है। घर पर लोग भूखों मर रहे हैं। भक्तों को चाहिए कि इसकी सहायता करें।" परमहँस देव ने अपने प्रेमियों को प्रोत्साहित किया। वे नरेन्द्र की दीन अवस्था से बहुत चिन्तित थे। रात-दिन सोचा करते थे कि किस प्रकार उनकी चिन्तां दूर हो। भक्त चले गये। मन्दिर में रह गये केवल नरेन्द्र।

'महाराज् आपने ऐसा क्यों कहा? न जाने ये लोग मेरे सम्बन्ध में कैसी धारणा बनायेंगे।' नरेन्द्र लज्ज़ा से नत थे।

'तुम यह क्या कहते हो, नरेन्द्र! प्यारे नरेन्द्र! मैं तुम्हारे लिए सब कुछ कर सकता हूँ। मैं तुम्हें सुखी रखने के लिए झोली लेकर गली-गली में और दरवाज़े पर भीख माँग सकता हूँ। उनके नेत्रों से अश्रु वरस पड़े। उन्होंने नरेन्द्र के कंधे पर अपना हाथ रखा। परमहँस रामकृष्ण के स्पर्श से वे धन्य हो गये।

□

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रभु से बड़ा कोई नहीं

स्वामी दयानन्द परहित में लगे रहे अपने यश या स्वार्थ से तो कोसों दूर थे। प्रभु पर अटल विश्वास था। एक दिन स्वामी दयानन्द जी लाहौर की आर्यसमाज के साप्ताहिक सत्संग में उस समय पधारे जव प्रार्थना और उपासना हो रही थी। गुरुदेव का अभ्युत्थानपूर्वक स्वागत किया गया। जव प्रार्थना समाप्त हो चुकी तो महाराज ने उपदेश दिया— "उपासना के समय उपासक जन ईश्वर के सत्संग में निमग्न होते हैं, उस प्रभु से महान् वस्तु कोई नहीं है। इसलिए उपासना काल में चाहे कितना वड़ा मनुष्य क्यों न आये, उठना नहीं चाहिए। ऐसे समय में किसी व्यक्ति के लिए अभ्युत्थान आदि आदर करना उपासना धर्म का निरादर है" सव सभासदों ने विनीत भाव से श्रीवचनों को स्वीकार किया।

स्वामी जी ने आगे कहा— "इसी तरह अभी आपने प्रस्ताव किया कि मुझे इस समाज का परमसहायक नियुक्त किया जाये।" यदि मुझे परम सहायक मानोगे तो उस परमपिता परमेश्वर को क्या कहोगे?

'परम सहायक तो वह जगदीश्वर ही है। हाँ यदि आप मेरा नाम लिखना ही चाहते हैं तो सहायकों की पंक्ति में लिख दीजिए।

□

CC-0 Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संन्यासी का हठ

वेदान्त के आदि गुरु शंकराचार्य का जन्म कोई ग्यारह सौ वर्ष पहले त्रावणकोर के एक मलयालम ब्राह्मण के घर हुआ था। बाल्यकाल में ही उन के पिता का देहान्त हो गया। उन्होंने अल्प आयु में ही वेद, उपनिषद्, दर्शन, इतिहास, व पुराणों का पूरा ज्ञान प्राप्त कर लिया। तत्पश्चात् किसी गुरु की खोज में वे घर छोड़ने को व्याकुल हो गए, परन्तु माँ के स्नेह के कारण रुक गए।

ज्ञान के खोजी महापुरुष भला किस से रूक सकते हैं। एक दिन पुनः उन्होंने संन्यास लेंने की अनुमति माँगी। माँ ने आँखों में आँसू भर कर कहा, "अगर मैं मर गई तो मेरा अंतिम संस्कार कौन करेगा?"

शंकराचार्य ने मां को वचन दिया कि वह जहाँ भी होंगे, माँ का अंतिम संस्कार करने अवश्य आएँगे।

मलयालम के ब्राह्मणों ने शंकराचार्य के इस कार्य का घोर विरोध किया। उन का क़थन था कि ब्रह्मचारी को संन्यास लेने का कोई अधिकार नहीं है। शंकराचार्य ने उन की एक न सुनी। इस कारण वे सभी उन से रुष्ट हो गए और उन्हें जाति बहिष्कृत कर दिया।

जब उन की माँ की मृत्यु हुई तो ब्राह्मण समाज का कोई भी व्यक्ति शव को श्मशान तक ले जाने नहीं आया। शंकराचार्य न तो झुके न धैर्य खोया और अंतिम संस्कार किया।

संकल्प के धनी इस महापुरुष ने अपने अगाध पाण्डित्य, अनवरत प्रयास व लगन से देश भर में घूम-घूम कर वेदान्त का प्रचार किया और चार धामों की स्थापना की। □

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मनुष्य के सामर्थ्य का उपयोग

कुरुक्षेत्र के सुविस्तृत मैदान में दूर-दूर तक महाभारत के युद्ध में मरे योद्धाओं की लाशें विछी पड़ी थीं। गिद्ध और कौए उन्हें नोंच-नोंच कर खा रहे थे। उस घमासान युद्ध के कारण सव कुछ कुचला ही कुचला पड़ा था।

शिष्यों समेत शमीक ऋषि उधर से निकले तो इस महानाश के वीच दो पक्षी-शावकों को एक गज घन्टा के पास चहचहाते देखा। शिष्यों के आश्चर्य का ठिकाना न रहा। उन्होंने महर्पि से पूछा— "भला, इस सव कुछ कुचल डालने वाले घमासान युद्ध में ये वच्चे कैसे वच गये?"

शमीक ने कहा — "शिष्यो! युद्ध के समय आकाश में उड़ती हुई चिड़िया को तीर लगने से वह भूमि पर गिर पड़ी और उसने दो अण्डे प्रसव किये। संयोगवश एक हाथी के गले का घण्टा टूट कर अण्डों पर गिरा, जिससे उनकी रक्षा हो गई। अव परिपक्व होकर ये वच्चों के रूप में घण्टे के नीचे की मिट्टी हटाकर वाहर निकले हैं, सो तुम इन्हें उठा लो और आश्रम में ले जाकर इनका पालन-पोपण करो।"

एक शिष्य ने पूछा — "जिस देव ने इन वच्चों की, ऐसी महासमर में रक्षा की, क्या वह इनका पोपण न करेगा?" महर्पि ने कहा — "प्रिय, जहाँ देव का काम समाप्त हो जाता है, वहाँ से मनुष्य का कार्य प्रारम्भ होता है। देव ने मनुष्य को दया और सामर्थ्य का वरदान इसलिए दिया है कि उसके द्वारा देव के छोड़े हुए शेप कार्य को पूरा किया जाए।"

□

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साधु और स्वाद

स्वामी स्वतन्त्रतानन्द जी सरस्वती आर्यसमाज के क्षेत्र में वीर और वीतराग संन्यासी थे। उनका जीवन अपने में उपदेश लिये होता था। एक वार किसी गाँव में उपदेश के लिए गये थे वहाँ के भक्त ने भोजन के लिए घर पर बुलाया। भोजन में अचार भी परोसा गया। स्वामी जी ने पहले दो तीन ग्रासों में अचार समाप्त कर दिया। भक्त ने देखा कि स्वामी जी को अचार पसन्द है तो तीन फाँक और रख दी तब उसको भी एक साथ खाकर वाकि हलुआ-शाक, खीर आदि सवको मिलाकर खाने लगे। भक्त ने स्वामी जी को सारे भोजन को वेस्वाद कर देने का कारण पूछा तो कहने लगे– "साधु को स्वाद नहीं, पेट भरना होता है। इससे अन्न के तथा अन्नदाता के प्रति आसक्ति नहीं पनपती।"

जिनको कुछ न चाहिये, वो ही शहन्शाह।
—रहीम

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बाँट कर खाने का चमत्कार

उस दिन ईसा शिष्य मण्डली समेत किसी प्रचार-यात्रा पर जा रहे थे। रात्रि हो गई। भोजन का सुयोग न बना। ईसा ने कहा– "तुम सब के पास जो है, इकट्ठा कर लो और उसी में मिल-बाँट कर काम चलाओ।"

पाँच रोटी इकट्ठी हुई। मिल-बाँट कर खाई गई। हिस्से में आधी-आधी भी न आई। तो भी सब का पेट भर गया। सोलोमन ने पूछा – "महाप्रभु! यह कैसा आश्चर्य? इतनी कम रोटियों में इतनी तृप्ति कैसे?"

ईसा ने कहा – "यह मिल-बाँट कर खाने का चमत्कार है।" यह कथा उन लोगों को सीख देती है, जो अकेले ही किसी वस्तु का उपभोग करने में सुख अनुभव करते हैं। □

इन्सान अगर लालच को ठुकरा दे तो बादशाह से भी ऊँचा दर्जा हासिल कर ले।

—शेखसादी

CC-0 Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भगवान बुद्ध के लिए अछूत कौन?

बुद्ध शिष्यों सहित सभा में विराजमान थे, उसी समय बाहर खड़ा कोई व्यक्ति ज़ोर से बोला — "आज मुझे सभा में बैठने की अनुमति क्यों नहीं दी गयी?"

बुद्ध नेत्र बन्द कर ध्यान-मग्न रहे। उस व्यक्ति ने फिर चिल्ला कर यही प्रश्न पूछा।

एक शिष्य ने कहा — "भगवन्, बाहर खड़े उस शिष्य को अन्दर आने की अनुमति दीजिए।"

बुद्ध नेत्र खोलकर बोले — "नहीं वह अस्पृश्य है।"

"अस्पृश्य।" शिष्यगण आश्चर्य में डूब गये। बुद्ध उनके मन का भाव समझते हुए बोले — "हाँ वह अस्पृश्य है।"

शिष्यों ने पूछा — "वह अस्पृश्य क्यों? कैसे? भगवन्, आपके धर्म में तो जात-पात का भेद नहीं?"

बुद्ध बोले — "आज यह क्रोध में आया है। क्रोध से जीवन की एकता भंग होती है। क्रोधी मानसिक हिंसा करता है। किसी भी कारण से क्रोध करने वाला अस्पृश्य है। उसे कुछ समय तक पृथक, एकान्त में खड़ा रहना चाहिए। पश्चाताप की अग्नि में तप कर वह स्मरण कर लेगा कि, अहिंसा महान कर्तव्य है, परम धर्म है।"

शिष्य समझ गये कि अस्पृश्यता क्या है? अछूत कौन है।

❑

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सहनशीलता का सुफल

भगवान बुद्ध कौशम्बी पहुँचे। वहाँ के धूर्तजनों ने मिलकर एक मँडली वनाई और तथागत का तिरस्कार करने की ठानी। उन्हें वहुत अपशव्द कहे और मारने पर उतारू हो गए।

आनन्द ने कहा — "अन्यत्र चलना चाहिए। यहाँ के लोग वड़े अभद्र हैं।"

तथागत ने पूछा, "यदि वहाँ भी ऐसा ही दुर्व्यवहार हुआ तो?" आनन्द वोले, "तव अन्यत्र चलेंगे।" प्रश्नोत्तर की यह श्रृंखला वहुत देर चलती रही और आनन्द अन्यत्र-अन्यत्र की रट लगाये रहे।

तथागत ने कहा — "यह उचित नहीं। वस्तुस्थिति विदित होने की परिस्थिति आने तक हमें यहीं ठहरना चाहिए। चल पड़ने पर लोग इन्हीं का कथन ठीक मानेंगे और हमारा साहस टूटेगा।"

नियत कार्यक्रम के अनुसार पड़ाव वहीं ड़ाला गया और आक्षेपकर्त्ताओं की हिम्मत टूट गई।

□

विद्वानों को चाहिये कि वह अपमान पाकर अमृत पीने की भाँति सन्तुष्ट हो क्योंकि अपमानित पुरुष तो सुख से सोता है—किन्तु अपमान करने वाले का नाश ही होता है।

—नीति सूत्र

CC-0 Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लोक कल्याणार्थ

स्वामी रामानुजाचार्य शठकोप स्वामी के शिष्य थे। दीक्षा देते समय गुरुजी ने उन्हें जीवोद्धार और ईश्वर-प्राप्ति का गूढ़ रहस्य वताकर कहा, "वेटा, इस रहस्य को गुप्त रखना।"

किन्तु रामानुजाचार्य गुरु के आदेश का पालन न कर सके। गुरुजी से उन्हें जो अमूल्य ज्ञानराशि मिली थी, उसे वह सवको बाँटने लगे।

शठकोप स्वामी को जव यह पता चला तो वह वड़े तिलमिलाए। उन्होंने तत्काल ही रामानुजाचार्य को बुलाया और गरजकर पूछा, "तुम मेरी आज्ञा का उल्लंघन कर धर्म के गोपनीय रहस्यों को प्रकाशित कर रहे हो, इसका परिणाम जानते हो?"

रामानुजाचार्य ने कहा, "जानता हूँ भगवन, गुरु की आज्ञा न मानने का दण्ड घोर नरक है।"

शठकोप स्वामी ने तीखे स्वर में पूछा, "फिर तुमने जान-वूझकर ऐसा पाप क्यों किया, जिसके लिए तुम्हें नरक भोगना पड़े?"

रामानुजाचार्य ने उत्तर दिया, "भगवन् परोपकार के समय मनुष्य को स्वार्थ का ध्यान कहाँ रहता है। मैंने जो कुछ किया है, लोक-कल्याण की दृष्टि से किया है। आपने मुझे जो अमूल्य ज्ञान दिया है, वह सवके लिए उपयोगी है। इसलिए मैंने उसको अपने पास छिपाकर रखना उचित नहीं समझा। यदि इसके लिए मुझे घोर नरक में जाना पड़ा तो भी मुझे प्रसन्नता होगी।"

शठकोप स्वामी रामनुजाचार्य के इस उत्तर से बहुत प्रसन्न हुए। उन्होंने न केवल रामानुजाचार्य को हर्षित हो गले लगा लिया, अपितु उन्हें ज्ञान के प्रचार के लिए उत्साहित भी किया। □

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सिकन्दर की आँख खुल गई

अरस्तु ने आखिर एक तरकीव ढूँढ ही ली। सबसे पहले उन्होंने यह पता लगाया कि सिकन्दर किस समय युवती के पास जाता है, कितनी देर रहता है और कव वहाँ से वापस लौटता है।

एक दिन सिकन्दर के पहुँचने से कुछ समय पहले ही अरस्तु उस युवती के पास जा पहुँचे। युवती उन्हें देखते ही पहचान गई। उसने कुटिलतापूर्वक हँसकर पूछा — "क्या आप मुझे भी पढ़ाने आये हैं?"

अरस्तु मुस्कराकर वोले — "नहीं, मैं पढ़ाने नहीं, वल्कि तुम्हारे साथ आनन्द लेने की इच्छा लेकर आया हूँ। इसके लिये मैं तुम्हें मुँहमाँगा शुल्क दूँगा।"

युवती ने कुछ सोचकर कहा — "ठीक है, मैं आज रात को आपकी इच्छा पूरी कर दूँगी, मगर आपको मेरी एक शर्त माननी पड़ेगी।"

"कैसी शर्त?" अरस्तु ने आश्चर्य से पूछा।

युवती वोली — "शर्त यह है कि आज दिन भर आप घोड़ा वने और मैं आपकी पीठ पर सवारी करूँ। इस खेल में मुझे वड़ा मज़ा आता है। कहिये, मँजूर है?"

अरस्तु ने शर्त मान ली। वे घोड़ा वने और युवती उनकी पीठ पर वैठ गई। अरस्तु घुटनों के वल उस कमरे में इधर-उधर चलने लगे। इसी वीच सिकन्दर आ पहुँचा। गुरु को वहाँ देखकर एक झट एक कोने में जा छिपा और आश्चर्य से वह विचित्र दृश्य देखने लगा।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

युवती रह–रहकर अरस्तु को घुड़सवार की तरह चावुक लगाती थी। सिकन्दर को वड़ा दुःख हुआ। वह दाँत पीसने लगा, किन्तु सामने आने का साहस नहीं जुटा पाया। अरस्तु को सिकन्दर के आने की आहट मिल चुकी थी। वे अचानक उठकर ख़ड़े हो गये। युवती एक ओर लुढ़क गई। उन्होंने कड़कती आवाज़ में कहा – "छिपकर क्यों खड़ा है, वाहर निकल आ मूर्ख! अव तू ही वता कि जो दुष्टा मेरे जैसे ज्ञानी की यह दुर्गति कर रही है, वह एक दिन तेरी क्या दशा वनायेगी?"

सिकन्दर की आँख खुल गई। वह सामने आकर, सिर झुकाकर अपराधी की भाँति खड़ा हो गया। उसने उसी समय पतन के रास्ते पर कभी पाँव न रखने की प्रतिज्ञा कर ली। एक दिन वह सिकन्दर महान वना।

□

जीवन भी एक तरह की गुदड़ी हैं। उसमें यथार्थ और अयथार्थ वास्तविक और काल्पनिक के जोड़ लगे रहते हैं।

—रवीन्द्रनाथ टैगोर

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मूल्यवान क्या है ?

किसी धनी भक्त ने एक वार स्वामी रामकृष्ण परमहँस को एक कीमती दुशाला भेंट किया। स्वामी जी ऐसी वस्तुओं के शौकीन नहीं थे, परन्तु भक्त के आग्रह पर उन्होंने स्वीकार कर लिया। उसे वे प्रायः साधारण कम्वल की भान्ति विछा लेते, कभी ओढ़ लेते।

दुशाले का यह दुरुपयोग एक सज्जन को वहुत बुरा लगा। उन्होंने स्वामी जी से कहा, "यह तो वड़ा मूल्यवान दुशाला है। इस का प्रयोग भी सावधानीपूर्वक करना चाहिए। इस प्रकार तो यह जल्दी ही फट जाएगा।"

परमहंस ने सहजभाव से उत्तर दिया, "जव सभी प्रकार की ममता छोड़ दी है तो दुशाले से कैसी ममता? क्या आप चाहते हैं कि मैं अपना मन भगवान् से हटा कर इस तुच्छ वस्तु की ओर लगाऊँ? किसी छोटी सी वस्तु के लिए एक वहुत वड़ी वस्तु गँवा देना कौन सी बुद्धिमानी है?"

यह कहकर उन्होंने दुशाले के एक कोने को तुरन्त आग से जला दिया और उन सज्जन से कहा, "लीजिए, अव न तो यह मूल्यवान रहा, न सुन्दर। अव कभी भी मेरे मन में इसे संभालने की चिन्ता पैदा नहीं होगी और मैं सारा ध्यान भगवान की ओर लगा सकूँगा।"

वे सज्जन निरुत्तर हो कर वापस चले गए। परमहँस ने भक्तों को समझाया कि साँसारिक वस्तुओं से ममता व मोह जितना कम हो, सुखी जीवन के उतना ही निकट पहुँचा जा सकता है। □

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जब आए संतोष धन . . .

आचार्य तुलसी के नेतृत्व में एक बार जैन धर्मावलम्बी तेरापन्थी साधु संघ उत्तराञ्चल में भ्रमण कर रहा था। प्रतिदिन पाँच से दस मील तक पैदल यात्रा की जाती थी।

एक दिन एक छोटे गाँव में ठहरने का निश्चय हुआ। गाँव की सीमा पर मुखिया मिला। उसने विनय की कि वे लोग अगले गाँव में चले जाएँ क्योंकि उसी दिन गाँव से एक अन्य सँत मण्डली की विदाई हुई थी जो एक सप्ताह तक वहाँ ठहरी थी।

उस की वात सुन कर आचार्य जी ने मुस्करा कर कहा, "हम लोग निश्चित दूरी तय करके ठहरते हैं। हम गांव के वाहर ही ठहर जाएंगे। आप चिन्ता न करें।"

आचार्य तुलसी के निश्चय को सुन कर मुखिया ने आग्रह किया कि वे गाँव में ही चलें। तत्पश्चात मुंखिया ने चारपाइंयों, विस्तरों व खाने-पीने की आवश्यकता के वारे में पूछा।

आचार्य जी ने उत्तर दिया, "हम लोग जैन सन्त हैं, चारपाई व विस्तरों का प्रयोग नहीं करते। जो खाना तैयार किया जाता है उसे भी हम नहीं लेते।"

इस पर मुखिया वोला, "आप लोगों के लिए दूध का प्रवन्ध कर देंगे।"

आचार्य जी ने कहा, "हम लोग रात में कुछ भी नहीं खाते। रात्रि को विश्राम करेंगे। सवेरा होते ही चल देंगे।"

वह रात उन्होंने विद्यालय के भवन में विताई और मंगली पाठ सुनाते हुए कहा, "हमें अपनी इच्छाएँ इतनी कम रखनी चाहिए कि उन्हें पूरा करने में किसी दूसरे को कष्ट न देना पड़े।" □

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विचित्र गुरु दक्षिणा

समर्थ गुरु रामदास का यश चारों तरफ़ फैला था। मराठा दरवार में उन की पूजा होती थी। स्वयं छत्रपति शिवाजी समर्थ गुरु को वहुत मानते थे।

एक दिन गुरु शिष्य मण्डली के साथ सतारा पहुँचे। खवर मिलते ही शिवाजी अगवानी के लिए नंगे पाँव दौड़े आए। उन्होंने श्रद्धा से गुरु को प्रणाम किया और भीतर चलने का आग्रह किया। गुरु ने कहा कि वे भिक्षा के लिए आए हैं और रुकेंगे नहीं।

थोड़ी देर वाद शिवाजी लौटे तो उन के हाथ में काग़ज का एक पुरज़ा था। उन्होंने वह पुरज़ा भिक्षा पात्र में डाल दिया। गुरु रामदास तथा उन के शिष्य चौंक पड़े। उन्होंने पुरज़ा पढ़ा तो लिखा था, "मैं संपूर्ण राज्य अपने गुरु रामदास को सौंपता हूँ।"

उसे पढ़ कर गुरु वोले, "शिवा तू ने यह क्या किया?"

शिवाज़ी ने कुछ उत्तर नहीं दिया। उन्हीं ने गुरु जी का भिक्षा पात्र लिया और स्वयं घर-घर जा कर भिक्षा माँगी। जो कुछ मिला, उसी का भोजन वना कर गुरु तथा शिष्यों को खिलाया।

शिवाजी क़ी गुरु भक्ति देखकर समर्थ रामदास गद्‌गद् हो गए। उन्होंने शिवाजी के सिर पर हाथ रखकर कहा, "शिवा, तू धन्य है। मैं तो साधु हूँ, तू अपना राज्य सँभाल। जनता की सेवा कर। प्रभु तेरी कामना पूरी करेंगे।" इतना कह कर गुरु अपनी शिष्य मंडली सहित चल पड़े।

□

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अहँकारी शिष्य और गुरु की महानता

मध्यकालीन भारत में वैजूवावरा नाम के एक सिद्ध गायक तथा संगीताचार्य थे। वे एक कुटिया में रह कर जिज्ञासु शिष्यों को संगीत की शिक्षा देते थे।

उनका एक प्रतिभाशाली शिष्य गोपाल नायक जब विदा होने लगा तो गुरु ने कहा, "वेटा गोपाल, मैंने तुम्हें जो अमूल्य निधि सौंपी है उस की रक्षा करना, उसका सदुपयोग करना और उसके द्वारा लोक को सुखी वनाना।"

अपनी प्रतिभा तथा संगीत निपुणता के कारण गोपाल नायक शीघ्र ही ख्याति के शिखर पर पहुँच गया और दिल्ली दरवार का प्रधान गायक बन गया।

राज दरवार में सम्मान प्राप्त होने पर गोपाल में अहंकार आ गया और वह अन्य गायकों को नीचा दिखाने लगा। वह उन्हें मुकावले के लिए मजबूर करता और शर्त रखता कि हारने वाले का सिर कटवा दिया जाएगा।

जब सैंकड़ों संगीतज्ञों की विधवा पत्नियों तथा अनाथ बच्चों की चीत्कार वैजूवावरा तक पहुँची तो वे विचलित हो उठे और अपने शिष्य को समझाने दिल्ली पहुँचे।

लेकिन मद में चूर गोपाल नायक ने गुरु को पहचानने से भी इन्कार कर दिया। और तो और, उसने गुरु को भी दूसरे दिन दरवार में प्रतियोगिता के लिए ललकारा।

कुछ सोच कर महान संगीत गुरु बैजूबावरा ने शिष्य की चुनौती स्वीकार कर ली।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अगले दिन गुरु और शिष्य की अनोखी संगीत प्रतियोगिता शुरू हुई। संगीत का ऐसा समा वन्ध गया कि श्रोतागण मुग्ध हो गये। परंतु संगीत के लिए समूचा जीवन अर्पित कर देने वाले गुरु को वह अहँकारी शिष्य भला कैसे हरा सकता था। गोपाल नायक हार गया और शर्त के अनुसार वह मृत्युदण्ड का पात्र बना।

विजयी वैजूवावरा से जब इच्छानुसार पुरस्कार मांगने को कहा गया तो उस उदार हृदय गुरु ने कहा कि उन के पराजित शिष्य को जीवन-दान दिया जाए। इस के अतिरिक्त उन्होंने कुछ भी नहीं माँगा।

□

हम दुष्टता का वदला दुष्टता से न दें, दुष्टता का वदला भलाई से दें—यही देवत्व है।

—महात्मा गांधी

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नरेन से विवेकानन्द

वाल्यावस्था से ही नरेन एक चञ्चल प्रकृति के विनोदप्रिय वालक थे, पर आध्यात्मिक विपयों के प्रति उनका अद्भुत आकर्पण था। राम-सीता, शिव आदि देव-विग्रहों पर ध्यान केन्द्रित करने का खेल वे प्रायः खेला करते थे। माँ द्वारा सुनाई गई रामायण और महाभारत की कहानियों ने उन पर अमिट छाप डाली थी।

सन् १८८१ ई० के लगभग नरेन (नरेन्द्रनाथ दत्त) महान साधक श्री रामकृष्ण के पास पहुँचे। उन्होंने पूछा – "महाशय! क्या आपने ईश्वर को देखा है?" श्री रामकृष्ण का स्पष्ट उत्तर था – "हाँ, देखा है जिस प्रकार तुम्हें देख रहा हूँ, ठीक उसी प्रकार, वल्कि उससे कहीं अधिक स्पष्टता से।"

नरेन को लगा कि एक व्यक्ति तो ऐसा है, जो स्वयं की अनुभूति से ईश्वर के अस्तित्व का विश्वास उन्हें दिला सकता है। उनका संशय दूर हुआ और वहीं से शुरू हुई उनके ह्वद्रय-परिवर्तन की प्रक्रिया। एक ओर श्री रामकृष्ण ने नरेन की वहुत प्रकार से परीक्षा ली तो दूसरी ओर नरेन ने भी श्री रामकृष्ण की परीक्षा कर, उनके द्वारा प्रतिपादित आध्यात्मिक सत्यों की पूरी जाँच कर ली। सन् १८८४ ई० में पिता की मृत्यु के पश्चात् नरेन के परिवार को अत्याधिक अभाव तथा संकटों का सामना करना पड़ा। उन्होंने गुरु के निर्देशानुसार माँ काली से संकट-निवारणार्थ प्रार्थना करने का भी प्रयत्न किया। यद्यपि उन्हें धन की आवश्यकता थी, फिर भी वे केवल भक्ति और ज्ञान के लिए ही प्रार्थना कर पाये।

क्रमशः नरेन्द्रनाथ गुरु के प्रति पूर्ण शरणागत हुए। श्री रामकृष्ण ने धैर्यपूर्वक अपने दुर्दमनीय युवा शिष्य को स्थिरता प्रदान की और

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उसे सन्देह के कुहासे से निकाल कर, निश्चित लक्ष्य की ओर तथा गहन व्यथा से सच्चिदानन्द की ओर उन्मुख किया। श्री रामकृष्ण के आध्यात्मिक पथ-प्रदर्शन से अधिक उनके असीम प्रेम ने नरेन का हृदय जीता। वदले में नरेन ने भी सम्पूर्ण हृदय से उनके प्रति समर्पण कर दिया। नरेन के हृदय-परिवर्तन ने उन्हें 'स्वामी विवेकानन्द' वना दिया। उनके आध्यात्मिक ज्ञान के प्रखर तेज से सारा विश्व प्रकाशित हो उठा।

❑

मन को निर्मल रखना ही धर्म है, धर्म से जो कुछ मिले वही वास्तव में सुख है। संसार में धर्म के अनुरूप जीवन चलाने वाला मनुष्य ही देवता है।

—रामकृष्ण परमहंस

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आत्मा की ज्योति

उपनिषद् में एक कथा आती है। महर्षि याज्ञवल्क्य के पास महाराजा जनक बैठे थे। बोले–महर्षि, मेरे मन में एक शंका है। हम जो कुछ देखते हैं, वह उसकी ज्योति से देखते हैं?'

महर्षि ने कहा, 'यह क्या बच्चों वाली बात कहते हैं आप? प्रत्येक व्यक्ति जानता है कि हम जो कुछ देखते हैं, वह सूर्य की ज्योति के कारण देखते हैं।' जनक बोले, "सूर्य अस्त हो जाता है, तब हम किस प्रकाश से देखते हैं?" महर्षि बोले, 'चन्द्रमा के प्रकाश से।'

जनक ने कहा, "जब चन्द्रमा भी न हो, नक्षत्र भी न हों, अमावस के बादलों से भरी अन्धेरी रात हो, तब?' महर्षि ने कहा, 'तब हम शब्दों की ज्योति से देखते हैं। विशाल वन है। चहुँ ओर अँधेरा है। पथिक मार्ग भूल गया है। वह आवाज देता है – 'मुझे मार्ग दिखाओ।' तब दूसरा व्यक्ति दूर खड़ा हुआ उस शब्द को सुनकर कहता है– 'इधर आओ, मैं मार्ग पर खड़ा हूँ।' और वह व्यक्ति शब्द के प्रकाश से मार्ग पर पहुँच जाता है।"

जनक ने पूछा, 'महर्षि, और जब शब्द भी न हो, तब हम किस ज्योति से देखते हैं?'

महर्षि बोले, 'तब हम आत्मा की ज्योति से देखते हैं। आत्मा की ज्योति से ही सारे कार्य होते हैं।'

□

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परिस्थिति और प्रकृति

मार्ग में चलते-चलते बुद्ध थक गये थे। वे एक पेड़ के नीचे बैठ गये और आनन्द से बोले – 'वत्स, सामने वाले झरने से पानी ले आओ।'

आनन्द जब पहुँचा तो उसी समय एक बैलगाड़ी पानी में से होकर निकली। पानी गँदला हो गया। ऐसा गँदला पानी देखकर उसने अन्यत्र से पानी ले जाना उचित समझा। अतः आनन्द बुद्ध को बताकर पानी की खोज में कहीं और जाने लगा।

बुद्ध ने कहा – 'उतावली नहीं करो। झरने से ही पानी ले आओ।'

जब वह दुबारा वहाँ पहुँचा, तब तक गदला पानी बह चुका था। आनन्द ने प्रसन्नतापूर्वक कमण्डल भरा और पानी ले आया।

तथागत ने कहा – "आनन्द, प्रकृति को देखो, परिस्थिति को नहीं। परिस्थिति बदल जाती है, किन्तु प्रकृति स्थिर रहती है। इसी तरह यदि श्रेष्ठता, सुसंस्कारित है, सद्‌गुणों का समुच्चय है, तो बहिरंग में दृश्यमान मलिनता सामयिक है। प्रकृति निश्चित रूप से प्रबल है। वह ज़ोर मारेगी और श्रेष्ठता स्वतः स्फूर्त उभर कर आ जायेगी।"

❑

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जैसी दृष्टि, वैसी सृष्टि

दुर्योधन और युधिष्ठर दोनों के गुरु द्रोणाचार्य थे। जब उनकी शिक्षा पूरी हो गयी तो सभी परीक्षाओं के वाद गुरु ने उनके चरित्र विकास की स्थिति के आकलन के लिए एक अलग से परीक्षा ली, गुरु द्रोणाचार्य ने दुर्योधन को पहले अपने पास वुलाया और कहा, 'जाओ, एक अच्छे व्यक्ति को तलाश कर मेरे पास लाओ।' दुर्योधन ने गुरुदेव से शिकायत की— "आपने किस काम में लगा दिया, दुनियाँ में कोई भला आदमी भी हो सकता है? मैं सवेरे से शाम तक भटकता रहा, मुझे तो एक भी भला आदमी नजर नहीं आया, जिसे आपके पास लाता।"

गुरुदेव ने युधिष्ठिर की तरफ दृष्टिपात किया क्योंकि वे भी खाली हाथ लौटे थे। युधिष्ठिर ने कहा— 'गुरुदेव, मैंने लोगों से वुरे व्यक्ति के वारे में पूछताछ की, मुझे लोगों ने कई नाम वताए जिन्हें वुरा आदमी कहा जा सकता है। लेकिन जव मैं उनसे मिला तो मुझे आभास हुआ कि उनमें तो तमाम गुण मौजूद हैं। मुझे ऐसा कोई व्यक्ति नहीं मिला जो संपूर्ण रूप से वुरा हो, इसलिए गुरुदेव, मैं किसी को भी आपके पास लाने में असमर्थ रहा।"

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पवित्र झूठ

ईश्वरचन्द्र विद्यासागर एक करुणामय और परोपकारी व्यक्ति थे। एक वार उन्हें पता चला कि जयराज नामक दानवीर, परोपकारी, दयालु, सज्जन की मृत्यु हो गयी और उसकी स्त्री के पास दाह संस्कार हेतु पैसे तक नहीं है।

विद्यासागर जयराज को जानते तक नहीं थे। वस पूछताछ करके उसके घर पहुँच गये। जयराज के मृत शरीर के पास रोती-विलखती महिला को ढाढ़स वँधाते हुए विद्यासागर ने कहा, 'भाभी, जय वावू से मैंने कुछ दिन पूर्व कर्ज़ लिया था, मैं कुछ रुपये लेकर आ ही रहा था कि यह दुःखद समाचार मिला। कृपा करके ये रुपये लीजिए, 'वाकी मैं धीरे-धीरे चुका दूँगा।' जयराज की विधवा ने सधन्यवाद वह राशि ले ली।

भविष्य में भी विद्यासागर जयराज के परिवार के लिए कुछ रुपये भेजते रहे। कुछ वर्षों के वाद जयराज की विधवा को वास्तविकता का पता चला तो वह उनके पैरों पर गिरकर रोने लगी और कहा, "आप हमारे लिये इतना वड़ा झूठ वोले, हम इसको कैसे चुका पायेंगे।" विद्यासागर वोले, 'यदि झूठ पवित्र हो तो वोलने में कोई संकोच नहीं करना चाहिए। ऐसे थे ईश्वरचन्द्र जो जीवन में पहली वार झूठ वोले - सिर्फ इंसानियत के लिए।'

□

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शिक्षा का मार्ग

एक बार महान गणितज्ञ यूक्लिड, सिकंदरिया के राजा टालेमी को गणित की शिक्षा दे रहे थे। पर राजा टालेमी को कुछ समझ में नहीं आ रहा था। झुँझलाहट में ही कुछ सोचकर टालेमी पूछ बैठा – "गणित को समझने के लिए क्या कोई सरल और सुविधाजनक मार्ग नहीं है?"

उत्तर स्वरूप, यूक्लिड ने अत्यंत गम्भीर स्वर में कहा – 'इसमें कोई संशय नहीं कि राजा–महाराजाओं के लिए अतीव सुन्दर राजमार्ग होते हैं, लेकिन शिक्षा के लिए तो सबको एक ही मार्ग से गुज़रना पड़ता है और वह मार्ग – एकाग्रता का अभ्यास का मार्ग है।'

आगे चलकर टालेमी भी, अपने गुरु की भाँति ही, गणित का प्रकाण्ड विद्वान् बना।

□

जीवन में कोई स्थिति ऐसी खराब नहीं कि उसका सुधार न हो सके।

—स्वामी रामतीर्थ

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सेवा में पवित्रता

सेवा मनुष्य का अन्तःकरण, शरीर के अंग-प्रत्यंग और सम्पूर्ण जीवन को पवित्र कर देती है। जिनके हाथ दूसरों की सेवा में तल्लीन रहते हैं, वे जिस वस्तु को छू देते हैं, वह पवित्र हो जाती है। सेवा में श्रद्धा रखनेवाला ईश्वर की कृपा सहज ही प्राप्त कर लेता है।

एक सुन्दर प्रसंग है। सिखों के दसवें गुरु गोविन्द सिंह जी आनन्दपुर में एक दिन धार्मिक प्रवचन कर रहे थे। भक्तजनों को उनकी अमृतवाणी पुलकित कर रही थी। कुछ समय तक उपदेश देने के वाद गुरु जी को कुछ थकावट अनुभव हुई। उन्होंने जल पीने की इच्छा प्रकट की। कई भक्त एक साथ उठ खड़े हुए। गुरु जी ने कहा – "जिसके हाथ पवित्र हों, वही आधा लोटा जल लाकर दे।"

वहाँ उपस्थित लोगों में एक धनी व्यक्ति भी वैठा था। उसने गुरु जी के भक्तों से कहा – "आप लोग तो दिन रात गुरु जी की सेवा में रहते हैं। इस सेवा का अवसर मुझे दें।" धनी व्यक्ति ने अनुमति पाकर वर्तन में जल लिया और लाकर गुरु जी के हाथों में थमा दिया। वर्तन पकड़ते समय गुरु जी के हाथों को उस व्यक्ति के कोमल हाथों का स्पर्श मिला। वे गम्भीर हो गये।

उन्होंने धनी व्यक्ति से पूछा – "क्या तुम कोई काम नहीं करते? इतने कोमल हाथ तो उसी के हो सकते हैं जो आरामतलव या दूसरों की सेवा पर आश्रित हो।"

धनी व्यक्ति ने झेंपते हुए कहा – "महाराज! आपने ठीक ही समझा है। मेरे घर में वहुत से नौकर-चाकर हैं। वे सारा काम कर

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देते हैं। मुझे अपने हाथ से कोई काम करने का अवसर ही नहीं मिलता है।"

गुरुजी ने जल का वर्तन नीचे रखते हुए, उस धनी व्यक्ति से कहा — "तुम्हारा हाथ अपवित्र है। तुमने दूसरों से सेवा कराई है, स्वयं किसी की सेवा नहीं की। ऐसे हाथों से दिया हुआ जल मैं कैसे पी सकता हूँ जो सेवा से पवित्र न हुए हों।"

धनी व्यक्ति के हृदय पर इस वात का वड़ा गहरा प्रभाव पड़ा। वह न केवल स्वावलम्वी वन गया, वल्कि उसने दूसरों की सेवा करना अपने जीवन का लक्ष्य भी वना लिया।

□

उस आदमी को सेवा के लिये चुनना चाहिये जिसमें दया और वुद्धि होने के साथ निराभिमानी हो

—तिरुवल्लुवर

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भूखे का उपदेश

एक वार गौतम वुद्ध कहीं ठहरे हुए थे। उनके शिष्य इधर-उधर जाते थे और उनके उपदेश लोगों को सुनाते थे।

एक दिन एक शिष्य कहीं गया। वहाँ उसे एक आदमी मिला। उसे उसने अपने स्वामी का उपदेश सुनाया, लेकिन उसने सुना ही नहीं। शिष्य ने उसे और विस्तार से समझाया, फिर भी उस पर कोई असर न हुआ। अन्त में निराश होकर शिष्य वुद्ध के पास लौट आया। वोला, "भन्ते, अव तक मुझे जितने लोग मिले हैं, सवने आपका उपदेश वड़े ध्यान से सुना है, लेकिन आज एक आदमी ऐसा मिला, जिसने आपकी वात पर ध्यान ही नहीं दिया।"

वुद्ध ने कहा, "अच्छा, कल मैं वहाँ चलूँगा।"

अगले दिन वुद्ध वहाँ गये। देखा, वह आदमी बुरी हालत में है। कई दिन का भूखा है।

वुद्ध ने शिष्य से कहा, "जाओ, इसके लिए कहीं से वढ़िया भोजन लाओ।"

थोड़ी देर में शिष्य खाना लेकर वहाँ आया। वुद्ध ने वड़े प्यार से उस आदमी को भोजन कराया। जव वह भोजन कर चुका तो उन्होंने शिष्य से कहा, "अव चलें।"

दोनों वहाँ से चल दिये। रास्ते में शिष्य ने पूछा, "महाराज, आप तो इसे उपदेश देने आये थे। आपने इसे खाना खिलाया, पर उपदेश कुछ भी नहीं दिया!"

वुद्ध ने कहा, "वत्स, भूखे को सवसे वड़ा उपदेश उसका भोजन है। आज का इसका उपदेश यही था।" □

CC-0 Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दयालु हृदय

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सिद्धार्थ की करुणा

कपिलवस्तु के राजकुमार सिद्धार्थ एक दिन राजकीय उद्यान में टहल रहे थे। टहलते हुए उनकी दृष्टि आकाश में उड़ते हुए राजहँसों पर जा टिकी। पंक्तिवद्ध होकर उड़ते हुए वे श्वेत पक्षी एक मनोरम दृश्य उपस्थित कर रहे थे। अचानक एक बाणविद्ध राजहँस सिद्धार्थ के निकट आ गिरा। असह्य पीड़ा से वह छटपटा रहा था। सिद्धार्थ का मन करुणा से भर गया उन्होंने उसे उठाकर अपनी गोद में लिया और धीरे-धीरे धँसा हुआ वांण खींचकर वाहर निकाला। उन्होंने वाण की नोक को अपनी कलाई में चुभा कर पहली बार उस पीड़ा की तीक्षणता अनुभव की।

कुमार सिद्धार्थ ने हंस के घाव धोये, उसके घाव पर पत्तियों का रस निचोड़ा और उसे गोद में लेकर प्यार से सहलाने लगे। इतने में दूर से कुमार देवदत्त का स्वर सुनाई पड़ा – "मेरा हँस यहाँ गिरा है क्या?" राजकुमार देवदत्त सिद्धार्थ के चचेरे भाई थे। वे बड़े कठोर स्वभाव के थे। शिकार करने में उन्हें आनन्द आता था।

देवदत्त ने हँस का शिकार किया था। उसने हँस लेना चाहा, किन्तु सिद्धार्थ उस आहत पक्षी को किसी भी तरह देने के लिये तैयार नहीं हुए। अन्त में राजा शुद्धोधन के दरबार में हँस के वास्तविक अधिकार के मामले को ले जाया गया।

महाराज ने दोनों राजकुमारों की बातें सुनीं। उन्होंने पूछा – "तुम हँस को मार सकते हो?"

देवदत्त ने कहा – "आप उसे मुझे दीजिये, मैं अभी उसे मार देता हूँ।"

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महाराज ने पूछा – "तुम फिर उसे जीवित भी कर दोगे ?"

देवदत्त ने कहा – "मरा प्राणी कहीं फिर जीवित होता है क्या?"

महाराज ने कहा – "शिकार का यह नियम ठीक है कि जो जिस पशु–पक्षी को मारे उस पर उसी का अधिकार होता है। यदि हँस मर गया होता तो उस पर तुम्हारा अधिकार होता, लेकिन मरते प्राणी को जो जीवन–दान दे, उसका उस प्राणी पर उससे अधिक अधिकार है, जिसने कि उसे मारना चाहा हो। सिद्धार्थ ने हँस को मरने से वचाया है। अतः हँस सिद्धार्थ का है।"

कुमार सिद्धार्थ हँस को ले गये। जव हंस का घाव अच्छा हो गया, तव उसे उन्होंने उड़ा दिया। तदनन्तर राजकुमार सिद्धार्थ तप साधना करते हुए भगवान बुद्ध कहलाये। ☐

अच्छे काम करने के लिये किसी बड़े मौके की बाट मत देखो वल्कि छोटे मौकों से भी लाभ उठाओ।

—टिशर

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अहिंसा की विजय

यहाँ अहिँसा के प्रसंग में हम उस घटना को उद्धृत करते हैं, जिसे स्वामी श्रद्धानन्द जी ने अपनी जीवनी 'कल्याणमार्ग का पथिक' में स्वयं लिखा है। घटना उन्हीं के शब्दों में निम्न रूप में है —

"मैं वतला चुका हूँ कि मैं विचित्र नास्तिक था जो योगाभ्यास और उसकी विभूतियों पर विश्वास करनेवाला था और साथ ही हठप्रक्रियाओं का प्रयोग भी करता था।"

मैंने सुना कि त्रिवेणी पार झूसी के जंगल में एक महात्मा रहते हैं, जिनके वश में एक शेर है। दिन को अन्तर्धान रहते हैं, केवल रात को उनके दर्शन हो सकते हैं। मैं अपने मित्र वुद्धसेन तिवारी के साथ, जिनको मेरी संगत ने ही योग की ओर झुकाया थां, सिदौसी भोजन से निवृत्त होकर शाम को पार उतर गया। घूमते हुए दस वजे आश्रम के समीप पहुँचे। एक वृद्ध केवल कौपीनधारी महात्मा को समाधिस्थ मैदान में बैठा देखा। तीन बजे तक न उनकी समाधि खुली और न हमारी आँख झपकीं। तीन बजे के लगभग शेर की गर्जना सुनाई दी, फिर वह सीधा महात्मा की ओर आता दिखाई दिया। समीप पहुँचने पर उनके पैर चाटने लगा। महात्मा ने आँखें खोलीं, शेर के सिर पर प्यार का हाथ फेरा और कहा — वच्चा ! आ गया? अच्छा अब चला जा! शेर ने सिर चरणों में रख दिया, और उठकर जँगल की राह ली। उसी समय हम दोनों ने पैर छूकर महात्मा को प्रणाम किया और इस अद्वितीय विभूति पर आश्चर्य प्रकट किया। महात्मा का उत्तर कभी नहीं भूलता — यह कोई विभूति नहीं है, वच्चा! इस शेर के किसी शिकारी ने गोली मारी थी। इसके पैर में ऐसा घाव लगा कि यह चल नहीं सकता था

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और व्याकुलता से हृदयवेधक शब्द कर रहा था। शायद प्यासा था। मैंने पानी लाकर पिलाया और जँगल से जानी हुई अपनी एक बूटी लाया और रगड़कर इसके पैर में लगाई। घाव अच्छा होने लगा। जव तक मैं दवाई लगाता रहता, यह नित्य मेरे पैर चाटता रहता। जव सर्वथा नीरोग हो गया, तव भी इसका व्यसन नहीं छूटा, नित्य मेरी उपासना की समाप्ति पर आ जाता है! सुनो वच्चा! 'अहिंसा का अभ्यास और सेवा व्यर्थ नहीं जाते'। हम पर जो प्रभाव पड़ा, वर्णन नहीं किया जा सकता।"

❑

सज्जन पुरुष का जीवन में अथवा मृत्यु के पश्चात् कोई अनिष्ट नहीं हो सकता।

—सुकरात

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शत्रु भक्त बना

एक दिन प्रातः काल स्वामी दयानन्द भ्रमण करने जा रहे थे कि मार्ग में उन्हें एक हट्टा-कट्टा उज्ञड प्रकृति का मनुष्य मिला। उसने उन्हें अनेक दुर्वचन कहने आरम्भ किये कि तू ईसाइयों का नौकर है, और हिन्दुओं को ईसाई वनाने आया है। महाराज उसके दुर्वाक्य सुनकर मुस्कराते हुए आगे वढ़ गये। उसका नाम सिद्ध था सिद्ध था तो व्राह्मण, परन्तु निरक्षर और लट्ठ था। स्वामी जी को चुप देखकर उसका साहस और वढ़ गया और स्वामी जी के डेरे पर जाकर गालियाँ देने लगा। स्वामी जी ने अत्यन्त प्रेम भरे स्वर और कोमल शव्दों में उसका स्वागत किया और वैठने को कहा इस शिष्टाचार से उसका कठोर हृदय भी पिघल गया और रोकर उसका जी भर आया, वह महाराज के चरणों में गिर गया और अपने अपराध की क्षमा माँगने लगा। महाराज ने उसे सान्त्वना देते हुए कहा कि तुम्हारे दुर्वचन हम तक नहीं पहुँचे, वह आकाश से प्रकट हुए थे और विलीन हो गये, तुम शोक मत करो। □

दूसरों का क्या स्वभाव है उस पर न जाकर हमें अपना नेक स्वभाव नहीं छोड़ना चाहिए।

—शेखसादी

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बुराई के बदले भलाई

आर्यसमाज के प्रवर्तक स्वामी दयानन्द ने देश भर में भ्रमण कर के दया, सहनशीलता एवं सद्‌कर्म का उपदेश दिया। अपने आलोचकों और विरोधियों के प्रति भी उन के मन में कभी कोई दुर्भावना उत्पन्न नहीं हुई।

एक वार स्वामी दयानन्द कानपुर में गङ्गा किनारे निवास कर रहे थे। एक तथाकथित गङ्गा भक्त प्रतिदिन आ कर स्वामी जी को गालियाँ दे जाता था। वह वीस दिन तक यही करता रहा, परंतु स्वामी जी ने उसे कभी कुछ नहीं कहा। भक्तों को भी मना कर दिया कि उसे कुछ न कहें।

महर्षि दयानन्द के भक्त उपदेश सुनने आते थे। साथ में फल और मिठाई भी लाते थे। महर्षि उन्हें भक्त जनों में ही बाँट देते।

एक दिन शाम को काफ़ी मिठाई वच गई थी। कुछ देर में गङ्गा भक्त रोज़ की तरह गालियाँ देता हुआ उधर से गुज़रा तो स्वामी जी ने वची मिठाई उसे दे दी और कहा, "तुम प्रति दिन यहां आकर मिठाई और फल ले जाया करो।"

सात दिन तक लगातार गङ्गा भक्त गाली देता आता और मिठाइयाँ प्राप्त करके चला जाता।

स्वामी जी वड़े प्रेम से उसे मिठाई देते। उन्होंने कभी उससे गाली के संवंध में कोई चर्चा नहीं की।

आठवें दिन वह गङ्गा भक्त स्वामी जी के चरणों पर गिर पड़ा और अपनी करनी के लिए क्षमा याचना करने लगा। स्वामी जी ने उसे प्रेम से उठाया और कहा कि वह पिछली वातों को भूल जाए। वह व्यक्ति स्वामी जी का अनन्य भक्त वन गया। □

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उदारता का अनुपम रूप

कलकत्ता नगरी में एक आदमी घूमने निकला। रास्ते में उस ने एक बूढ़े को चिन्ता में मग्न सिर झुकाए देखा तो हमदर्दी से पूछा, "भाई, तुम्हें क्या दुःख है?"

बूढ़े ने अनजान व्यक्ति को अपना दुखड़ा सुनाना उचित न समझ कर टालने की कोशिश की।

परन्तु आगन्तुक ने और भी अधिक सहानुभूति जताते हुए पूछा, "शायद मैं आप की कुछ मदद कर सकूँ।"

बूढ़ा कुछ आश्वस्त हो कर बोला, "मैं एक ग़रीब ब्राह्मण हूँ। बेटी के विवाह के लिए एक महाजन से क़र्ज़ ले लिया था। परंतु उसे लाख कोशिश कर के भी नहीं चुका सका। अब उस ने मुकदमा दायर कर दिया है। समझ में नहीं आता कि क्या करूँ।"

उस व्यक्ति ने ग़रीब ब्राह्मण से पूरा विवरण प्राप्त किया। जिस में मुकदमें की अगली तारीख तथा अदालत का नाम भी शामिल था।

मुकदमें की निश्चित तारीख पर वह ब्राह्मण घबराया हुआ अदालत में पहुँचा और एक कोने में बैठ कर अपने नाम की पुकार का प्रतीक्षा करने लगा। जब पुकार नहीं हुई तो वह और चिंतित हुआ। घबरा कर अदालत के अहलकारों से पूछताछ की, पता चला कि किसी ने उसके कर्ज़ की पूरी रकम जमा करवा दी है और मुकदमा खारिज हो गया है। उसने पता लगाया कि उसका कर्ज़ उतारने वाले धर्मात्मा पुरुष वही थे जो एक दिन सड़क के किनारे उससे दुःखी होने का कारण पूछ रहे थे।

वे थे बंगाल के महान समाज सुधारक तथा परोपकारी ईश्वरचन्द्र विद्यासागर। □

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रेम अचूक औषधि

महापुरुषों ने वुरे व्यक्तियों से कभी घृणा नहीं की। उन्होंने अपने व्यक्तित्व और पवित्र विचारों से उनका हृदय-परिवर्तन कर दिया और वे क्या से क्या हो गये। तिरस्कार, उपेक्षा और घृणा से वुराई में लिप्त लोगों के मन में क्षोभ और प्रतिशोध की भावना जन्म लेती है। वे हठी और स्वेच्छाचारी वन जाते हैं।

एक वार महात्मा ईसा को किसी दुराचारी व्यक्ति ने शिष्य मण्डली सहित भोजन का निमन्त्रण दिया। उन्होंने प्रेमपूर्वक वह निमन्त्रण स्वीकार कर लिया।

दुराचारी व्यक्ति जिस गाँव में रहता था, वहाँ के सारे लोग उससे घृणा करते थे। उससे दूर रहने में ही सव अपनी भलाई समझते थे। गाँववालों क़ो मालूम था कि उस भोज में कुख्यात व्यक्तियों की भारी भीड़ जमा होगी, इसीलिए ईसा का वहाँ जाना किसी को भी अच्छा नहीं लगा।

सारे गाँव में कानाफूसी होने लगी। ईसा को सव ईश्वर का दूत मानते थे। उनके लिए सवके मन में गहरी श्रद्धा थी। सवको यही आश्चर्य था कि महात्मा ईसा ने एक दुष्ट व्यक्ति के घर भोजन करना कैसे स्वीकार कर लिया?

एक वूढ़े व्यक्ति ने गाँव वालों को सलाह दी कि सव ईसा के पास चलें और उनसे अपने मन की वात साफ़-साफ़ कह दें। सवको यह सलाह पसन्द आई।

गाँव वालों का दल जव महात्मा ईसा के पास पहुँचा तो वे भोजन में जाने की तैयारी कर रहे थे। वूढ़े व्यक्ति की वात उन्होंने

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ध्यान से सुनी। सब सुनकर उन्होंने मुस्करा कर पूछा — "बाबा! चिकित्सक स्वस्थ मनुष्य के घर जाता है या रोगी के? मैं भी एक रोगी के पास जा रहा हूँ। उसे घृणा का विष नहीं, प्रेम की अचूक औषधि चाहिये। बुरे व्यक्ति को अच्छा बनाना हो तो उसके साथ प्रेमपूर्ण व्यवहार करो, उसके सम्पर्क में आओ, तभी वह तुम्हारी बातों का सम्मान करेगा। उसके दुर्गुणों से अवश्य बचना चाहिये, किन्तु उससे घृणा करके, उसका हृदय नहीं बदला जा सकता।"

❑

जो दूसरों की भलाई करना चाहता है उसने करने से पूर्व ही अपना भला कर लिया।

—कन्फ्यूशियस

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सच्चा राजा कौन?

बंगाल में गुष्करा एक छोटा-सा स्टेशन है। एक दिन रेलगाड़ी आकर स्टेशन पर खड़ी हुई। उतरनेवाले झटपट उतरने लगे और चढ़नेवाले दौड़-दौड़कर गाड़ी में चढ़ने लगे। एक बुढ़िया भी गाड़ी से उतरी। उसने अपनी गठरी खिसकाकर डिब्बे के दरवाज़े पर तो कर ली थी; किंतु बहुत चेष्टा करके भी उतार नहीं पायी थी। कई लोग गठरी को लाँघते हुए डिब्बे में चढ़े और डिब्बे से उतरे। बुढ़िया ने कई लोगों से बड़ी दीनता से प्रार्थना की कि उसकी गठरी उसके सिर पर उठाकर रख दें; किंतु किसी ने उसकी बात पर ध्यान नहीं दिया। लोग ऐसे चले जाते थे, मानो बहरे हों। गाड़ी छूटने का समय हो गया। बेचारी बुढ़िया इधर-उधर बड़ी व्याकुलता से देखने लगी। उसकी आँखों से टप-टप आँसू गिरने लगे।

एकाएक प्रथम श्रेणी के डिब्बे में बैठे एक सज्जन की दृष्टि इस बुढ़िया पर पड़ी। गाड़ी छूटने की घण्टी बज चुकी थी; किंतु उन्होंने उसकी परवाह नहीं की। अपने डिब्बे से वे शीघ्रता से उतरे और बुढ़िया की गठरी उठाकर उन्होंने उसके सिर पर रख दी। वहाँ से बड़ी शीघ्रता से अपने डिब्बे में जाकर जैसे ही वे बैठे, गाड़ी चल पड़ी। बुढ़िया सिर पर गठरी लिये उन्हें आशीर्वाद दे रही थी — 'बेटा! भगवान तेरा भला करे।'

क्या आप जानते हैं कि बुढ़िया की गठरी उठा देने वाले सज्जन कौन थे? वे थे क़ासिम बाज़ार के राजा मणीन्द्रचन्द्र नन्दी, जो उस गाड़ी से कलकत्ता जा रहे थे। सचमुच वे राजा थे, क्योंकि सच्चा राजा वह नहीं है जो धनी है या बड़ी सेना रखता है। सच्चा राजा वह है, जिसका हृदय उदार है, जो दीन-दुःखियों और दुर्बलों की सहायता कर सकता है। □

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सद्व्यवहार का प्रताप

एक दिन बादशाह सुबुक्तगीन शिकार के लिये गये। उन्हें शिकार का बड़ा शौक था। बहुत देर तक तलाश करने पर भी कहीं मारने योग्य जानवर न मिला, मन भारी था और आँखें चारों ओर शिकार की तलाश में लगी हुई थी।

थोड़ी देर बाद क्या देखा कि एक हिरनी अपने बच्चे के साथ बेखटके चर रही है। हिंसा-दया में बदल गयी। उन्होंने सोचा कि मारने से यह अच्छा होगा कि हिरनी के सुन्दर बच्चे को पकड़ लिया जाय।

वे दूर उतरे, धीरे-धीरे समीप गये और दाँव ताककर बच्चे को पकड़ लिया। वे बेहद प्रसन्न थे। बच्चे के पाँव बाँधकर घोड़े पर आगे काठी पर रख लिया और अपनी राजधानी की ओर चल पड़े। बेचारी हिरनी में आखिर माँ का भावुक हृदय था। अपनी सन्तान के लिये वह विह्वल थी। अपने प्राणों की परवाह न कर वह भी उसके पीछे-पीछे चली। अपने प्यारे बच्चे के वियोग में हिरनी के नेत्रों में आँसू बह रहे थे। सुबुक्तगीन आखिर मनुष्य ही तो था। हिरनी की कातर अवस्था देखकर उसे भी दया आ गयी। उसने घोड़ा रोका और बच्चे की टाँगें खोलकर छोड़ दिया। बच्चा छलाँग मारकर माँ के पास आ गया।

हिरनी को तो मानों नया संसार ही मिल गया। बच्चे को प्यार से चाटने लगी। वह बहुत प्रसन्न हुई और उछलती-कूदती अपने बच्चे के साथ वन में लौट गयी। पर लौटते समय जब तक सुबुक्तगीन आँखों से ओझल नहीं हुआ, तब तक वह उसकी ओर

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कृतज्ञाता और प्रेम से देखती रही। यह था उसके सद्व्यवहार का प्रताप।

उसी दिन रात को सुबुक्तगीन ने एक स्वप्न देखा। स्वप्न में पैगम्बर साहब ने उससे कहा, 'सुबुक्तगीन! आज तुमने जो सद्व्यवहार एक पशु से किया है, ईश्वर उससे बहुत प्रसन्न हुए हैं। तुम जीवन में बहुत उन्नति करोगे।'

सच है, सद्व्यवहार चाहे मनुष्य के प्रति किया जाए अथवा पशु-पक्षी के साथ, वह कभी व्यर्थ नहीं जात। सदा फलवान् होता है।

❑

पीड़ा की मौन भाषा आँसू है।

—शेक्सपीयर

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जीना इसी को कहते हैं

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महान क्रांतिकारी का मानवीय पहलू

चन्द्रशेखर आज़ाद को पकड़ने के लिए अंग्रेज़ी हुकूमत ने पाँच हजार रुपये का इनाम घोषित कर दिया। उन दिनों यह राशि खासी रकम मानी जाती थी। एक बार आज़ाद ने छुपते हुए एक वृद्धा के घर पर दस्तक दी तो आज़ाद का नाम सुनते ही वृद्धा ने द्वार खोल दिया। वृद्धा ने खुशी से आज़ाद को गले लगा लिया। रात भर घर में पनाह दी और फ़तह का आशीर्वाद दिया।

आज़ाद को जब यह पता चला कि वृद्धा दहेज न जुटा पाने के कारण अपनी पुत्री के हाथ पीले नहीं कर सकी तो उन्होंने वृद्धा से कहा "अम्मा सरकार ने मेरी गिरफ्तारी के लिए पाँच हजार रुपयों का इनाम रखा है। आप मुझे पकड़वाकर इनाम की राशि ले लें ताकि इस बहन की शादी हो जाये।" यह सुनते ही वृद्धा ने कहा, मैं पाँच हजार तो क्या पाँच लाख रुपये के लिए भी ऐसी गद्दारी नहीं कर सकूँगी। रात गुज़र जाने के बाद आज़ाद ग़दारद हो गये आज़ाद वहाँ बहुत से रुपयों के साथ वृद्धा को संबोधित कर एक पत्र छोड़ गये जिसमें उन्होंने लिखा था "चुपचाप चल देने की गुस्ताख़ी के लिए माफ़ी चाहता हूँ। आपने मेरा प्रस्ताव मँज़ूर नहीं किया आपकी मर्ज़ी। पर अब आपकी नहीं, आपके बेटे की मर्ज़ी चलेगी।

इस पत्र के साथ छोड़े रुपयों से जितनी जल्दी हो सके मेरी बहन की शादी कर देना। चाहता तो मैं भी था कि मैं उस मौके पर बहन के पास रहूँ पर अम्मा एक फ़रार भाई अपनी बहन के लिए और कर भी क्या सकता है। ब्रिटिश हुकूमत की नाक में दम करने वाले इस महान क्रांतिकारी का मानवीय पहलू इतना कोमल था। □

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मन को अवकाश नहीं

महर्षि दयानन्द जी महाराज का जीवन इसका एक ज्वलन्त उदाहरण है। संसार की किसी वस्तु का आकर्षण लेशमात्र भी उनमें नहीं था। धन-धान्य से सम्पन्न गृह को, वैवाहिक साज-सज्जा को तृणवत् त्यागकर घर से निकल भागे। घोर कष्ट सहकर निरन्तर लक्ष्य की ओर बढ़ते रहे। बड़े से बड़े भय, महान् से महान् प्रलोभन, रञ्चमात्र भी उन्हें विचलित नहीं कर सके। वे तप और संयम के मूर्तरूप थे। लम्बे समय तक वस्त्रों के नाम पर केवल कौपीन धारण करते थे। स्नान के समय दूर जंगल में जाकर नदी में नहाते थे और जब तक कौपीन सूखती थी, पानी में आसन लगाए बैठे रहते थे। ब्रह्मचर्य के विषय में बंगाल के उस समय के नेता अश्विनीकुमार दत्त ने पूछा, 'महाराज! काम-विकार मन में उत्पन्न हो और विचार-शक्ति से मनुष्य उसे शान्त कर दें, यह तो समझ में आता है, किन्तु मैं तो आपसे जानना चाहता हूँ कि कभी आपके मन में यह विकार भी उत्पन्न हुआ है कि नहीं?' इस प्रश्न को सुनकर थोड़ी देर आत्म-निरीक्षण करके ऋषि ने उत्तर दिया – 'मेरे सामने इतने महान् कार्य हैं कि उनके चिन्तन से ही मन को अवकाश नहीं है।'

'संसार में मदोन्मत्त हाथी के मस्तक को दलन करने वाले वीर हैं; कोई-कोई भयंकर सिंहों को भी मार गिराने में कुशल होते हैं, किन्तु उन वीर-शिरोमणियों को साहसपूर्वक ललकारकर कहता हूँ कि काम का मर्दन करनेवाले वीर संसार में विरले ही होते हैं।' उन विरलों के भी शिरोमणि ऋषिवर हैं। दिव्यशक्ति ऐसे महापुरुषों में ही सञ्चित होती है।

□

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ईमान कुर्बान नहीं हो सकता

जहाँगीर के न्याय की वातें वड़ी प्रेरक हैं। एक वार वादशाह के साले ने कहीं गड़वड़ की। न्याय के अनुसार उसे कड़े दण्ड की सज़ा दी गई।

साले ने अपनी वहिन वेगम नूरजहाँ से फरियाद की। नूरजहाँ ने वादशाह से उसे माफ करने को कहा। परन्तु वादशाह नहीं माना। तव वेगम ने नाराज़गी प्रकट करते हुए कहा — नूर के इशारे पर तो आप जान कुर्वान करने की दुहाई देते हैं क्या मेरा इतना भी मनचाहा नहीं कर सकते।"

वादशाह ने उत्तर दिया — "मैंने जान वेची है, प्रिये पर मेरा ईमान कुर्वान नहीं हो सकता।

नूरजहाँ ने अपनी गलती स्वीकार की।

हमारा ध्येय सत्य होना चाहिये न कि सुख।
—सुकरात

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सादगी का जीवन

आज दुर्भाग्य यह है कि देश में उच्चपदासीन व्यक्तियों के जीवन में से सादगी मिट गई है। कहाँ है आज सरदार पटेल की-सी सादगी? सरदार पटेल की पुत्री मणिबेन ने अपने पिता की सेवा के विचार से संसार के सब सुखों को ठुकरा दिया। पिता के लिए भोजन बनाना, धोती-कुर्त्ता आदि के लिए सूत कातना, अन्य भी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए जुटे रहना और इसी में परम सन्तोष और प्रसन्नता अनुभव करना—यह था दृश्य स्वाधीन भारत के गृहमन्त्री के गृह का। मणिबेन अपने हाथ के कते सूत से पिता के वस्त्र तैयार कराती थीं और उनकी आवश्यकता-पूर्ति के बाद जो बचता था, उसमें अपने वस्त्रों का निर्वाह करती थीं। अतः सदा उनके पास वस्त्रों की कमी ही रहती थी। अपनी जीर्ण साड़ियों की मरम्मत कर-करके काम में लाती थीं।

स्व० श्री महावीर त्यागी किसी काम से सरदार पटेल को मिलने गए। उनके सत्कार के लिए मणिबेन कुछ खाने-पीने को लाईं। मणिबेन की धोती शिर पर फटी थी। यह देखकर श्री त्यागी ने, जैसाकि उनका विनोदी स्वभाव था, मणिबेन को कहा कि — "तुझे देखके कौन भारत के गृहमन्त्री की लड़की कहेगा? सड़क के किनारे पर बैठ जावे तो लोग भिखारिन समझकर पैसे फैंकने शुरू कर देंगे।" सरदार पटेल ने हँसते हुए कहा—"त्यागी कह तो ठीक ही रहा है। लगती तो मणिबेन ऐसी ही है।" मणिबेन ने कहा—"सब ठीक है, पिताजी की आवश्यकता-निवृत्ति के बाद जो सूत बचता है, मुझे निर्वाह तो उसी से करना है।

इस दृश्य को देखकर और उच्च आदर्श की बात को सुनकर किसके मन में सादा जीवन के लिए आदर के भाव उत्पन्न न होंगे?

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुराने कोट में फोर्ड

हेनरी फोर्ड का कोट बहुत पुराना होकर फटने लगा था उनके निजी सचिव ने उनसे आदर सहित कहा –

"साहब! आपका कोट काफ़ी पुराना हो गया है। इसे छुट्टी देकर एक नया कोट सिलवा लीजिये।"

फोर्ड मुस्कराये। बोले – "नये कोट की क्या ज़रूरत है? इसी की मरम्मत करवा लेंगे!"

सचिव को कहना पड़ा – "सर! आप बहुत बड़े आदमी हैं। लोग आपको ऐसे कोट में देखकर क्या कहते होंगे?"

"ऊँह; कहेंगे क्या? अमरीका में सभी तो जानते हैं कि मैं हेनरी हूँ।"

सचिव को और अधिक तर्क देना बुरा लगा। वह चुप हो गया और मौके की खोज में लगा रहा।

कुछ दिनों में वह अवसर भी आ गया। फोर्ड को इंगलैंड जाना था। अवसर पाकर उस सचिव ने निवेदन किया–

"साहब! अमेरिका में तो आपको सब लोग जानते हैं; पर अब आप विदेश यात्रा पर जा रहे हैं, सो आपको यह पुराना कोट अब अवश्य बदल लेना चाहिए।"

"ओह! बदलने की क्या ज़रूरत है? विदेश में भला मुझे कौन उतना जानता है कि मैं फोर्ड हूँ?"

हेनरी फोर्ड के उत्तर से उनकी मितव्ययिता का पता चलता है। ☐

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राजेन्द्र बाबू की टोपी संन्यासी के चरणों में

न्यायधीश ने जेल अधिकारियों को फटकारते हुए कहा, जब मेरे आने की पूर्व सूचना थी तो वन्दी को अभी तक उपस्थित क्यों नहीं किया जा सका? समय बीतता जा रहा था। इस संभ्रांत वन्दी का मुकदमा जेल में ही सुनने के लिए उक्त अंग्रेज न्यायाधीश को जेल परिसर में ही नियुक्त किया गया था। वन्दी थे ज्योतिर्मठ के जगतगुरु शंकराचार्य। जेल अधिकारी परेशान थे। वे पूजा में समाधिस्थ वैठे शंकराचार्य जी को उठाकर तो ला नहीं सकते थे? ठीक है अव मैं जाता हूँ। ध्यान रहे, ठीक ३ वजे सायँकाल वन्दी को अवश्य उपस्थित किया जाय।" न्यायधीश क्रोध से कांपते हुए चले गये। जगतगुरु शंकराचार्य के एक भापण से क्षुब्ध अंग्रेज़ी सरकार ने उन पर राजद्रोह का मुकदमा दायर किया था। सायँकाल निर्धारित समय पर शंकराचार्य जी अपनी गरीमामय चाल से आ रहे थे। घड़ी की सुइयाँ आगे वढ़तीं जा रहीं थीं प्रत्येक क्षण न्यायाधीश का क्रोधोन्मत्त वना रहा था। निरीक्षक एवं अधिकारी भी सहमे हुए थे। कि न जाने यह क्रुद्ध न्यायाधीश शंकराचार्य जी का क्या अपमान कर वैठे कैसी कठोर सज़ा उन्हें दे वैठे। शंकराचार्य समस्त हिन्दुओं के पूज्य थे अतः चिन्ता स्वाभाविक थी। राजेन्द्र बाबू विशेष रूप से इस अवसर पर उपस्थित थे वे परेशान थे कि "मेरे सम्मुख यह कैसा धर्म-संकट आया है। मेरे ही सम्मुख हिन्दुओं के परमपूज्य जगतगुरु शंकराचार्य का अपमान हो गया तो कितनी ग्लानि की वात होगी।" एक क्षण उन्होंने कुछ सोचा और जैसे ही शंकराचार्य जी ने न्यायाधीश के कक्ष में प्रथम पग रखा कि राजेन्द्र वावू ने अपनी टोपी उतार कर शंकराचार्य जी के चरणों में रख दी और

CC-0 Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साष्टांग प्रणाम की मुद्रा में उनके चरण पकड़ कर लेट गये। इस आकस्मिक घटना से सभी स्तब्ध रह गये। देश के महत्वपूर्ण राजनीतिक नेता के रूप में ख्याति प्राप्त राजेन्द्र बाबू को इस प्रकार जगदगुरु के चरणों में गिरते देख वातावरण बदल गया। सभी उपस्थित लोगों ने आदरपूर्वक झुक कर जगद्गुरु का अभिवादन किया। न्यायाधीश भी इस भारतीय संन्यासी के प्रति जानमानस की ऐसी श्रद्धा देखकर अभिभूत हो उठा और उसका सारा क्रोध समाप्त हो गया राजेन्द्र बाबू ने अपनी आत्मकथा में लिखा है कि जगद्गुरु का मेरे सम्मुख कहीं अपमान न हो जाए इसलिए उसी क्षण एकाएक मुझे यह उपाय सूझा और अपनी तथा हिन्दू समाज की समस्त श्रद्धा समेट कर मैं सार्वजनिक रूप से उनके चरणों में लिपट गया। राजेन्द्र बाबू की यह सूझ-बूझ एकाकी नहीं थी। उनके रोम-रोम में भारतीय संस्कृति की मर्यादायें मुखरित थीं।

□

समय आते ही सब काम अपने आप हो जाते हैं, बिना घबराये कर्म करते रहें।

—श्री रविशंकर

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जापानी कर्मचारी — नहीं चाहिएँ छुट्टियाँ

एक अमरीकी फर्म ने जापान में अपना कारोबार प्रारम्भ किया। कार्यालय में उसने जापानियों को ही नियुक्त किया। साधारणतः अमरीका में कार्यालय कार्य के पाँच ही दिन रहते हैं और शनिवार तथा रविवार की छुट्टी रहती है।

इस फर्म ने जापान में भी छुट्टियों के इसी नियम को अपनाया; परन्तु जापानी कर्मचारियों ने इसका विरोध किया। पाँच दिनों का सप्ताह उनको अमान्य था।

अधिक अवकाश और छुट्टियों का विरोध करते हुए जापानी कर्मचारियों ने कहा —

'हम लोगों को सप्ताह में बस एक ही दिन की छुट्टी काफ़ी है। अधिक छुट्टी होने से हमें हानी होगी। हम आलसी बन जायेंगे। उससे भी अधिक नुकसान तो यह होगा कि छुट्टी में हम कर्मचारी गण मौज–मज़ा और ऐश–आराम के फलस्वरूप अपव्यय भी अधिक करेंगे। जो छुट्टी हम लोगों पर आर्थिक बोझ बढ़ा कर आलसी और काहिल बनावे, हमें नहीं चाहिए।'

□

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ब्रह्मचर्य का मार्ग जन साधारण के लिए बड़ा कण्टीला

स्वामी स्वतंत्रतानन्द जी महाराज जहाँ बहुत वड़े विद्वान् और उपदेशक थे वहाँ साथ ही युनानी और आयुर्वेद के ज्ञाता थे। एक वार पंजाव के एक गाँव में पहुँच गये और गाँव के एक गुरुद्वारे में ठहर गये। गाँव के लोग प्रवचन सुनने आने लगे। किसी रोगी को जड़ी वूटी का इलाज वता देते। गर्मी के दिन थे। दोपहर के समय स्वामी जी अकेले में थे एक महिला औषधि पूछने के वहाने उनके पास आ पहुँची। स्वामी जी ने ऊंचे स्वर में कहा माता! तू इस समय यहाँ अकेली क्यों आई है? तुरंत लौट जा। कोई औषधी नहीं मिलेगी। उसी दिन से स्वामी जी ने ईलाज करना छोड़ दिया एवं उस गाँव को छोड़कर अन्यत्र चले गये महिला ने स्पष्ट स्वीकार कर लिया कि वह वासना के वशीभूत होकर स्वामी जी पर आसक्त होकर उनके पास पहुँची थी।

जिससे सहस्रों लोगों का उपकार होना था उस सेवा को छोड़ देना पड़ा केवल अपने व्रह्मचर्य व्रत के पालन हेतु। जन साधारण के लिए व्रह्मचर्य का मार्ग वड़ा कण्टीला है। परन्तु सच्चे सन्यासी अखण्ड व्रह्मचर्य के बल पर ही हो पाते हैं।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जामा मस्जिद पर वेद मन्त्रों की गूँज

अंग्रेज़ी शासन के विरुद्ध स्वामी श्रद्धानन्द ने लोगों का नेतृत्व किया। पुलिस और फौज़ की गोलियों ने जिन लोगों को घायल अथवा शहीद किया, उनमें हिन्दू भी थे और मुसलमान भी। आन्दोलन के दूसरे दिन हिन्दू मुसलमानों का भेद मिटाकर शहीदों का जनाजा निकाला गया। जिसमें श्रद्धानन्द और हकीम अजमलखाँ भी साथ साथ जा रहे थे। दोपहर बाद नमाज के पीछे जामा मस्जिद में मुसलमानों का एक विशाल जलसा हो रहा था। और उसमें मुस्लिम नेताओं ने आवाज़ देकर कहा "स्वामी श्रद्धानन्द जी की भी तकरीर होनी चाहिए। दूसरे जन समूह ने इसका समर्थन किया। दो-तीन जोशीले-मुसलमान नौजवान नये बाज़ार से स्वामी जी को ले आये। "अल्लाह हो अकबर के नारे के साथ स्वामी जी मस्जिद की प्राचीर पर आरुढ़ हुए। स्वामी जी ने ऋग्वेद के एक मन्त्र से अपना व्याख्यान आरम्भ किया और ओ३म् शान्तिः शान्तिः के साथ समाप्त किया। शायद यह भारत के ही नहीं इस्लाम के इतिहास में पहला अवसर था कि एक हिन्दू ने जामा मस्जिद के प्राचीर से भाषण किया और वेद मन्त्रों से पूरे वातावरण को गुंजायमान कर दिया। □

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सेवा के लिए दिन रात काम

तीन-चार दिन से वालक सुभाष घर नहीं लौटा था। माता का रोते-रोते बुरा हाल हो गया था। सुभाष को ढूंढने के लिए चारों ओर व्यक्तियों को दौड़ाया गया, पर उसका कोई पता न चला। एक दिन वालक सुभाष ने चुपचाप पीछे से आकर अपनी माता की आँखें मूँद ली। माता ने अपने बेटे का स्पर्श पहचान लिया और पूछा — "इतने दिन कहाँ रहा वेटा? "सुभाष ने मुस्कराते हुए उत्तर दिया "पास के गाँव में हैज़ा फैला था, लोग धड़ाधड़ मर रहे थे। इतने दिन उन बीमारों की सेवा में ही लगा रहा था।

अपने साथियों की टोली वनाकर सुभाष दिनरात एक करके गाँव वालों की सेवा में लगा रहा। औषधियाँ ला लाकर बाँटते रहे। कुछ दिनों के वाद हालत में सुधार होने के बाद ही वापिस घर लौटा।

एक समय ऐसा भी आया कि अपनी जननी के मोह को त्यागकर जन्मभूमि की सेवा में ऐसा निकला कि वापिस घर नहीं लौटा।

□

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चाणक्य की घासफूस की कुटिया

मगध के प्रधान अमात्य महर्षि चाणक्य की विद्वत्ता कूट-नीतिज्ञता एवं अन्य गुणों से प्रभावित होकर यूनान का एक राजदूत उनके दर्शन करने आया।

यूनानी राजदूत ने एक व्यक्ति से पूछा पूछा — 'महाशय, इस विस्तृत देश के प्रधान अमात्य श्री चाणक्यजी का निवास-स्थान कहाँ है?'

उस व्यक्ति ने घास-फूँस की एक कुटिया की ओर संकेत कर दिया। राजदूत को महान आश्चर्य हुआ कि इतने महान राष्ट्र का प्रधान अमात्य एक साधारण सी कुटिया में। आश्चर्य!!

राजदूत ने भी गंङ्गा में स्नान किया और कुटिया में पहुँच कर देखा कि वहाँ थोड़े बर्तन रखे थे। पास में एक चारपाई और मोटे-मोटे ग्रन्थों का छोटा सा संग्रह था।

राजदूत ने पूछा — 'महाराज! महर्षि चाणक्य के दर्शन कहाँ हो सकते हैं?'

'स्वागत है आपका!' विनम्रता पूर्वक आचार्य चाणक्य ने उत्तर दिया— 'मुझे ही चाणक्य कहते हैं। कहिये, क्या सेवा करूँ?'

राजदूत तो जैसे स्तब्ध रह गया। वह एक आसन पर बैठा। उनसे वहुत से विषयों पर वार्तालाप किया।

अपने देश यूनान लौटकर उसने बताया —

"'जिस देश का प्रधान अमात्य चाणक्य की तरह देशवासियों का हित चिन्तन करने वाला एवं विद्वान् हो, उसे कोई देश भला कैसे परास्त कर सकता है। असम्भव।"

☐

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हंसते हुए मृत्यु का आलिङ्गन

यूनान के महान दार्शनिक महात्मा सुकरात ने वहाँ के नवयुवकों में नवीन जागृति पैदा की और पाखँड तथा अन्धविश्वास के विरुद्ध लड़ने की प्रेरणा दी। शीघ्र ही वे नवयुवकों में लोकप्रिय हो गए।

एथेंस के अज्ञानी और प्रमादी सत्ताधारियों को यह अच्छा नहीं लगा। उन्होंने अनेक मिथ्या आरोप लगा कर उन पर मुकदमा चलाया। सुकरात के शुभचिन्तकों ने उन्हें राज्य से बाहर भाग जाने की सलाह दी। सुकरात ने उत्तर दिया, "अपने प्राण बचाने के लिए मैं युवकों के सामने वुरा उदाहरण नहीं रखूँगा।" वह निर्भय हो कर न्यायालय में उपस्थित हुए।

वहाँ अभियोग पढ़ कर सुनाए गए। और उन अपराधों को स्वीकार कर, क्षमा माँगने के लिए कहा गया। सुकरात ने अन्याय के सामने सिर झुकाने से इन्कार कर दिया और कहा, "मेरी चिन्ता तो उन्हें करनी चाहिए जिन्हें मेरे न रहने से हानि होगी। मेरा जीवन तो दूसरों के लिए है।"

उन्हें दण्ड सुना दिया गया। उन के मित्रों ने फिर उन्हें बन्दीगृह से निकल भागने की सलाह दी। परन्तु सुकरात ने जनता के सामने ऐसा गलत उदाहरण रखना पसन्द नहीं किया और अविचल रह कर मृत्यु की प्रतीक्षा करते रहे।

अन्तिम क्षणों तक उन में कोई घबराहट नहीं थी, वे अत्यन्त सहज भाव से बातें कर रहे थे।

मृत्युदण्ड के लिए उन्हें विष का प्याला दिया गया। विष पी लेने के बाद भी उनके मुख पर भय अथवा विषाद की रेखा नहीं

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

थी। वे धैर्य एवं शान्ति का उपदेश देते रहे। अन्तिम क्षण तक तनिक भी दुर्बलता उन में नहीं देखी गई।

मरने के वाद भी उस महात्मा के मुख पर सुख और सन्तोष की छाप थी। उन्हों नें हँसते हँसते विदा ली। परन्तु सारा यूनान उन की मृत्यु पर रो रहा था।

अपनी जिन परिस्थितियों को तुम वदल सकते हो, उन्हें बदलने का पूर्ण प्रयास करो। जिन्हें तुम बदल नहीं सकते, उन्हें स्वीकार कर लो।

—आचार्य सुधांशु

CC-0 Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गरीब का बेटा — हेनरी फोर्ड

हेनरी फोर्ड लन्दन गये थे। वहाँ के स्टेशन पर उतर कर उन्होंने पूछताछ कार्यालय में पूछा — "कोई सस्ता-सा होटल नज़दीक में बताइये।"

वहाँ के एक क्लर्क (लिपिक) ने एक-पल ध्यान से फोर्ड को देखकर कहा— "सर! आपके चेहरे को मैंने समाचार पत्रों में देखा है। लगता है, आप सर हेनरी फोर्ड हैं।"

हेनरी फोर्ड ने स्वीकृति सूचक अपना सिर हिला दिया।

तब उस क्लर्क ने आश्चर्य-पूर्वक फिर कहा — "पर . . . . पर आश्चर्य है सर, कि आप एक सस्ता होटल खोज रहे हैं। आपके बेटे-बेटियां जब यहाँ आते हैं, तो वे सबसे उत्तम और मँहगे होटल की खोज करते हैं।"

रेलवे के उस क्लर्क की बातों को सुनकर फोर्ड साहब ने कुछ धीमे स्वर में कहा — "सुनिये! मैं एक गरीब का बेटा हूँ और मेरे बेटे हेनरी फोर्ड के बेटे हैं, अमीर आदमी के अमीर बेटे। ये सम्पत्ति मैंने स्वयं पैदा की है। मैं एक गरीब आदमी का बेटा हूँ। मुझे सस्ता-से-सस्ता होटल जल्दी बताइये। मैं तो किसी फोर्ड का बेटा नहीं हूँ। अमरीका से दस ऐसे बड़े नाम छाँट दें, तो अमरीका भी गरीब होगा।"

□

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कैसे होगा पवित्र मानव?

प्रातःकाल लोग गङ्गा स्नान कर रहे थे। नदी गहरी थी। अतः कुछ ब्राह्मणों को जल में घुसकर स्नान करने का साहस नहीं हो रहा था।

एक किनारे पर संत कबीर भी स्नान कर रहे थे। उन्होंने अपना लोटा गङ्गा की मिट्टी से धो-माँजकर एक आदमी को दिया और कहा — 'जाओ! उन ब्राह्मणों को दे आओ, ताकि वे भी सुविधा से स्नान कर लें।

कबीर का लोटा देखकर ब्राह्मण एकाएक चिल्ला उठे— 'अरे! उस जुलाहे के लोटे को दूर रखो। मत छुओ। इससे स्नान करके तो हम अपवित्र हो जाएँगे।

इस पर कबीर बड़ी गम्भीरता से बोले — 'मैंने लोटे को कई बार मिट्टी से माँजा और गङ्गा जल से धोया, फिर भी साफ न हुआ, तो दुर्भावनाओं से भरा हुआ यह मानव तन गङ्गाजल में स्नान करने से भला कैसे पवित्र होगा?'

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सन्यासी की परीक्षा

स्वामी स्वतन्त्रतानन्द जी जब श्रीमद्दयानन्द उपदेशक विद्यालय के आचार्य थे तो भिक्षा के लिए कहीं भी चले जाते। गुरुदत्त भवन के समीप की एक गली में एक घर में जब भी अलख जगाते तो उस घर की देवी जली-कटी गालियाँ सुनाती। स्वामी जी आगे निकल जाते। दो दिनों तक लगातार उस देवी को न सुना तो स्वामी जी ने उसके रुग्ण होने का अनुमान लगाया। तीसरे दिन से वही नित्य कर्म आरम्भ हो गया। एक दिन की अलख में वह देवी अपने घर की छत पर गोबर लेपन कर रही थी कि अलख सुनते ही ऊपर से गोबर दे मारा।

स्वामी जी निहाल होकर बोले – कि देवी तू धन्य है। आज कुछ तो हाथ लगा। आशा है एक दिन यहाँ से भोजन भी मिलेगा। हुआ भी ऐसा ही। भविष्य में वह देवी महात्मा जी को बड़ी श्रद्धा से भिक्षा देने लगी। बीच-बीच में स्वामी जी नहीं आते तो कारण पूछने लगी। गोबर और गाली से देवी ने सन्यासी की धीरज व साधना की जो परीक्षा ली थी उससे देवी का हृदय परिवर्तित हो गया। □

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गोस्वामी तुलसीदास और चोर

गोस्वामी जी विरक्त होकर घरवार त्यागकर निकले ही थे। एक बार रात्रि को विश्राम करके आधी रात से पहले ही चल पड़े। वस्ती से आगे कुछ ही दूर पर उन्हें आठ-दस व्यक्ति मिले, जो चोर थे। इनको देखकर चोरों के मुखिया ने कहा कि 'लो, वोहनी तो इससे ही कर लो। जो इसके पास हो, छीन लो!' यह सुनकर दो चोर यात्री के पास आए और देख-दाखकर कहने लगे, है तो इसके पास कुछ नहीं।' चोरों के मुखिया ने गोस्वामी जी से पूछा, 'तुम कौन हो?' ये तो वैराग्य के नशे में थे ही, उत्तर दिया — 'जो तुम हो सो हम हैं।' अभिप्राय था — तुम भी मनुष्य हो, मैं भी एक मनुष्य हूँ! किन्तु चौरों के शव्दकोश के आधार पर इसका यह अर्थ हुआ कि मैं भी एक चोर हूँ। इस उत्तर पर स्वाभाविक रूप से विश्वास इसलिए जम गया कि और कौन रात्रि को सुख की नींद छोड़कर अन्धकार में ठोकरें खाता फिरेगा? चोरों के नेता ने कहा — 'यदि तू भी वही है जो हम हैं तो आज की रात हमारे साथ मिलकर काट ले।' इसपर गोस्वामी जी उनके साथ हो लिये। चोर भी जिस गाँव में, जिस घर में उन्हें नकव लगानी थी, वहाँ पहुँचे। नेता ने सबकी ड्यूटियाँ— कौन अन्दर जाएगा, कौन वाहर रहेगा— आदि-आदि वाँट दीं। इस क्रम में गोस्वामी जी को वाहर रहकर निगरानी का काम सौंपा। साथ ही यह भी कहा कि— देखो, लोग जग जावें अथवा और कोई खतरे की वात हो तो चिल्ला मत पड़ना! खुदी हुई मिट्टी की मुट्ठी भरके अन्दर फैंक देना। इससे हम समझ लेंगे कि खतरा है।' गोस्वामी जी ने कहा कि — 'यही करूँगा।'

चोर नकाब लगाकर अन्दर चले गए। वे यह देखते फिर रहे

CC-0 Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

थे कि कौन-सा ताला तोड़ें, क्या-क्या लें? गोस्वामी जी बाहर खड़े सोचने लगे कि — मुझे यह काम सौंपा गया है कि अगर हमारे साथियों को कोई देखनेवाला हो तो मैं मुट्ठी-भर मिट्टी अन्दर फैंककर उन्हें सूचित कर दूँ। विचार आया कि — यह तो ठीक है कि इन्हें कोई मनुष्य नहीं देख रहा, पर वह भगवान् तो देख रहा है जो सब जगह व्यापक है। वस, इस विचार के आते ही मुट्ठी अन्दर फैंक दी। 'चोरों के पैर नहीं होते' कहावत है ही। उन्होंने अनुमान लगाया कि लोग जाग गए दीखते हैं, इसलिए भागना चाहिये। सब निकल-निकलकर भागे। साथियों को भागता देखकर गोस्वामी जी ने भी दौड़ लगाई। सब भागकर बस्ती के बाहर किसी सुरक्षित स्थान पर इकट्ठे हुए तो चोरों के नेता ने गोस्वामी जी से पूछा — 'क्या बात थी? लोग जाग गए थे?' उत्तर मिला 'नहीं।' 'और कोई खतरा था?' गोस्वामी जी ने फिर 'नहीं' कहा। इन उत्तरों से क्षुब्ध होकर चोरों के नेता ने कहा— 'यह पागल कहाँ से साथ लगा लिया! इसने बना-बनाया सब काम बिगाड़ दिया!'

सर्वत्र प्रभु की व्यापकता को समझे बिना कोई मनुष्य पाप से नहीं बच सकता।

□

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दुनियाँ की दौलत के स्वामी

फ्राँसीसी यात्री वर्नियर १४ वर्ष तक भारत में रहा। उसने अपनी भारत-यात्रा में शाहजहाँ के उस पत्र का उल्लेख किया है जो उसने औरंगज़ेब को लिखा था जब वह दाराशिकोह को हराने के लिए आगरे पर आक्रमण करने आ रहा था। सेना का पड़ाव चम्बल के किनारे डाला। जब तैमूरलंग ने अपना विजय-अभियान चलाया तो एक बार उसने एक राजा को परास्त करके बन्दी बना लिया। दूसरे दिन उसे दरबार में अपने सामने बुलाया। जब पराजित राजा बन्दीरूप में उसके सामने उपस्थित हुआ तो तैमूर ने देखा कि राजा के एक आँख नहीं है, काणा है। यह देखकर तैमूर ठहाका मारकर हँसा। बन्दी राजा को तैमूर का यह व्यवहार बहुत अपमान-जनक लगा। उसने आवेश में आकर डाँटते हुए तैमूर से कहा कि 'आप अपने भाग्य पर इतना न इतराइये! मेरी भी कोई हैसियत है। मैं बन्दी के रूप में आज आपके सामने हूँ तो आप मेरा मज़ाक उड़ाते हैं? यह आपको शोभा नहीं देता। राजा और शासकों के जीवन में तो यह उतार-चढ़ाव आते ही रहते हैं। हो सकता है परिस्थितियाँ बदल जायँ और कल मैं तख्त पर बैठा होऊँ और आप बन्दी के रूप में मेरे सामने पेश हों! इसलिए सज्जनोचित व्यवहार को तिलाञ्जलि मत दीजिये।'

बन्दी राजा की यह प्रतिक्रिया देखकर तैमूर ने कहा — 'मेरा हँसने का कारण यह नहीं कि आप बन्दी के रूप में मेरे दरबार में पेश हैं। मेरे हँसने का कारण तो यह है कि एक बार आप मेरी ओर देखिये और फिर अपनी ओर देखिये। मेरी एक टाँग नहीं है और तुम्हारी एक आँख नहीं है और दुनियाँ की दौलत तुम्हारे-हमारे अर्थात् एक काणे और एक लँगड़े के कदमों में रुलती-फिरती है।'

□

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शान्ति से प्राण त्याग

बंगाल के प्रसिद्ध न्यायाधीश श्री नीलमाधव बंद्योपाध्याय, जो सत्यनिष्ठा के लिए बहुत विख्यात थे, अपने को स्वस्थ बताकर जबकि वे एक रोग से पीड़ित थे, उन्होंने पाँच हजार रुपये का बीमा कराया। जीवन के अन्तिम समय में नीलमाधव अत्यन्त अशान्त और क्षुब्ध थे और उनके प्राण निकल नहीं पा रहे थे। उनके सम्बन्धियों ने इसका कारण पूछा तो उन्होंने कहा — 'अब से पाँच वर्ष पूर्व बीमा के समय डॉक्टरी होने पर मैंने मधुमेह होने पर भी अपने रोग को छिपाकर अपने को स्वस्थ बताने का मिथ्या व्यवहार किया। बस, यह असत्य–आचरण ही मुझे इस समय अशान्त कर रहा है। बीमा–कम्पनी के अधिकारी को तुरन्त बुलावें ताकि मैं इस बीमा को रद्द करा दूँ। मैं नहीं चाहता कि इस प्रकार का पैसा मेरे वारिसों को मिले।'

बीमा–एजेण्ट को बुलाकर सब बात कही गई। एजेण्ट ने कहा— ऐसा तो होता ही रहता है। किन्तु माधव बाबू सन्तुष्ट नहीं हुए और बीमा रद्द करा दिया। प्रसन्न होकर कहा — "यह हर्ष की बात है कि मैं आपसे न्याय कर सका" और शान्ति से प्राण त्याग दिये। यह है जीवन की सफलता। □

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समझदार की मार

सूफी सन्त महात्मा मंसूर को फाँसी दी जा रही थी। उस समय लोग उन पर पत्थर और अंगारे फेंक रहे थे। वहीं पर एक अन्य फकीर 'जुन्नैद' भी मौजूद था।

जुन्नैद इस वात से दुःखी तो था, पर कुछ न कर सका।

उन्होंने सोचा — 'यदि मैं कुछ फेंककर नहीं मारता, तो कहीं लोग मुझे भी न मारने लगें। मुझे भी लोग मंसूर का पक्षपाती समझकर बुरा हाल कर देंगे।'

अतः उन्होंने एक फूल फेंक कर मारा। सोचा — 'मंसूर को फूल से चोट तो नहीं लगेगी, और भीड़ समझेगी कि मैंने कुछ फेंककर मारा है।'

लेकिन मंसूर लोगों के पत्थरों और अंगारों को तो झेल गए, पर जुन्नैद के फूल को वह न सह सके। वे अब तक की चोट से हँस रहे थे, किन्तु फूल के लगते ही वह कराहने लगे। वे तिलमिला उठे।

इसका कारण पूछा, तो वे रोते-रोते बोले — "जुन्नैद! ये तमाम़ लोग तो वेसमझ हैं, इसलिए मुझे मार रहे हैं, पर हाय! तुमने तो समझदार होते हुए भी मुझे मारा है, चाहे वह फूल ही से क्यों न हो। इससे तो मुझे और अधिक चोट लगी है। समझदारों के लिए यह अशोभनीय कर्म है।"

☐

CC-0 Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संस्कार का चमत्कार

श्री स्वामी स्वतन्त्रानन्दजी ने "आर्यसमाज के महाधन" नामक पुस्तक में कुछ आर्यसमाजी कार्यकर्ताओं के जीवन की विशेष घटनाओं का उल्लेख किया है। उनमें से एक महापुरुष भक्त फूलसिंह थे, जिन्होंने कन्या गुरुकुल खानपुर और गुरुकुल भैंसवाल की स्थापना की। ये महानुभाव पटवारी थे और जिस प्रकार अन्य पटवारी किसानों से रिश्वत लेते हैं, ये भी लेते थे। इन्हें आर्यसमाज के सत्संगों में जाने की रुचि हो गई। बुद्धि शुद्ध होने लगी और नियमित संध्या-हवन करने लगे। किन्तु जब भी संध्या करने बैठते, अन्दर से विचार आता कि एक ओर ईश्वर-भजन और दूसरी ओर रिश्वत! ये दोनों साथ-साथ कैसे चल सकते हैं? एक दिन निश्चय किया कि अब रिश्वत कभी नहीं लूँगा। थोड़े ही दिनों में इस बात की प्रसिद्धि हो गयी और लोगों में उनका सम्मान बढ़ गया। किन्तु ज्यों-ज्यों मन पवित्र हुआ, थोड़ी-सी व्यावहारिक अशुद्धि भी चुभने लगी। अब भजन करने बैठते तो मन में विचार आने लगा, लोग तुझे महात्मा कहने लगे हैं – किन्तु तू हज़ारों रुपये लिये बैठा है! धीरे-धीरे इन विचारों के पकने पर एक दिन सर्विस के समय में लिये पैसों का योग लगाया। इसके बाद अपनी कृषि-भूमि का मूल्य लगाया तो परिणाम यह निकला कि रिश्वत में लिये पैसों को चुकाकर निर्वाह के योग्य भूमि बच जाती थी। बस, भूमि बेच दी और नौकरी जिस गाँव से प्रारम्भ की थी और जहाँ-जहाँ रहे, सब स्थानों पर पहुँच कर रिश्वत में लिये पैसे हाथ जोड़कर वापस किये। लोग आश्चर्य से उनकी मुखाकृति को देखते थे और श्रद्धा से उनके चरण छूते थे। स्पष्ट है कि मनुष्य को इतना पवित्र आस्तिकता और धर्म के संस्कार ही कर सकते हैं। □

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उन्नति का मूलमन्त्र

विश्वप्रसिद्ध अणु वैज्ञानिक आइन्स्टीन के नाम को कौन नहीं जानता। वह एक वहुत बड़े वैज्ञानिक थे। एक बार वे अपनी प्रयोगशाला में किसी गम्भीर समस्या का हल तलाश करने में लगे हुए थे। समस्या हल होने का नाम ही नहीं ले रही थी। भोजन का समय हुआ। उनकी धर्मपत्नी उनके लिए खाना तथा पानी से भरा गिलास तथा जग मेज़ पर रख गई।

आइन्स्टीन अपने कार्य में तल्लीनता से लगे हुए थे। उनकी पत्नी ने सोचा, "जव ये अपनी समस्या से निपट लेंगे तो मेज़ पर रखा हुआ भोजन स्वयं कर लेंगे।"

थोड़ी देर वाद आइन्स्टीन का कोई मित्र उनसे मिलने आया। आइन्स्टीन अपने काम में पूरी तरह व्यस्त थे। उन्हें यह भी आभास नहीं हुआ कि कोई मित्र उनसे मिलने आया है। मित्र उनकी तल्लीनता देखकर अचम्भित रह गया। उसने सोचा कि चलो आज इन्हें अपना काम करने दें। फिर मुलाकात होगी।

मित्र को वहुत भूख लग रही थी अतः उसने मेज पर रखा खाना खाया और चुपचाप वहाँ से चला गया।

कुछ समय पश्चात् जब आइन्स्टीन की समस्या हल हो गयी तव उन्हें भोजन का ख्याल आया, उन्होंने देखा कि वर्तन खाली पड़े थे और गिलास में थोड़ा सा पानी था। उन्होंने सोचा 'देखो, मैं भी कितना मूर्ख हूँ। मैंने खाना खा लिया और मुझे याद ही नहीं है।" उन्होंने पानी पी लिया और फिर अपने काम में लग गये। यह थी उनके काम की तल्लीनता। इसीलिए वे आज विश्व के माने हुए वैज्ञानिक कहला सके। □

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जनविश्वास का महत्त्व

सुप्रसिद्ध चीनी दार्शनिक कनफ्यूशियस से एक शिष्य ने प्रश्न किया– 'शासन प्रभावशाली किस प्रकार बनाया जा सकता है?'

दार्शनिक ने उत्तर दिया – "पर्याप्त अन्न, अस्त्र, शस्त्र और जनता का विश्वास प्राप्त करके।"

शिष्य ने पुनः प्रश्न किया – 'यदि इन तीनों में से किसी एक का त्याग करना पड़े तो किसे छोड़ें?'

"अस्त्र-शस्त्र को।" दार्शनिक ने कहा।

'और यदि शेष दोनों में से किसी एक का त्याग करना पड़े तब?'

कनफ्यूशियस गम्भीर हो गये। फिर बोले– "ऐसी स्थिति में भोजन के अन्न का त्याग करें। अनन्तकाल में मानव-मृत्यु का ग्रास बनता आया है। भोजन के अभाव में कुछ लोग और मरेंगे।"

शिष्य ने पुनः पूछा – "यदि जनता का विश्वास त्याग दें, तो कैसा रहे?"

दार्शनिक ने एक क्षण सोचे बिना उत्तर दिया–

"ऐसी स्थिति में सर्वनाश हो जायेगा। कोई भी शासन भोजन और अस्त्र-शस्त्र के अभाव में चल सकता है, किन्तु जन विश्वास के समाप्त होने पर तो एक पल भी शासन नहीं टिक सकता है।" □

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

छोटी कुटिया : विशाल हृदय

सन्त आलवार अपनी आवश्यकताओं को न्यूनतम रखते थे। उन की झोंपड़ी भी इतनी ही बड़ी थी कि उस में केवल एक आदमी सो सकता था।

एक दिन भारी वर्षा हो रही थी। रात का समय था। चारों ओर अन्धकार था। अचानक किसी ने दरवाजा खटखटाया। सन्त आलवार ने दरवाजा खोला — एक आदमी गीले कपड़ों में लिपटा खड़ा जाड़े से थर-थर काँप रहा था। वह रास्ता भटक गया था। उस ने कहा कि वह रात भर के लिए आश्रय चाहता है, सुवह चला जाएगा।

सन्त ने कहा, "अन्दर आ जाओ। मेरी कुटिया में एक आदमी सो सकता है, परन्तु दो बैठ सकते हैं। हम बैठ कर रात काट लेंगे।

वह आदमी अन्दर आ गया और सन्त ने दरवाज़ा बन्द कर दिया। थोड़ी देर में फिर दरवाज़े पर दस्तक हुई।

सन्त ने दरवाज़ा खोल कर देखा— एक आदमी पानी में तर-बतर खड़ा है और जाड़े से काँप रहा है। उस ने भी निवेदन किया कि उसे रात विताने की जगह मिल जाए तो वह सवेरे चल देगा।

सन्त आलवार ने कहा, "कुटिया तुम्हारी ही है, मज़े में रात बिताओ। इस कुटिया में एक आदमी सो सकता है या दो बैठ सकते हैं, या तीन आदमी खड़े रह सकते हैं। अन्दर आ जाओ। हम तीनों खड़े खड़े रात बिता सकते हैं।"

वह व्यक्ति भी अन्दर आ गया। उन तीनों ने रात खड़े रह कर विताई। सवेरे दोनों महमान विशाल हृदय सन्त को धन्यवाद दे कर चले गए।

□

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गुरुकुल के लिए स्वामी श्रद्धानन्द का सर्वस्व न्योछावर

जब महात्मा मुंशीराम जी ने हरिद्वार के पास गुरुकुल काङ्गड़ी की स्थापना का विचार किया तो उस विचार के साथ ही अपनी पुस्तैनी कोठी को छोड़कर समस्त सम्पत्ति व अपनी निजी प्रैस गुरुकुल को समर्पित कर चुके थे। फिर भी गुरुकुल चलाने के लिए धन की और आवश्यकता थी। वह धन संग्रह करने के लिए जगह-जगह धनीमानी व रईस के घर जाते थें ताकि गुरुकुल का कार्य निरन्तर चलता रहे।

एक घटना ने उनको बड़ा उद्वेलित किया, जिसका विवरण उन्होंने गुरुकुल काङ्गड़ी के उत्सव पर भाषण में इस प्रकार किया—

'कुछ समय हुंआ, गुरुकुल के लिए धन संग्रह करने के निमित्त मैं दिल्ली गया वहाँ और प्रमुख जनों के साथ में सदर में सबसे बड़े रईस के घर चन्दा माँगने पहुँचा। उस रईस को जब गुरुकुल की शिक्षा मण्डली के आने का समाचार दिया गया तो वह घर के अन्दर चला गया और कहला भेजा कि रायसाहब थोड़ी देर में मिलेंगे। हम बहुत देर तक वहाँ बैठे रहे पर रायसाहब घर से बाहर न आये। यह बात उस समय मुझे बहुत बुरी लगी और मैं असन्तुष्ट होकर मण्डली को लेकर वहाँ से चला आया। डेरे पर आकर मैंने अपनी अन्तरात्मा से पूछाकि ऐसा क्यों हुआ, मेरे अन्दर क्या कमी है, जिसके कारण वह धनी आदमी मुझसे बचने की चेष्टा कर रहा था। उसके बाहर न आने को मैंने बुरा माना? मेरी आत्मा ने उत्तर दिया कि इसका कारण यह है कि सर्वोत्तम भाव से धर्म में अर्पण नहीं किया और तेरे मन में बची हुई सम्पत्ति के कारण अहँकार है। उसी समय मैंने निश्चिय किया कि मैं अहँकार की जड़ अपनी

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुस्तैनी कोठी जो मेरी अन्तिम भौतिक सम्पत्ति शेष है को भी आज गुरुकुल को अर्पण कर दूँ। वस्तुतः धर्म की सेवा के योग्य तभी हो सकूँगा। . . .

उस दिन उनकी इस असाधारण घोषणा से सभा में आये नर-नारियों के भाव विह्वल होकर आंखों में आंसू आ गये तथा जयकार होने लगी।

गुरुकुल काङ्गड़ी के निर्माण में अपना सर्वस्व अर्पित कर देने वाले यह संन्यासी वस्तुतः सुदृढ़ नींव के पत्थर बन गये। □

जो मनुष्य अपनी सब चीजें परमेश्वर के अर्थ समर्पित कर देता है उसके लिए परम कारुणिक परमात्मा सब सुख देता है—इसमें सन्देह नहीं।

—स्वामी दयानन्द

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अभिमान चकनाचूर

सिकन्दर विश्व-विजय की महत्वाकाँक्षा लेकर निकला था। उसमें असाधारण प्रतिभा और योग्यता थी, किन्तु निरन्तर विजय प्राप्त करने से उसका दम्भ बढ़ गया।

सिकन्दर ने विजय के उन्माद में न जाने कितने नगरों और गाँवों को रौंद डाला। उसने निर्ममतापूर्वक नरसंहार किया, अपार धन-सम्पदा लूटी और अपने सैनिकों को मालामाल कर दिया।

एक वार वह एक ऐसे नगर पर चढ़ दौड़ा जहाँ, केवल स्त्रियाँ और बच्चे थे। सारे पुरुष पहले ही युद्ध में मारे जा चुके थे। स्त्रियाँ असहाय थीं। उनके पास आत्मरक्षा का कोई साधन नहीं था।

सिकन्दर सोच में पड़ गया। शस्त्रविहीन स्त्रियों से कैसे युद्ध किया जाय, यही वात उसकी समझ में नहीं आ रही थी। उसके साथ गिने-चुने सैनिक थे, विशाल सेना पीछे आ रही थी।

दोपहर होने पर सिकन्दर को भूख लगी। उसने एक घर के सामने अपना घोड़ा रोका। कई वार पीटने के वाद दरवाज़ा खुला और एक बुढ़िया लाठी टेकती हुई वाहर आई।

सिकन्दर वोला—"घर में कुछ खाना हो तो ले आओ, मुझे भूख लगी है।" बुढ़िया भीतर गई और कपड़े से ढँका हुआ एक थाल लेकर आई। उसने थाल को सिकन्दर के आगे बढ़ा दिया। कपड़ा हटाने पर सिकन्दर ने देखा कि उसमें कुछ पुराने सोने के गहने थे। वह झुँझला उठा।

सिकन्दर क्रोधपूर्वक वोला—"यह क्या लाई है बुढ़िया? क्या मैं इन सोने के गहनों को खाऊँगा? मैंने तुझसे रोटियाँ माँगी थीं।"

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बुढ़िया बोली— "तू सिकन्दर है न? तेरा नाम मैंने वहुत सुना था, आज तुझे देख भी लिया। मैंने यह भी सुना था कि सोना ही तेरा भोजन है। इसी भोजन की तलाश में तू यहाँ आया है। सोना और धन लूटकर तू वेगुनाह लोगों को मौत के घाट उतार रहा है। अगर तेरी भूख रोटियों से मिटती तो क्या तेरे देश में रोटियाँ नहीं थीं? फिर दूसरों की रोटियाँ छीनने की ज़रूरत तुझे क्यों पड़ी?"

सिकन्दर उस बुढ़िया का मुँह देखता रह गया। उसके दम्भ का शिखर टूटकर नीचे आ गिरा था। बुढ़िया ने उसे वड़े स्नेह से रोटी खिलाई। सिकन्दर नें उस नगर को कोई नुक्सान नहीं पहुँचाया। वहाँ से जाते-जाते वह नगर के प्रमुख मार्ग पर एक शिलालेख लगा गया, जिसपर लिखा था— "अज्ञानी सिकन्दर को इस नगर की एक महान नारी ने अच्छा सवक दिया था।"

❑

गरीव वह नहीं है जिसके पास कम है वल्कि धनवान होते हुए भी जिसकी इच्छा कम नहीं हुई वह सवसे अधिक गरीब है।

—विनोवा भावे

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लोकसेवा को प्राथमिकता

उस दिन जैसे ही तिलक ने समाचारों के लिफाफे खोले, प्रत्येक समाचार से उनके हृदय में तूफान उमड़ता चला गया। महाराष्ट्र में भयंकर प्लेग के ढेरों समाचार। उनका हृदय चीत्कार कर उठा, प्लेग का भयङ्कर दानव सैकड़ों मानवों को लीलकर अपना ग्रास वना रहा है, अव कलम और भाषण का नहीं, आर्त वन्धुओं की सेवा करने का समय आ गया है। एक दृष्टि उन्होंने ज्वर से तड़पते अपने वेटे की ओर डाली, थोड़ी ही देर वाद वह भी प्लेग के दानव की भेंट चला गया परिवारजनों के आँसू वान्ध तोड़कर वह चले।

तिलक उठे, वोले, "ठीक है जो होना था हो चुका। चलता हूँ सैकड़ों मातायें मेरी प्रतीक्षा करती होंगी। और कर्मयोगी तिलक अपने एक पुत्र के आँसू वहाने की वजाय सैंकड़ों माताओं के आँसू पोंछने, मृतकों को उठाने, सिसकतों को सांत्वना देने तथा रोगियों को दवा देने चल पड़े। राजनीति को लोकसेवा का परम अवसर समझने वाले ऐसे वीर पुत्रों के कारण भारत माँ यशस्वी रही। □

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जनता की अदालत

एक समय राजा कृष्णदेव राय शिकार के लिये गये। वह जंगल में भटक गये। दरवारी पीछे छूट गये। शाम होने को थी। उन्होंने घोड़ा एक पेड़ से बाँधा। रात पास के एक गाँव में विताने का निश्चय किया। राहगीर के वेश में किसान के पास गये। कहा, "दूर से आया हूँ। रात को आश्रय मिल सकता है?" किसान वोला, "आओ, जो रूखा-सूखा हम खाते हैं, आप भी खाइएगा। मगर मेरे पास एक पुराना कम्वल ही है। क्या उसमें जाड़े की रात काट सकेंगे?" राजा ने 'हाँ' में सिर हिलाया। रात को राजा गाँव में घूमे। भयानक गरीवी थी। उन्होंने पूछा, "दरवार में जाकर फ़रियाद क्यों नहीं करते?" "कैसे जाएँ"? राजा तो चापलूसों से घिरे रहते हैं। कोई हमें दरवार में जाने ही नहीं देता।"

सुवह राजधानी लौटते ही राजा ने मन्त्री और दूसरे अधिकारियों को वुलाया। कहा, "हमें पता चला है, हमारे राज्य के गाँवों की हालत ठीक नहीं है।

मन्त्री वोला, "महाराज आपसे किसी ने गलत कहा है।" मन्त्री के जाने के वाद उन्होंने तेनाली राम को वुलवा भेजा। कल की पूरी घटना कह सुनाई। तेनाली राम ने कहा, "महाराज, प्रजा दरवार में नहीं आएगी। अव आपको ही उनके दरवार में जाना चाहिए।

अगले दिन राजा ने दरवार में घोषणा की– "कल से हम गाँव-गाँव में जाएँगे, यह देखने के लिए की प्रजा किस हाल में जी रही है?" सुनकर मन्त्री वोला, "महाराज, लोग खुशहाल हैं। आप चिन्ता न करें। जाड़े में वेकार परेशान होंगे।"

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तेनाली राम बोला, "मन्त्री जी से ज्यादा प्रजा का भला चाहनें वाला और कौन होगा? यह जो कह रहे हैं, ठीक ही होगा। मगर आप भी तो प्रजा की खुशहाली देखिए।"

मन्त्री ने राजा को आसपास के गांव दिखाने चाहे, पर राजा ने दूर-दराज के गाँवों की ओर घोड़ा मोड़ दिया। राजा को सामने पाकर लोग खुलकर अपनी समस्याएँ बतलाने लगे। मन्त्री के कारनामों का सारा भेद खुल चुका था। वह सिर झुकाए खड़ा था।

राजा कृष्णदेव राय ने घोषणा कर दी—अब हर महीनें कम-से-कम एक बार वह जनता की अदालत में आया करेंगे, ताकि प्रजा के साथ बराबर न्याय होता रहे।

□

साहसी इस बात की खोज नहीं करते कि शत्रु कितने हैं, किन्तु वे तो यह खोजते हैं कि वे कहां हैं?

—योन नागोची

CC-0 Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नहीं बनना महन्त

सच्चे शिव की प्राप्ति व मृत्युञ्जय वनने की प्रवल अभिलाषाओं को लेकर स्वामी जी जगह-जगह विचरते हुए उत्तराखण्ड के ओखीमठ में पहुँचे। स्वामी जी ने देखा मन्दिर में प्राय: सभी पाखण्ड परायण थे, ज्ञान और वैराग्य से शून्य। मठ की सम्पत्ति विशाल थी। मठाधीशों का जीवन आडम्वर में वीत रहा था। स्वामी जी ने उनके जीवन का निरीक्षण और परीक्षण किया, ओखीमठ का प्रमुख महन्त दयानन्द के व्रह्मचर्य की दीप्ति, ज्ञान और गुणों पर मोहित हो गया। उसने दयानन्द से अपना शिष्य वन जाने का अनुरोध किया और प्रलोभन देते हुए कहा "दयानन्द! घुमक्कड़ों की भाँति घूमने से क्या मिलेगा? हमारे शिष्य वनकर गद्दी के स्वामी और लाखों रुपये की सम्पत्ति के अधिकारी वनो। तुम महन्त कहलाओगे और तुम्हारी मान प्रतिष्ठा का भी पार न रहेगा।"

स्वामी जी अपने घर से सव कुछ छोड़कर चले थे। पिता जी की सम्पत्ति मठ की सम्पत्ति से कई गुना अधिक थी। "मैंने सकल सांसारिक सुखों से मुख मोड़ा और ऐश्वर्य पूर्ण पितृ-गृह को सदा के लिए छोड़ा है, मैं देखता हूँ उस उद्देश्य पर न तुम चलते हो और न उसका तुम लोगों को कोई ज्ञान ही है। इस अवस्था में मेरा शिष्य बनना व मठ में रहना भी असम्भव है।"

महन्त ने पूछा— "आपका उद्देश्य क्या है? किस जिज्ञासा में मग्न तुम इतने कष्ट क्लेश उठा रहे हो।"

स्वामी जी ने उत्तर दिया "मैं सत्य विद्या और मोक्ष के मार्ग की खोज में हूँ।"

स्वामी जी वार्तालाप में कुछ सार न देख मठ को छोड़कर अपनी मंजिल की ओर आगे निकल पड़े।

□

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अनोखा सभापतित्व

वात उन दिनों की है जब महात्मा गांधी अफ्रीका में लड़ रहे थे। इन्हीं दिनों वह लन्दन गए। वहाँ भारत के वहुत–से नवयुवक पढ़ते थे। उन नवयुवकों ने महात्मा गाँधी के सम्मान में एक सभा करने का विचार किया। सभा का कार्यक्रम वड़ा ही सादा था— पहले भोज, फिर भाषण।

और सव तो ठीक हो गया, लेकिन सभापति कोई नहीं मिला। आखिर गाँधीजी तैयार हुए, लेकिन इस शर्त के साथ कि भोजन में माँस नहीं होगा। युवकों ने मान लिया। एक हॉल किराए पर लिया, ज़रूरी सामान खरीदा और सव काम में जुट गए। किसी ने वर्तन सम्भाले, किसी ने चूल्हा। उन्हीं के वीच एक दुवला–पतला हिन्दुस्तानी भी था। उसने थालियाँ माँजने और तरकारियाँ काटने का काम सम्भाल लिया। कई घंटे वीत गए, पर वह काम में जुटा रहा। वह दोपहर को आया था और शाम हो गई।

आखिर सभा के उपप्रधान वहां आए। सहसा उनकी नज़र उस पतले–दुवले हिन्दुस्तानी पर जा पड़ी। वह तो जैसे आँखें फाड़ उसे देखते ही रह गए। धीरे से कहा— "गाँधीजी!"

जैसे वह हॉल ही हिल उठा। सारे युवक दँग रह गए। उनका दिल भर आया। उन्होंने हाथ जोड़कर गाँधीजी को काम करने से रोका लेकिन वह उसी तरह काम में लगे रहे। उन्होंने खाना परोसा, थालियाँ लगाई और फिर सभापति वनकर भाषण भी दिया।

सच ही वह अनोखे सभापति थे। आजकल के सभापति वनने वालों की तरह नहीं, जो कभी समय पर सभा में नहीं पहुँचते। □

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुनहली सीख

उन दिनों श्री जाकिर हुसेन जामिया मिलिया के अधिष्ठाता थे। छात्रावास की भी वे ही देखभाल करते थे।

उस दिन उन्हें छात्रावास निरीक्षण के लिए जाना था। दरवाज़े में प्रवेश किया तो देखा लड़के भोजनालय में हैं। दरवाज़े पर सभी के जूते अस्त-व्यस्त पड़े हैं। सवसे पहले उन्होंने जूतों को लाइन से लगाया और पोंछकर ठीक किये।

इसके बाद भीतर घुसे तो देखा कि लड़के रसोइये से लड़ रहे हैं। रोटी के कच्ची और जले होने की शिकायत कर रहे हैं। दाल को पतली वता रहे हैं। उन्होंने बीच में एक थाली रख रखी थी जिसमें रोटी का नापसंद भाग और दाल का ऊपर का पानी जमा करते जा रहे थे, फेंकने और अफसरों को दिखाने के लिए। लड़ रहे थे सो अलग।

जाकिर साहव पहले त़ो एक कोने में खड़े होकर यह सव देखते-सुनते रहे। पीछे वे वीच वाली थाली के पास पहुँचे और वैठ कर उस फेंके गये समान को खाने लगे।

लड़के स्तव्ध रह गये। जाकिर साहव ने कहा वच्चो! हम लोग जिस देश में रहते हैं उसमें करोड़ों को ऐसा भी नहीं मिलता, जितना कि तुमने फेंक दिया है। खाना वरवाद करने से पहले यह भी तो सोचना चाहिए।

लड़कों ने माफी माँगी और भविष्य में सादगी से काम चलाने का आश्वासन दिया।

ऐसा सादगी प्रिय व्यक्ति एक दिन भारत का राष्ट्रपति चुना गया। □

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रजा के प्रति समर्पण

"हुकुम महाराज का, शाही कोठार हर आदमी के लिए खुले हैं" जो चाहे वहाँ आकर एक वार में जितना अन्न ले जा सकें उठा लें जाये और इस जानलेवा अकाल से अपने परिवार की रक्षा करें।"

नगाड़ा वजाकर एक मिरासी पंजाव के महाराजा रणजीत सिंह की आज्ञा का सव जगह एलान कर रहा था। कारण, इस साल पूरे पंजाव में जवर्दस्त अकाल पड़ गया था। खेतों में अन्न का एक दाना नहीं उपजा था। ऐसे में रणजीत सिंह ने राजधर्म निवाहा। तय किया कि किसी को राज्य में भूखों न मरने दिया जाये।

फलतः प्रजा शाही कोठारों से अपने लिए अन्न उठा लाने के लिए उमड़ पड़ी। गाँवों-शहरों से अकालपीड़ितों का ताँता लग गया।

लाहौर में ही एक वृद्ध सज्जन खासे खाते-पीते गृहस्थ थे लेकिन अकाल ने उनके परिवार को भी भूखों मरने की नौबत ला दी। जीवन में कभी किसी के आगे हाथ न पसारा था, न किसी से दान-खैरात लेने का उनका स्वभाव था परन्तु अब क्या करें, मरता क्या न करता। वच्चों के सूखे उदास चेहरे उन्हें विवश कर बैठे और तव एक अंधेरी रात वे भी एक चादर लेकर शाही कोठारों की तरफ चल पड़े।

शाही कोठारों में अनाज अभी भी भरा था, जो चाहे अनाज ले जाये, कोई पूछताछ, रोक-टोक या लिखापढ़ी नहीं। आखिर उस सज्जन ने चादर ज़मीन पर फैलाई और बड़े संकोच से थोड़ा सा अनाज उसके एक सिरे में वाँधा। वृद्ध थे, कमज़ोर थे। ज्यादा

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अनाज लेकर घर तक चल पाना भी उनके लिए दुष्कर था और शर्म संकोच था सो अलग। अभी वे छोटी सी गठरी उठा भी न पाये थे कि तनीदार मोटा अंगरखा पहने, सिर पर पगड़ी बांधे एक आदमी वहाँ आया। पूछने लगा, "क्यों भाई। आपने तो बहुत कम अनाज लिया। भला इससे क्या होगा? आप सकुचाते-शरमाते बोले, जी हाँ। सरदारजी, दरअसल मैं बूढ़ा लाचार आदमी अधिक अनाज ढो भी नहीं सकता, फिर इस अकाल के वक्त हम लोग थोड़ा-थोड़ा ही लें तो ठीक होगा। सब का काम चलेगा और फिर भी जरूरतमन्दों के लिए शाही कोठारों में अनाज शेष रहेगा।"

यह सुनकर उस आगुन्तुक ने वृद्ध सज्जन की वह छोटी गठरी खोल डाली, पूरी चादर ठीक से भूमि पर बिछाई और ढेर सा अन्न जितना कि चादर में समा सकता था, बाँधा। इस पर वे महाशय नहीं-नहीं कर के उसे मना करने लगे। बोले, "सरदारजी! आप यह क्या कर रहे हैं? मैं भला इतना अनाज कैसे ले जा सकता हूँ? किसी को मजदूरी देने का भी मेरी सामर्थ्य नहीं।"

भारी बकुचा उठाकर सिर पर रखता हुआ वह अजनबी आदमी कहने लगा, "भाई फिक्र मत करो। महाराज ने मुझे हुक्म दे रखा है, कि जो आदमी अपनी गठरी खुद न ले जा सके - उसके घर में ही उसका अनाज पहुँचा दूँ।"

खैर, वृद्ध हिचकता ही रहा और वह व्यक्ति अनाज का बोझ उठाकर उसके साथ चल पड़ा।

घर आया तो उस अजनबी ने देखा, द्वार पर दीप जलाकर दो बालक उस बूढ़े की बाट जोहते बैठे हैं। स्पष्ट ही वे बच्चे चिन्तातुर दिख रहे थे।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उस अजनवी ने पूछा –

भाई! वच्चे किसके हैं? घर में कोई क्या वड़ा लड़का नहीं जो आपकी मदद करता, खुद आकर अनाज ले जा सकता?"

वृद्ध वोला, "सरदारजी! ये दोनों मेरे पोते हैं। एक लड़का था जो कावुल में लड़ाई में मारा गया। अव ये हैं और वहू। उसका स्वर दुःखावेग से भारी हो गया था।"

अजनवी ने कहा भाई जी आप धन्य हैं आपके घर पर ऐसा वेटा जन्मा तो देश की खातिर शहीद हो गया। आपका घर तो हमारे लिए तीर्थ की तरह पवित्र है।"

उसकी ओजस्वी वाणी सुनकर जव वृद्ध ने दिये की रोशनी में उसका चेहरा देखा तो सन्न रह गया। उसकी गढ़ी हुई काठी, रोवीली दाढ़ी–मूँछें और सतेज स्वर से वृद्ध को लगा कि यह कौन आ गया उस गरीव के द्वार। वच्चों से कहा – "इन्हें मथा टेको।" खुद भी प्रणाम करने लगा। कहा महाराज! यह क्या किया आपने? मुझ से वड़ा गुनाह हो गया जो आप से मैंने आज वोझा उठवाया।"

नहीं भाईजी। गुनाह नहीं, यह तो मेरा भाग्य है कि वन्दे से कुछ सेवा हो सकी आपकी, और सुनिए, आज से मैं ही आपका वड़ा लड़का हूँ और चलिए, आप और ये वच्चे हमारे मेहमान रहेंगे जव तक मेरी जिन्दगी है। वे थे महाराजा रणजीत सिंह।

□

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शङ्कराचार्य का बचपन

लगभग वारह सौ साल पहले की वात है। मालावार में एक वहुत वड़े सन्त हुए हैं। उनका नाम था शंकर। वचपन से ही उनमें वैराग्य की भावना थी। वह संन्यासी वनना चाहते थे, पर उसकी मां इसके लिए किसी भी हालत में राजी नहीं होती थी। माँ की ममता जो ठहरी! वह चाहती थी कि उसका वेटा उसकी आँखों के सामने रहे और बुढ़ापे में वह सहारा दे।

एक दिन शंकर अपनी माँ के साथ नदी में नहाने गये। वह जैसे ही पानी में घुसे कि मगर ने उनका पैर पकड़ लिया। वह चिल्लाये, "माँ, मगर ने मेरा पैर पकड़ लिया है। मैं अव क्या करूँ?"

माँ को काटो तो खून नहीं। वह वेचारी क्या करे! उसने घवरा कर लोगों को पुकारा। लोग आएं कि उससे पहले उसने सुना, लड़का कह रहा था,-"माँ, ओ माँ, मैं मर रहा हूं। कम-से-कम मुझे संन्यासी होकर तो मरने दो।"

माँ काँप उठी। उसके अन्दर तूफान उठ खड़ा हुआ। एक ओर वेटे की अन्तिम इच्छा थी, दूसरी ओर माँ की ममता। वह क्या करे? मौत के मुँह में पड़े वेटे की इच्छा को क्या पूरी न होने दे? पर सोचने का समय कहाँ था! उसने दिल कड़ा किया और झट अनुमति दे दी।

इसके वाद जिसकी आशा नहीं थी, वह हो गया। शङ्कर ने जोर लगाया और संयोग देखिये कि उसका पैर मगर के चंगुल से छूट गया।

वह वाहर निकले। माँ के खोये प्राण जैसे लौट आये। पर वेटे

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

को संन्यासी होने की अनुमति मिल चुकी थी। मां के सामने अव कोई चारा न था।

यही शङ्कर आगे चलकर आदिगुरु शंकराचार्य वने, जिन्होंने सारे देश में धर्म का डङ्का वजाया और इतिहास में उनका नाम अमर हो गया।

□

प्रयत्न वगैर सव असम्भव है, यत्न और युक्ति से सव सम्भव है।

—योग वशिष्ठ

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विनोबाजी की साधना

आचार्य विनोवा के पेट में अल्सर था। वह कभी-कभी उन्हें वड़ा हैरान करता। कुछ साल पहले जब उनके पेट में दर्द वहुत बढ़ गया तो डाक्टरों ने उनकी परीक्षा की। अच्छी तरह देखने के वाद वे चिन्तित भाव से वोले, "आपको कुछ दिन के लिए पैदल चलना छोड़ देना चाहिए।"

विनोवाजी ने कहा, "क्यों? मेरे पेट में दर्द है, पैरों में नहीं।"

डाक्टर वोले, "आपकी हालत ऐसी है कि आपको आठ महीने आराम करना चाहिए।"

विनोवा ने कहा, "आपके जाँचने में कहीं चूक रह गई दीखती है, जो आपने चार महीने छोड़ दिये। आपको कहना चाहिए था— मैं वारह महीने आराम करूँ।"

डाक्टरों ने आगे कहा, "आप जो खाना ले रहे हैं, उससे आपको वारह सौ कैलोरी मिलती है। चाहिए बाईस सौ।"

विनोवाजी ने कहा, "आपने खाने की कैलोरी तो जोड़ ली, लेकिन मैं खुले में रोज़ पैदल चलता हूं, मुक्त आकाश के नीचे प्रार्थना करता हूँ, उससे जो कैलोरी मिलती है, वे आपने हिसाव में कहाँ लीं?"

विनोवाजी के इन तर्कों के आगे डाक्टर निरुत्तर हो गये। समझ गये कि उनसे पार पाना असम्भव है। वह अपने मन की करेंगे। डाक्टर निराश होकर चले गये।

डाक्टरों के चले जाने के वाद विनोवाजी को एकान्त मिला तो उन्होंने पेट से पूछा, "क्यों भाई, तुम मुझसे क्यों नाराज़ हो?"

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पेट बोला, "इसलिए कि तुम अनाचारी हो। मैं जितना बोझ सह सकता हूँ, उससे ज्यादा बोझ मुझ पर डालते हो। इसी से मैं तुम्हें तङ्ग करता हूँ।"

विनोबाजी उन दिनों दिन में पाँच बार में पाँच पाव दही लिया करते थे। पेट की बात सुनकर उन्होंने पाँच पाव दही को अठारह बार में लेना शुरू किया। एक कटोरी में थोड़ा-सा दही लेते और चम्मच से धीरे-धीरे इतनी देर में इस्तेमाल करते, जितनी देर में गीता के एक अध्याय का परायण हो जाता।

नतीजा यह हुआ कि एक दिन पेट ने उनसे कहा, "तुम बड़े भले आदमी हो। तुमने मुझ पर बोझ डालना बन्द कर दिया। अब मैं भी तुम्हें हैरान नहीं करूँगा।"

इस घटना को सुनाते हुए विनोबाजी ने बताया कि उनका दर्द अपने आप दूर हो गया।

□

दृष्टि बदलो, सृष्टि बदल जायेगी

—आचार्य सुधांशु

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रान्तिकारी अशफ़ाक का मन्दिर प्रेम

अशफ़ाक के हृदय में धर्मान्धता लेशमात्र के लिए भी न थी। उनके निकट मन्दिर तथा मस्जिद में कोई भेद-भाव नहीं था। उसी दिन जब शाहजहाँपुर में हिन्दु-मुसलमानों में झगड़ा हो रहा था तो आप आर्यसमाज मन्दिर में "विस्मिल जी के साथ ठहरे हुए थे। मुसलमान के एकदल को समाज मन्दिर पर हमला करते आते देख आप पिस्तौल लेकर वाहर आ गए और कहा— "मुसलमानो, मैं एक कट्टर मुसलमान हूँ, किन्तु फिर भी मुझे इस मन्दिर की एक-एक ईंट प्राणों से अधिक प्यारी है। मेरे निकट इसमें तथा मस्जिद में भेद नहीं है। यदि तुम्हें मज़हव के नाम पर झगड़ा ही करना है, तो वाज़ार में जाकर लड़ो। यदि किसी ने भी इस पवित्र संस्थान की ओर आंख उठाई तो गोली का निशाना वनेगा।"

यह देखकर किसी ने भी आगे बढ़ने का साहस न किया और वापिस चले गए।

□

यदि मैं अन्धे को कुएँ के सामने देखूँ तो मेरा चुप रहना पाप है।

—शेख सादी

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अंग्रेज़ी राजद्रोह से गीता रहस्य तक

वंगाल के महान विप्लवी खुदीराम बोस ने मुजफ्फरपुर में कुख्यात अंग्रेज जज किंग्सफोर्ड पर वम फेंका था, उसकी प्रशस्ति में तिलक ने अपने पत्र "केसरी" में दो सम्पादकीय लेख छापे। उन लेखों को अंग्रेज़ कैसे सहन करते। फलतः तिलक पर मुकदमा चला राजद्रोह का। जज डावर अंग्रेज और सभी जूरी भी अंग्रेज थे। वयान होते थे मराठी में। जूरी या जज भला क्या उन्हें समझते होंगे। फिर भी जूरियों ने राय दी कि तिलक को इस अपराध में छह साल देश-निष्कासन की सजा दी जाय। जज डावर इस राय को भला नहीं मानते। फिर भी डावर ने तिलक से कहा, आपको अपनी सफ़ाई में अभी भी कोई वयान और देना है? कोई निवेदन करना चाहते हैं?"

तिलक पूर्ण तेजस्विता से कह उठे, कैसा निवेदन। क्या आप सोचते हैं कि मैं यहाँ आप से दया-क्षमा की भीख मांगने के लिए खड़ा हूँ? हरगिज़ नहीं। सत् के यज्ञ में जो कुछ भी मैंने केसरी में लिखा, वह सोच विचार कर अपना फर्ज़ मानकर ही लिखा - उसके वदले जो भी फैसला आप दें, मैं तत्पर हूँ, उसे झेलने के लिये।"

डावर ने फिर टोका, "आप ने जूरियों की राय तो सुनी है न, क्या उनकी सहमति का आप विरोध करते हैं?"

तिलक ने कहा, "अवश्य मैं उनका विरोधी हूँ। आपके इस इजलास को ही मैं अन्तिम कर्ता नहीं मानता, न इससे कभी न्याय की आशा करता हूँ। वस्तुतः जों एक कर्ता है, इस इजलास और आप सब से भी ऊपर है, उसकी इच्छा के सम्मुख मैं विनत हूँ और

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वह चाहता है कि मैं वाहर न रह कर कैद में लम्वे निर्वासन में रहूँ क्योंकि वही निर्वासन मेरे लक्ष्य-प्राप्ति में सहायक और शक्तिदायक सिद्ध होगा।"

अनन्तर तिलक छः साल के लिए निर्वासन काटने के लिए सुदूर वर्मा की मांडले जेल में जाकर आवाद हो गये। वहाँ भी वे पराभूत या हताश नहीं हुए वरन् देश से सहस्रों मील दूर माण्डले की एक वहुत छोटी कारा कोठरी में वैठे उन्होंने अपना एक दिव्य-ग्रंथ "गीता रहस्य" रचा।

□

वुद्धिमान आदमी को जितने अवसर मिलते हैं उससे अधिक वह वनाता है।

—फ्रॉंसिस वेकन

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपमान के विरुद्ध सीधा संघर्ष

नेताजी सुभाषचन्द्र बोस में सामाजिक सेवा की भावना छात्रावस्था से ही विद्यमान थी, १९१३ में दर्शनशास्त्र के अध्ययन के लिए वे प्रेज़ीडेंसी कालेज (कलकत्ता) में भर्ती हुए, उन्होंने छात्रों का एक वाद-विवाद क्लब चलाया। सभी छात्र उन्हें नेता मानने लगे।

१९१६ के प्रारम्भ में वहाँ पर एक ऐसी घटना घटी जिसने उनके जीवन को एक नया मोड़ दे दिया। कालेज के कुछ अंग्रेज अध्यापक भारतीय छात्रों को घृणा की दृष्टि से देखते थे, और समय-समय पर उनका अपमान कर डालते थे इससे छात्रों में बड़ा रोष उत्पन्न हो गया तनाव बढ़ता ही जा रहा था, कि एक दिन एक अंग्रेज अध्यापक ने भारतवासियों के लिए घोर अपमानजनक शब्दों का प्रयोग किया। इससे सारे छात्र उत्तेजित हो उठे, वे जब बरामदे में एकत्रित होकर शेष प्रदर्शन करने लगे तो एक दूसरे अंग्रेज प्राध्यापक ने उन्हें शान्त करने के बजाय बुरी तरह फटकार दिया, छात्र भड़क उठे, फलस्वरूप उसी शाम छात्रों ने एक अंग्रेज प्राध्यापक को पीट दिया, छात्रों के समूह में सुभाष मौजूद थे। उन्हें स्वाभाविक रूप से छात्रों का नेता मानकर कालेज के अधिकारियों ने फरवरी १९१६ में कालेज से उनका निष्कासन कर दिया, सुभाष ने किसी तरह की क्षमा याचना नहीं की। मातृभूमि का अपमान वे किसी भी तरह सहने को तैयार न थे। इसी तरह की घटनाओं ने उन्हें मातृभूमि की स्वतन्त्रता के लिए लड़ने वाले सैनिकों की अगली पंक्ति में ला खड़ा किया। अन्तिम क्षणों तक उनका उद्देश्य रहा— स्वतन्त्रता के लिए संघर्ष। □

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ब्रह्मचारी की विजय

शास्त्रार्थ का साहस न पाकर मथुरा के पण्डों ने विचार किया कि कोई ऐसी युक्ति करें कि स्वामी दयानन्द सर्वसाधारण की दृष्टि से गिर जायें। विचार के पश्चात् एक स्त्री को इसका साधन वनाया गया। जो भ्रष्टाचार के लिए प्रसिद्ध थी। उसको कहा गया कि "तू किसी रीति से दयानन्द को कलङ्कित कर सके तो जो तू माँगेगी देंगे "उसने ५००/- रुपये माँगे जो स्वीकृत हुआ। परन्तु कहा कि आभूषणों के रूप में पेशगी लूँगी।

वह शृंगार और आभूषणों को धारण करके प्रातःकाल ही स्वामी दयानन्द जी के डेरे पर आई। पण्डे लोग बाहर ठहरे कि अभी कोलाहल करने का अवसर मिलेगा। परन्तु स्वामी जी समाधि में थे। उस स्त्री ने उनके ब्रह्मचर्य की चर्चा सुनी थी उसका चिन्तन करके वह वापिस आ गयी और कहने लगी कि "मैं कुछ नहीं कर सकती मुझे तो डर लगता है। उन्होंने उपहास की बातें करके पुनः साहस दिया, तब वह भीतर गयी परन्तु समाधि न खुली थी उसके मन में न जाने क्या संकल्प उत्पन्न हो रहे थे कुछ देर के वाद वह आभूषण उतारने लगी स्वामी जी ने आँखें खोली तो स्त्री को देखकर अचम्भित हो बोले "माँ तू यहाँ कैसे आयी? वह हाथ जोड़कर भूमि पर सिर नवाकर रो-रो कर कहने लगी "महाराज क्षमा करें। मैं पापिन धनादि के लिए अपना धर्म गँवाती रही। अब भी आभूषणों के वदले मैं हत्यारी - स्वार्थियों के वहकावे में आ गई परन्तु यहाँ पर मेरी मति वदल गई यह सब आभूषण आपको अर्पण हैं, मेरे पाप को क्षमा करें . . . . स्वामी जी ने कहा—"हमें इन आभूषणों की इच्छा नहीं है, तू इन्हें ले जा और अपने काम में लगा। हमारी ईश्वर से प्रार्थना है कि इस समय तुझे जो सुमति आई है यही तेरी आयु पर्यन्त स्थिर रहे।" □

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वज्र मूर्ख से महान विद्वान

वोप़देव रास्ते में एक कुएँ पर सोचने लगे – "मिट्टी के घड़े की रगड़ से जब पत्थर भी घिस सकता है, तब मेरा मस्तिष्क क्या पत्थर से भी कड़ा है कि उस पर शिक्षा का प्रभाव नहीं पड़ेगा?"

अपने गुरुदेव के पास वापस लौट कर उनके चरणों में वोपदेव ने करबद्ध निवेदन किया।

"मुझे एक बार फिर आप अवसर दीजिए, गुरुवर! इस बार में खूब मन से पढ़ूँगा।"

बात सत्य हुई। जिस विद्या को वे १२ (बारह) वर्ष की कोशिश से नहीं सीख सके थे, उसे इस बार उन्होंने अपनी सच्ची लगन से, बात की बात में सीख लिया।

यही वज्रमूर्ख वोपदेव आगे चल कर एक श्रेष्ठ व्याकरणाचार्य बने।

❑

असफल रह जाना ही सफलता की ओर बढ़ने का पहला कदम साबित होगा अगर हम प्रयास बनाये रखें।

—अरस्तु

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आदर्श और नियम

सुप्रसिद्ध क्रांतिकारी रामप्रसाद विस्मिल को जिस दिन फाँसी लगनी थी उस दिन सवेरे जल्दी उठकर वे व्यायाम कर रहे थे। जेल वार्डन ने पूछा। आज तो आपको एक घण्टे बाद फाँसी लगनी है फिर व्यायाम से क्या लाभ? उन्होंने उत्तर दिया। "जीवन आदर्शों और नियमों में वंधा हुआ है। जव तक शरीर में साँस चल रही है तव तक नियमों में व्यवधान को आने देना कहाँ तक उचित है? मैं अपना धर्म निभा रहा हूँ, आप अपना कर्तव्य पूरा कीजिए।" यह सुनकर जेल वार्डन उनके आदर्श और नियम के समक्ष नतमस्तक हो गया।

❑

कहीं भी किसी भी परिस्थिति में रहो, मन में कमजोरी मत ओ दो जहां रहो, मतस्त रहो।

—व्रह्मानन्द सरस्वती

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उत्साह ही जीवन

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संभव

साहस और धैर्य का धनी चार्ल्स लूई नैपोलियन बोनापार्ट विजय अभियान के लिए निकला था। उसे मार्ग में आल्स पहाड़ मिला, जिसे पार करना कठिन था।

वहीं तलहटी में एक बुढ़िया रहती थी। नैपोलियन ने उससे रास्ता पूछा। उसने छूटते ही कहा, "मूर्ख, कितने आदमी इसे पार करने की कोशिश में अपनी जान गँवा चुके हैं, इसलिए ऐसा दुस्साहस मतकर।"

नैपालियन ने बुढ़िया से कहा, "माता, खतरे से आगाह करने के लिए मैं आपका आभारी हूँ, लेकिन मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ कि इसे पार करके रहूँगा।"

बुढ़िया को आश्वस्त करने वाला वह व्यक्ति असाधारण लगा, अतः उसने उसकी हिम्मत को बढ़ाते हुए कहा, "बेटे, साहसी के लिए कुछ भी असम्भव नहीं होता है।"

बुढ़िया का यह वाक्य नैपोलियन के लिए कवच बन गया। उसे हर कठिनाई में यह वाक्य स्मरण हो आता था। एक दिन उसने उस पहाड़ को पार कर अपने शब्दकोश से असम्भव शब्द को सदा के लिए हटा दिया।

□

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धैर्य

एक बार यीशु मसीह अपने कुछ चेलों के साथ एक गाँव से गुज़र रहे थे। रास्ते में एक जगह आठ-दस छोटे-छोटे गड्ढे खुदे देखकर एक चेले ने यीशु मसीह से इन गड्ढों के बारे में पूछा। जवाब में उन्होंने कहा, "किसी व्यक्ति ने पानी की तलाश में इतने गड्ढे खोदे हैं। एक गड्ढे में पानी न मिलने पर दूसरा खोदा और दूसरा न मिलने पर तीसरा। इसी तरह एक के बाद एक इतने गड्ढों को खोदने के बावजूद उसे जब पानी नहीं मिला तो थक-हारकर बैठ गया। उस आदमी में धैर्य का अभाव था। उस व्यक्ति ने इतने गड्ढे खोदने में जितना श्रम तथा समय लगाया, उतना अगर एक ही गड्ढा खोदने में लगाता तो उसे पानी अवश्य मिलता।"

उन्होंने चेलों से कहा, "मनुष्य को चाहिए कि कोई भी काम तन-मन-धन से करने के साथ-साथ धैर्य भी रखे तो उसे परिश्रम के फल की प्राप्ति जरूर होगी।"

□

जैसे नदी बह जाती है और लौट कर नहीं आती, उसी तरह ा और दिन आयु लेकर चले जाते हैं वापिस नहीं आते।

—महाभारत

CC-0 Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साहसी बालक

नदी में हाथ मुँह धुलाते समय अचानक माँ के हाथ से बच्चा फिसल गया। माँ की चीत्कार सुन कर नदी के किनारे खड़े अनेक लोगों का ध्यान उस ओर आकर्षित हो गया। परन्तु बाढ़ से उफनती नदी में कूदने का साहस कोई भी व्यक्ति नहीं कर सका।

परन्तु एक चौदह वर्षीय बालक उन सब का अपवाद था। चीत्कार सुन कर वह भी दौड़ा और बिना कपड़े उतारे ही नदी में कूद पड़ा।

बालक ने गहरे पानी में डुबकी लगाई। वह पानी से उभरा तो बच्चा उस के हाथ में था। अब वह बच्चे को ले कर तट की ओर बढ़ने लगा। उफनती लहरें बार-बार उसे पीछे धकेलती, परन्तु अदम्य साहसी बालक लहरों से लड़ता हुआ बच्चे को ले कर तट पर पहुँच ही गया। कुछ लोगों ने बच्चे को संभाला तथा अन्य कुछ लोगों ने उस साहसी बालक को तट पर खींच लिया। तट पर पहुँच कर बालक भी मूर्छित हो गया।

बच्चे के साथ ही बालक का भी उपचार होने लगा। कुछ समय बाद बालक होश में आ गया।

बच्चे की माँ ने कृतज्ञता स्वरूप बालक के सिर पर हाथ रख कर आशीर्वाद दिया, "ईश्वर तुम्हें इस का फल देंगे।"

यह साहसी बालक थे जार्ज वाशिङ्गटन, जो बाद में चल कर संयुक्त राज्य अमरीका के प्रथम राष्ट्रपति बने। □

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वाभिमानी बालक

धन के अभाव से मनुष्य वहुधा विचलित हो जाता है और अनुचित कार्य करने को भी तैयार हो जाता है। परन्तु अपवाद भी हैं। एक अल्पायु वालक गाँव के अन्य वच्चों के साथ गङ्गा के उस पार मेला देखने गया। शाम को वापस आते समय जब सभी साथी गंगा किनारे पहुँचे तो वालक लालवहादुर ने नाव के किराए के लिए जेव में हाथ डाला, परन्तु वहाँ एक पैसा भी नहीं था। वालक वहीं रुक गया। उस ने अपने साथियों से कहा कि वह और कुछ देर तक मेला देखना चाहता है। लालवहादुर नहीं चाहता था कि साथियों के समक्ष वह दीन वने। उसका स्वाभिमान उधार लेने की अनुमति भी नहीं देता था।

जब वालक ने देखा कि उसके साथी पार जा चुके हैं तो उस ने कपड़े उतारे और उन को सिर पर लपेट लिया। उस समय गङ्गा में वाढ़ आई थी। बड़े से बड़ा तैराक भी आधा मील चौड़ा पाट पार करने का साहस नहीं कर सकता था। पास खड़े मल्लाहों ने भी उसे रोकने की कोशिश की।

परन्तु वालक लालवहादुर ने एक न सुनी और ख़तरों की तनिक भी परवाह न कर यह स्वाभिमानी वालक गङ्गा में कूद पड़ा। वहाव काफ़ी तेज़ था, पानी भी गहरा था और मल्लाहों ने भी उसे नाव पकड़ लेने का अनुरोध किया, परन्तु वह वालक तैर कर थोड़ी ही देर वाद नदी के दूसरे किनारे पहुँच गया। यही स्वाभिमानी वालक लालवहादुर शास्त्री के नाम से प्रख्यात हुआ।

□

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महिला का पुरुषार्थ

हाथरस (उत्तरप्रदेश) के पास सासनी नाम का एक कस्वा है। उसके समीप जंगल में एक फूटे खण्डहर वाली झाड़ियों से भरी एक जमीन थी। किसी ने परमार्थ कार्य की योजना लेकर उसे वनाया होगा। पर वह कार्य अधूरा ही रहा। उसी क्षेत्र की एक वाल विधवा लक्ष्मी देवी इस सोच में थी कि शेष जीवन वैधव्य के दुर्भाग्य का रोना रोते हुए विताने की अपेक्षा उसे सेवा कार्य में लगाया जाय। उन्हें अपने लिए सर्वसुलभ सेवा कार्य नारीं शिक्षा में संलग्न हो जाना लगा।

उस झाड़ियों वाले खण्डहर को उन्होंने साफ़ किया और किसी प्रकार योजना वनायी कि वहाँ एक छोटी पाठशाला चल सके। छात्राएँ कहाँ से आयें इस प्रश्न का हल भी उन्हें ही करना था। वे प्रातःकाल स्वयं ही समीपवर्ती गाँवों में जाकर वहाँ से छात्राएँ साथ लातीं और शाम को उन्हें घर पहुँचाने भी स्वयं जाती।

इस निष्ठा को देखकर ग्रामवासी प्रभावित हुए और विद्यालय को समुन्नत वनाने के लिए उत्साह भरी सहायता करने लगे। साधन जुटाने लगे।

समयानुसार सासनी का कन्या गुरुकुल सुव्यवस्थित होता चला गया। आज वह नारी शिक्षा का एक मात्र केन्द्र है। जो भी उधर जाता है एक एकाकी महिला द्वारा आरम्भ किये उस पुरुषार्थ परमार्थ को देख कर दंग रह जाता है। □

CC-0 Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जब मातृभमि धन्य हो उठी

तीन वीर राजपूत वीरांगनाएँ राजमाता कर्मदेवी, राजकुमारी कर्णवती तथा उनकी पुत्रवधू कमलावती की वीरता की गाथा सुन कर कौन रोमांचित हुए विना रहेगा। जिस समय मेवाड़ पर अकवर ने आक्रमण किया, तो राजपूताने के केलवाड़ा प्रदेश की राजमाता कर्मदेवी ने अपने सोलह वर्षीय पुत्र को महाराणा उदयसिंह की सहायता करने का आदेश दिया।

नरेश पुत्र ने उत्तर दिया—"माँ महाराणा उदयसिंह ने मुझे युद्ध का आमन्त्रण नहीं भेजा है"

"तुझे बच्चा समझकर उन्होंने तुझे नहीं वुलाया, तू मेरा पुत्र है, जन्मभूमि का आह्वान राणा के आमन्त्रण से अधिक मूल्यवान हैं।" शूरवीर पुत्र ने माता का आदेश स्वीकार किया और सेना लेकर चित्तोड़ की ओर प्रस्थान किया। माँ ने पुत्र को रणभूमि में भेज तो दिया, परन्तु वह जानती थी कि यद्यपि उसका वेटा वीर है, फिर भी अभी वालक है, उसे युद्ध स्थल का अनुभव नहीं है। वह अपनी पुत्री राजकुमारी कर्णवती और पुत्रवधू से स्वयं वेटे की सहायता के लिये जाते समय मिलने आयी, तो उन्होंने राजमाता के चरण पकड़ लिए। वे वोली हमें आपने स्वर्ण कंकण पहनने के साथ-साथ तलवार सम्भालने की शिक्षा भी दी है। हम भी आपके साथ मातृभूमि की रक्षा करने, युद्ध भूमि में जायेंगी। राजमाता ने दोनों को आज्ञा दे दी और तीनों क्षत्राणियाँ घोड़े पर वैठक अस्त्र-शस्त्र से सुसज्जित होकर चल दीं।

नरेश पुत्र ने जो शूरता और रण कुशलता का परिचय दिया, उससे प्रसन्न होकर महाराणा ने उसे द्वितीय सेनाध्यक्ष बना दिया।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अकवर ने एक विशाल सेना उसके पुत्र के सम्मुख भेज दी और स्वयं घूमकर एक पहाड़ी मार्ग की ओर पीछे से आक्रंमण करने चल पड़ा। जैसे ही वह एक तङ्ग स्थान पर पहुंचा, कहीं से गोलियों की वौछार आरम्भ हो गयी। अकवर के सैनिक एक-एक करके गिरते जा रहे थे। जव वादशाह को एक गुप्तचर ने वताया कि यह गोलियों की वौछार एक पहाड़ी के पीछे से तीन स्त्रियाँ कर रही हैं, तो वह आश्चर्य चकित रह गया। राजमाता ने युद्ध स्थल का त्तिरीक्षण कर यह समझ लिया था कि इस मार्ग से पुत्र पर शत्रु आक्रमण कर सकता है, और इसी स्थान पर उन्होंने अपनी पुत्री व पुत्रवधू के साथ, मोर्चा वना लिया था।

सैनिक गोली की वौछार से गिरते जा रहे थे, परन्तु फिर भी वरावर आगे वढ़ते जा रहे थे। अचानक एक गोली लगी और राजकुमारी कर्णवती गिर पड़ी। राजमाता ने समय नप्ट करना उचित न समझा, क्योंकि एक-एक पल कीमती था। उन्होंने एक दृष्टि अपनी पुत्री पर डाली और पुनः गोली की वर्षा-करने में लग गई। दो स्त्रियाँ इतनी विशाल सेना का कब तक सामना करतीं एक-एक कर दोनों गिर पड़ीं और तीनों वीर राजपूतानियाँ मातृभूमि पर न्यौछावर हो गयीं।

उसी समय वीर पुत्र वहाँ आ पहुँचा और अपनी माँ, वहन व पत्नी को देखकर विचलित हो गया। माँ ने कहा पुत्र यहाँ समय नप्ट न कर, जा मातृभूमि की रक्षा कर और अपने कर्तव्य पर अटल रह। हम सव स्वर्ग में तेरी प्रतीक्षा करेंगी। यह कहकर सवने पुत्र से विदा ली। माँ की ललकार सुन पुत्र शत्रुदल पर टूट पड़ा और मातृभूमि की रक्षा करते हुए वीरगति को प्राप्त हुआ। □

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तन्मयता बिना प्रीति नहीं

एक दिन अकवर वादशाह दिन-भर यात्रा करते हुए वहुत दूर निकल गये। चलते-चलते नमाज का समय हो गया। तव मार्ग में ही एक ओर नमाज़ का वस्त्र विछाकर दो-जानु हो गए। उधर एक नवयुवती अपने पतिदेव को खोजती आ रही थी। उसके पतिदेव प्रातः से गए घर नहीं लौटे थे। यह स्त्री अपने विचार में निमग्न पति-वियोग में उन्मत्त इधर-उधर दृष्टि डालती जा रही थी। उसने नमाज़ का कपड़ा देखा नहीं और उसी के ऊपर पग रखती आगे बढ़ गई। अकवर को उसकी गुस्ताख़ी पर क्रोध तो आया, परन्तु चुप्पी साधे रखी। थोड़ी ही देर में जव वह युवती अपने पतिदेव के साथ लौटी तो अकवर कहने लगा— "तुझे दिखा नहीं मैं नमाज़ में, प्रभु-भक्ति में था? तुझे जाते समय-नमाज़ भी नज़र नहीं पड़ी? पग रखती चली गई?"

युवती ने बड़े धैर्य से एक दोहा पढ़ा—

"नर राची सूझी नहीं, तुम कस लंख्यो सुजान।

कुरान पढ़त वौरे भयो, नाहिं राच्यो रहमान॥

"मैं तो अपने पतिदेव की खोज में गुम हो चुकी थी, जिससे मुझे कुछ सूझा नहीं, परन्तु तुम तो प्रभु-भजन में लीन थे, तुमने मुझे कैसे देख लिया? मालूम होता है कि कुरान ही पढ़कर वौखला गए हो। भगवान् में अभी प्रीति नहीं हुई।"

अकवर यह उत्तर सुनकर अवाक् रह गया और वतलाया जाता है कि वह अक्सर लम्बा श्वास लेकर यही दोहा वार-वार दोहराया करता था। □

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संकल्पशक्ति से विजय

जापान के सेनापति नोवुनागा की सबसे बड़ी विशेषता यह थी कि वह कम से कम साधनों और थोड़े से सैनिकों को लेकर कठिन से कठिन मोर्चे पर शत्रु के छक्के छुड़ाने का सामर्थ्य रखता था। उसकी सूझ-वूझ असाधारण थी और उसका सैन्य-सञ्चालन अद्‌भुत था।

एक वार युद्ध में दुर्भाग्यवश नोबुनागा को पीछे हटना पड़ा। उसके सैनिक वड़ी संख्या में हताहत हुए। शत्रु प्रवल था और उसके सैनिकों की संख्या भी अधिक थी। नोबुनागा को इस पराजय से गहरा आघात लगा। उसके बचे हुए सैनिक थककर निराश हो चुके थे। उनमें लड़ने का साहस और धैर्य नहीं रह गया था।

नोवुनागा की चिन्ता का पार नहीं था। वह एकान्त में वैठकर अपने सैनिकों में नये प्राण फूँकने का उपाय सोच रहा था, किन्तु कोई युक्ति नहीं सूझ रही थी। एक दिन अचानक उसके दिमाग में कोई वात आई और वह खुशी से उछल पड़ा। उसने फौरन अपने सैनिकों को बुलाया और कहा—"हम मन्दिर में देवता के पास चलेंगे। वहाँ मैं एक सिक्के को तीन बार उछालूँगा और आगे क्या करना है, इसका फैसला करूँगा। अगर सिक्का अधिक बार चित्त गिरा तो हम इसे देवता का आदेश मानकर फिर युद्ध करेंगे और विजयी होंगे। यदि अधिक वार पट गिरेगा तो हम उसे भी देवता की इच्छा मानकर युद्ध-भूमि छोड़कर वापस लौट जायेंगे।

सैनिक राज़ी हो गये। नोबुनागा सैनिकों के दल के साथ मन्दिर में पहुँचा। उसने सिक्का उछाला। वह तीनों वार चित्त

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गिरा। सारे सैनिक खुशी से चिल्ला उठे — "जीत! जीत! जीत!" सबके चेहरे खिल उठे। सबकी आँखें चमक उठीं।

अगले दिन पौ फटने से पहले ही नोवुनागा ने शत्रु पर आक्रमण किया। शत्रु-सेना निश्चिन्त थी। घमासान लड़ाई हुई। नोवुनागा अपने सैनिकों का हौसला बढ़ाता रहा। अन्त में वह विजयी हुआ।

विजय-समारोह में खुशी से नाचते सैनिकों को सम्बोधित करने के लिये जब वह उठा तो शान्ति छा गई। नोवुनागा ने कहा — "मेरे वीर सैनिको! आज तुम्हारी संकल्प-शक्ति ने पराजय को विजय में बदल दिया। अब एक रहस्य भी तुम्हारे सामने खोल देना चाहता हूँ। कल मन्दिर में देवता के सामने मैंने जो सिक्का उछाला था, उसकी दोनों पीठ पर एक ही निशान था। अगर मैं ऐसा न करता तो तुम्हारे मन में जीत का विश्वास कभी न पैदा होता। तुम्हारी संकल्प-शक्ति जगाकर ही मैंने यह हारा हुआ युद्ध जीत लिया।"

□

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मैं आपका कृतज्ञ हूँ

घटना पुरानी है। सतारा नगर में देवराव अनपढ़ नाम का एक बड़ा जागीरदार तथा साहूकार रहता था। उसके कई नौकर चाकर थे। उनमें से एक था राम प्रभूणे। राम बहुत गरीब था। वह बुद्धिमान, तेजस्वी, स्वाभिमानी और सत्यनिष्ठ था। परन्तु उसके सद्गुणों के अँगारे दरिद्रता की राख के नीचे दब कर रह गये थे।

एक दिन राम साहूकार की सेवा में लगा था साहूकार बहुत बिगड़े और उन्होंने कहा, "राम, यह क्या बेवकूफी है? किधर देख रहे हो? पानी कहाँ डाल रहे हो? ठीक मेरे हाथों पर क्यों नहीं डालते हो?"

राम ने विनय पूर्वक कहा, "क्षमा कीजियेगा महाराज, मुझ से भूल हो गयी। आपके कान की बाली में जो तेजस्वी मोती हैं, उनमें मेरी नज़र अटक गयी थी।"

तब साहूकार ने उपहास की हँसी हँसते हुए कहा, "मूर्ख कहीं का, एक-एक मोती हज़ार रुपयों का है। तुझ जैसे दरिद्र के सपने में भी वैसी वस्तु प्राप्त नहीं हो सकती। चल डाल पानी हाथों पर। कभी तुम्हारे बाप-दादाओं ने . . . .।"

उनकी बात को वहीं काटकर राम ने कहा, "देखिए महाराज, मेरे बाप-दादाओं का उद्धार करने की कोई आवश्यकता नहीं है, यह धरा आपका पानी का लोटा और यह धरी आपकी नौकरी। जब आपकी जैसी बाली कान में पहनूँगा तब ही आपको मुँह दिखलाऊँगा।" राम का स्वाभिमान जाग उठा – मन में दृढ़ निश्चय का उदय हुआ।

CC-0 Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उन दिनों में न आज जैसे प्रशस्त मार्ग थे और न यातायात के सुखद साधन। फिर राम के पास प्रवास खर्चे के लिए फूटी कौड़ी तक नहीं थी। धनी यात्रियों की नौकरी-चाकरी करता हुआ, चार महीनों वाद काशी पहुँचा। वहाँ न रहने का ठिकाना न भोजन का प्रवन्ध। परन्तु वलवती इच्छा दुर्गम मार्ग को सुगम बनाती है। राम की एक विद्वान तथा दयालु आचार्य से भेंट हो गयी। उनकी कुटी में वह रहने लगा। वह पुआल बिछाकर सोता था। अनेक वार यह एक जून रोटी खाता था और दूसरे जून गङ्गाजल पीता था। परन्तु पढ़ाई के सिवा वह अन्य किसी वात की कोई चिन्ता नहीं करता था। बारह वर्षों तक वह सतत् अध्ययन करता रहा। व्याकरण शास्त्र, तर्कशास्त्र, अर्थशास्त्र, तथा न्यायशास्त्र में वह पारंगत हुआ। वड़ी उपाधियाँ प्राप्त कर वह पूना लौट आया। सब लोग उसे रामशास्त्री कहनेलगे।

रामशास्त्री प्रभूणे की विद्वत्ता देखकर पूना के सव विद्वान बहुत प्रभावित हुए। नाना साहव पेशवा ने उन्हें उच्चपद प्रदान किया। शासकीय अधिकारी के रूप में वे जव सतारा पहुंचे तब वृद्ध साहूकार देवराव अनपढ़ ने उनका बहुत अधिक सत्कार किया। उन्होंने अपने पूर्व व्यवहार के लिए क्षमा-याचना की।

तव रामशास्त्री ने विनय पूर्वक कहा, "जी नहीं यह बात आप अपने मन से निकाल दें। मैं तो समझता हूँ कि मैं आज जो भी कुछ वना हूँ आपकी वदौलत वना हूँ। आपने उस समय मुझे न झकझोरा होता तो न मेरा स्वाभिमान जाग उठता, न मैं दृढ़ निश्चय करता और न यश का सोपान वढ़ता। मैं आपका कृतज्ञ हूँ।"

□

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पत्नी का संकल्प

मालव देश की राजकुमारी विद्योत्तमा अपने रूप व विद्वता के लिए प्रख्यात थी, उस विदुषी का यह प्रण था कि जो युवक शास्त्रार्थ में उसे हरा देगा उसी से वह अपना विवाह करेगी।

अनेक विद्वानों ने किस्मत आज़माई, परन्तु राजकुमारी को कोई न हरा सका, अन्त में पण्डितों ने आत्मग्लानि से पीड़ित होकर एक कुटिल चाल चली, उन्होंने एक मूर्ख की तलाश शुरू कर दी, एक जंगल में यात्रा करते समय उनकी दृष्टि एक युवक पर पड़ी, जो उसी डाल को काट रहा था, जिस पर बैठा था।

पण्डितों को वाँछित युवक मिल गया, उन्होंने उसे नीचे उतारा और कहा, – तुम बिलकुल मौन रहना, हम तुम्हारा विवाह राजकुमारी से करवा देंगे।"

पण्डितों ने उस युवक को सुन्दर वस्त्र पहनाए और शास्त्रार्थ के लिए विद्योत्तमा के पास ले गए। युवक का मौन व्रत होने के कारण शास्त्रार्थ संकेतों से होने लगा।

पण्डितों ने एक मत से युवक के मूर्खतापूर्ण संकेतों की ऐसी व्याख्या की कि विद्योत्तमा को हार माननी पड़ी और उस से विवाह कर लिया।

कुछ दिनों तक युवक मौन रहा, तब तक सब ठीक था, परन्तु एक दिन वह ऊँट का गलत उच्चारण कर बैठा, तब विद्योत्तमा को सच्चाई का पता चल गया।

एक बार तो क्रोधित विद्योत्तमा ने अपने पति को भली बुरी कही पर चूँकि वह पति के रूप में ग्रहण कर चुकी थी उस विदुषी

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नारी ने हार नहीं मानी। दूसरे ही क्षण संकल्प किया कि इसी महामूर्ख को महापण्डित बनाऊँगी।

अपने संकल्प के अनुसार युवक को पढ़ाना प्रारम्भ कर दिया और कठोर परिश्रम कर उस विदुषी पत्नी ने अपने पति को महान् विद्वान् वना दिया कालान्तर में यही युवक महाकवि कालिदास के नाम से विख्यात् हुआ।

❑

उचित अवसर के अभाव में योग्यता का मूल्य वहुत कम रह जाता है।

—नेपालियन

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मातृभूमि को समर्पित

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जब आसू सूख गये

लोकमान्य वालगङ्गाधर तिलक को भारत से निर्वासित करके मॉडले की जेल में वन्द कर दिया गया। 'गीतारहस्य' नाम की अमर कृति उसी जेल में लिखी गई। जव वे माँडले की जेल में थे, तभी इधर भारत में उनकी पत्नी सत्यभामा की ५५ वर्ष की वय में मृत्यु हो गई। भारत से तार द्वारा यह दुःखद समाचार माँडले के जेलर को भेजा गया। माँडले का जेलर तिलक की विद्वत्ता और आचार-व्यवहार की पवित्रता को देखकर उनका श्रद्धालु भक्त बन गया था। उस तार को पढ़कर उसे आघात लगा और अपने मन में निश्चय किया कि इस दुःखद समाचार को देने के लिए मुझे स्वयं जाना चाहिए; उनके दुःखी हृदय को सांत्वना के दो शव्द कहकर धैर्य भी वँधाना चाहिए।

जेलर तार का कागज़ हाथ में पकड़े तिलक के कमरे पर पहुँचा। तिलक अपने ग्रन्थ के लेखन में व्यस्त थे। जेलर ने तिलक का अभिवादन करके तार का कागज़ उनके आगे रख दिया। तिलक ने उसे पढ़ा और उल्टा करके सामने की पुस्तक पर रख दिया। तिलक गम्भीर और निस्तब्ध भाव से बैठे रहे। जेलर का अनुमान था कि देश से निर्वासित होने से ही तिलक का हृदय खिन्न है और उसपर भी जीवनसाथी का वियोग एक वज्रपात के समान होगा। इस स्थिति में वे वहुत दुःखी और विह्वल होंगे तो मैं उनको सान्त्वना के लिए दो शव्द कहूँगा। किन्तु वहाँ दृश्य ही कुछ और था।

जेलर ने आश्चर्य से तिलक की ओर देखकर पूछा—'आपने इस तार को पढ़ा है?' तिलक ने शान्त भाव से उत्तर दिया—"हाँ, मैंने देख लिया है।" जेलर ने कहा, "इसमें आपकी पत्नी की मृत्यु

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का दुःखद समाचार है।" तिलक ने उत्तर दिया, "हाँ, यही वात है।" जेलर ने कहा—"मैंने अपने जीवन में आप-जैसा कठोर व्यक्ति नहीं देखा, जिसकी आँखों से अपनी पत्नी के मरने पर दो आँसू भी न गिरे।" जेलर के शब्दों ने तिलक को झकझोर डाला। तिलक ने कहा—"मेरे सम्वन्ध में तुम्हारी यह धारणा मेरे साथ न्याय नहीं है। मैं भी संसार के दूसरे गृहस्थियों के समान ही अपनी पत्नी से अनुराग रखता था। इस संसार से उसकी विदाई मेरे लिए अति दारुण और दुःखदायी है। किन्तु उसके इस वियोग के अवसर पर आँसुओं का न गिरना हृदय की कठोरता नहीं है, अपितु जेलर! वास्तव में वात यह है कि मेरी आँखों में जितने भी आँसू थे, उन्हें मैं भारतमाता की दुःखद अवस्था पर वहा चुका हूँ। अव मेरी आँखों में कोई आँसू नहीं रहा जो मेरी पत्नी के मरने पर निकलकर वाहर आता।"

मातृभूमि के प्रति कितनी भावप्रवणता ऐसे वलिदानियों के तप का परिणाम है हमारी स्वतन्त्रता इस सत्य को हत कव स्वीकार करेंगे? प्रश्न तो यह है।

□

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अब्दुल हमीद का अनुपम शौर्य

१९६५ के भारत-पाक में हमारे सैनिकों ने शत्रु के भारी आक्रमण को समाप्त कर दिया। उसके १५ पैटन टैंकों पर कब्जा किया और उससे भी अधिक को नष्ट कर डाला। पाकिस्तान की प्रसिद्ध प्रथम आर्मड डिवीजन को मुँह की खानी पड़ी।

इस युद्ध में पाकिस्तानियों के आक्रमणों के विफल होने, बड़ी संख्या में पाकिस्तानी टैंकों का विनाश होने और १५ पैटन टैंकों के चालकों द्वारा आत्मसमर्पण से पाकिस्तानी हिल गये। पाकिस्तानी आमर्ड डिवीजन के बड़े-बड़े अफ़सर इसीलिए युद्ध के क्षेत्र में आये। उनके बख्तरबन्द डिवीजन के जी.ओ.सी. तथा तोपखाने के कमांडर मारे गये, जबकि विग्रेडियर के शव को भारतीय सेना ने पूरे सैनिक सम्मान के साथ दफ़नाया।

इस युद्ध में भारतीय वीरों ने बहुत ही वहादुरी दिखाई। हवलदार अब्दुल हमीद ने भी असाधारण वीरता दिखाते हुए वीरगति प्राप्त की।

हवलदार अब्दुल हमीद ने शत्रु के चार पैटन टैंकों को एक भारतीय कम्पनी की ओर आते देखा। वे अपनी जीप एक टीले के पीछे ले गये और उन टैंकों के इतने पास पहुँच गये कि उन्हें अपनी गन का निशाना बना सकें। नजदीकी मार से पहला टैंक एकदम ही समाप्त हो गया। दूसरे टैंक ने अपनी तोप की नाल घुमाई ही थी कि उसे भी समाप्त कर दिया। हवलदार हमीद ने वीरगति पाने से पूर्व तीसरे टैंक को भी वहुत हानि पहुँचाई। चौथा पाकिस्तानी पैटन टैंक के गोले से वह वीर सदा के लिए इस संसार से विदा हो गया उसकी इस वहादुरी को देखकर शत्रु के पैर उखड़ गये। भारतीय सेना की जीत हुई। अब्दुल हमीद को परमवीर चक्र से अलंकृत किया गया। □

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आजाद हूँ और आजाद ही रहूँगा

"आजाद हूँ और आज़ाद ही रहूँगा" का उद्घोष करने वाले महान क्रांतिकारी चन्द्रशेखर आजाद चाहते थे कि लाहौर असेंवली पर वम फेंकने वाले क्रांतिकारी पुलिस की पकड़ में हरगिज़ नहीं आयें और वे भी "आजाद" ही बने रहें।

आज़ाद ने असेंवली पर वम फेंकने वाले क्रांतिकारियों को सुरक्षित स्थान पर "उड़ा ले चलने" की वाकायदा तैयारी भी कर ली थी, मगर इस वमकाण्ड के सूत्रधार सरदार भगतसिंह ने उनसे सहमत न होने से योजना पर अमल नहीं हो सकता। शहीदे आज़म चाहते थे कि वे बमकांड के क्रांतिकारी पकड़े जायें और उनके खिलाफ मुकदमा चले ताकि मुकदमें की जिरह के दौरान क्रान्तिकारी अपने उदात्त सिद्धान्तों और विचारधारा की व्याख्या के ज़रिए जन-जन तक अपना सन्देश पहुँचा सकें।

उच्च ब्राह्मण कुल में जन्मे आज़ाद को क्रान्तिकारी साथी पण्डितजी" कहकर पुकारा करते थे कई वार वे हँसी मजाकं में हृष्ट-पुष्ट आज़ाद से कहते, "पण्डितजी! आपको फांसी पर टांगने के लिए तो वहुत मोटे रस्से की ज़रूरत पड़ेगी. . . " तव आज़ाद का जवाव होता था दुश्मन की गोलियों का हम सामना करेंगे। आज़ाद ही रहे हैं और आज़ाद ही रहेंगे।

२७ जनवरी १९३१ को इलाहावाद में उन्हें पुलिस ने घेर लिया तो वह अपनी कनपटी पर गोली चलाकर हमेशा-हमेशा के लिए आज़ाद हो गये। इस प्रकार उन्होंने आजाद हूँ, आज़ाद ही रहूँगा के अपने जीवन के ध्येय को पूरा कर दिखाया। □

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शहीद की सच्ची माँ

सन् १८९७ में पूना शहर में प्लेग का प्रकोप हुआ। उसके निवारण का वहाना वना कर तत्कालीन अंग्रेज सरकार ने ऐसे कड़े कदम उठाये कि, जनता त्राहि-त्राहि कर उठी।

'मि. रेण्ड' नामक एक अंग्रेज अधिकारी इस अपमान जनक दुर्व्यवहार में सवसे आगे था। उन दिनों उसका अत्याचार करने में वड़ा नाम था।

अमर शहीद दामोदर चाफेकर, वालकृष्ण चाफेकर और वासुदेव चाफेकर ने अंग्रेजों के अत्याचारों का वदला लेने का निश्चय किया और २२ जून, सन् १८९७ ई. को मि. रेण्ड और मि. एजर्स्ट को दिन-दहाड़े गोलियों से उड़ा दिया। मनमाने मुकदमें में इन तीनों को सरकार ने फाँसी की सजा सुना दी।

चाफेकर-वन्धु अपनी माता की तीन ही सन्तानें थीं और वे तीनों के तीनों फाँसी पर चढ़ गए।

इस घटना से देश में उनकी माँ के प्रति वहुत गहरी सहानुभूति उमड़ी। सवकी आँखे भर गईं वे ख़ून का घूट-पीकर रह गए।

विश्व प्रसिद्ध स्वामी विवेकानन्द जी महाराज की प्रमुख शिष्या श्रीमती निवेदिता देवी उस माँ को सांत्त्वना देने के विचार से पूना पहुँची उनका अनुमान था कि चाफेकर साहव की माँ बहुत दुःखी होगी। तीनों-के-तीनों पुत्र मारे गए थे। दिन-रात वह माता अपने पुत्रों के लिए आँसू बहाती होगी। बुढ़ापे की लाठी ही टूट गई थी।

किन्तु जब निवेदिता देवी उनके मकान पर पहुँची तो उनके स्वागत में वह हाथ जोड़कर सामने खड़ी मिली। उस वीरमाता के

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धैर्य को देखकर सिस्टर (शिष्या) निवेदिता की आँखें सहसा उमड़ आईं।

माँ ने सिस्टर निवेदिता से सादर कहा– "सिस्टर! आप तपस्विनी हैं। आपने तो संसार की सब मोह-माया त्याग दी है, फिर आपकी आँखों में ये मोह के आँसू क्यों? आप विश्वास रखें, मुझे तो गौरव है कि, मेरे तीनों बेटे देश के लिए बलिदान हुए। दुःख है तो केवल इतना ही कि मेरी और कोई सन्तान नहीं है, जिसे मैं इस देश को दे सकूँ।"

इतना कहते-कहते उनकी छाती तन गई। आँखें लाल हो उठीं। मुट्ठियाँ बन्ध गईं। गर्दन ऊँची हो गई।

सिस्टर-निवेदिता से न रहा गया। वह झुक पड़ीं उस माँ के चरणोंमें। गद-गद-कंठ से वह बोली–

"धन्य हो माँ! तुम्हीं सच्ची माँ हो—भारतवर्ष की। हे भारतमाता! तुम्हें शत-शत प्रणाम।"

□

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महाराणा की तड़प

महाराणा मृत्यु-शय्या पर पड़े छटपटाकर व्याकुलता से करवट बदल रहे हैं। उनकी इस समय की अधीरता उनके सामन्तों और सैनिकों को चकित और दुःखी कर रही है। उनके आश्चर्य का कारण यह था कि महाराणा जीवन-भर मृत्यु से कभी भयभीत और आतंकित नहीं हुए। किन्तु आज जब मृत्यु सम्मुख है तो वे उसे देखकर व्याकुल और कातर हैं—सो क्यों?

अन्ततः एक साहसी सामन्त ने महाराणा से हाथ जोड़कर पूछ ही लिया— "महाराणा! हम लोगों ने जीवन-भर आपको भयंकर-से-भयंकर संकट के समय भी कभी व्याकुल और परेशान नहीं देखा। आप मृत्यु को सामने देखकर सदा मुस्कराए हैं, पर आज जब वस्तुतः जीवन के अवसान का समय आगया प्रतीत होता है तब आप वहुत व्याकुल प्रतीत होते हैं। यदि कोई ऐसी मानसिक चिन्ता हो जो आपको अशान्त कर रही है, तो आप हमें आदेश दीजिये। हम आपके सेवक सिर-धड़ की बाज़ी लगाकर भी आपकी उस इच्छा को पूरा करेंगे।"

सामन्त की इस बात को सुनकर महाराणा ने उत्तर दिया— "तुम ठीक कहते हो, एक साधारण-सी घटना की स्मृति ने मुझे अशान्त कर रक्खा है और वह मुझे शान्ति से इस संसार से विदा नहीं होने देती।"

वात इस प्रकार है। एक दिन मैं इसी झोंपड़ी में बैठा था। सामने की झोंपड़ी से मेरा पुत्र अमरसिंह निकला। अब ये झोंपड़ियाँ हैं, कोई महल नहीं। इनके द्वार भी ऐसे हैं जिनमें से झुककर आना-जाना पड़ता है। निकलते हुए अमरसिंह की पगड़ी एक बाँस

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में उलझकर गिर गई। इस साधारण-सी बात पर वह आगबबूला हो गया और अपनी तलवार से रस्सी के बंधन काटकर बाँस खींचकर पृथिवी पर फेंक दिया। इस घटना का मेरे ऊपर यह प्रभाव है कि मेरी मृत्यु के बाद अमरसिंह इन झोंपड़ियों में न रह सकेगा, वह महलों में रहेगा। फिर महलों की तथा घास-पत्तों और कुशा के बिछौनों की क्या संगति? शानदार पलँग आएँगे और उनपर मख़मली गद्दे बिछेंगे। इसके साथ ही खाने की पत्तलों की जगह चमचमाते सोने-चाँदी के थाल होंगे। जब ये सुख-सुविधा की वस्तुओं के अभ्यस्त हो जावेंगे, फिर मुग़लों के साथ सीमित शक्ति रहते हुए संघर्ष करने में जो तप अपेक्षित है, उससे चित्त कतराएगा और परिणाम यह होगा कि अन्य राजपूतों के समान बादशाह की आधीनता स्वीकार कर आराम से जीवन बिताने का निर्णय किया जाएगा। इस प्रकार मेरी सारी तपस्या व्यर्थ चली जाएगी। बस, यही बात है जो मुझे चैन से नहीं मरने देती।"

सब साथियों ने राणा की चिन्ता सुनकर म्यान से तलवारें खींच ली और प्रतिज्ञा की —"राणा! जब तक हम जीवित हैं, आपके पुत्र को बादशाह के आगे नहीं झुकने देंगे।"

□

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मेजर रणवीर सिंह का अमर बलिदान

घटना अखनूर क्षेत्र की है। मेजर रणवीर सिंह को सेनापति ने चौक पर अधिकार करने का आदेश दिया गया। मेजर रणवीर सिंह ने तीन सैनिकों को शत्रु का समाचार लाने का आदेश दिया। उन्होंने आकर वताया कि रात्रि में भी शत्रु पूर्ण जागरुक तथा पूरी शक्ति के साथ तैयार है। तव कैसे उन पर विजय प्राप्त की जाये? मेजर यह सोचते रहे अचानक ही उन्हें एक उपाय सूझा। उसने तुरन्त ही जवानों में से तीस जवान छाँटे और उन्हें एक ओर चौकी के ऊपर रेंग-रेंग कर चढ़ने का आदेश दिया और दूसरी ओर से कुछ भेड़ों के गले में लालटेन वाँधकर तीन सैनिकों के साथ भेजीं। शत्रु भी जागरुक था उसने यह समझकर कि शत्रु आ रहा है। भेड़ों पर तोपें तथा वारूद वरसाना आरम्भ कर दिया। उनके साथ के सैनिक उन्हें आगे की ओर वढ़ाते हुए धीरें-धीरे स्वयं भी वढ़ते रहे। दूसरी ओर से मेजर रणवीर सिंह ने यह देखकर कि शत्रु पूरी तरह से उस ओर ही लगा है, आक्रमण कर दिया। जब तक शत्रु इस चाल को समझकर तोपों के मुँह को उस ओर फेरे तव तक उसके आधे से अधिक सिपाही मारे गए।

अपने साथियों की यह दुर्दशा देखकर पाकिस्तानी सैनिक रूक न सके और वे भाग लिये। परन्तु जाते-जाते वह एक बहुत बड़ी हानि कर गये? जब वे ज़ा रहे थे, तव उनमें से किसी की तीन गोलियाँ मेजर रणवीर सिंह के सीने में लगीं, जिससे वे धराशायी हो गये?

अपने नेता की यह दशा देखकर भारतीय सिपाही हौसँला खोकर उसकीसुरक्षा की वात सोंचने को विवश हो गये। इस पर

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मेजर ने कहा – "मेरी चिन्ता मत करो। भागते हुए दुश्मन पर वाँयी ओर से हमला करें"। साथियों में जोश आया और उन्होंने वैसा ही किया। तव तक मेजर रणवीर सिंह एक साथी का सहारा लेकर दुश्मन से खाली कराई चौकी पर पहुँच गया, जहाँ जाकर उसने अपने हाथों से तिरंगा झण्डा लहरा दिया और ऊँचे स्वर में पुकारा, "भारत माँ की जय" इतना कहते ही वह वीर सर्वदा के लिए विछुड़ गया।

❑

कदम पीछे न हटाने वाला ही ऐश्वर्य को जीतता है।
—नैपोलियन

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मेरे से मौत भी डरेगी — खुदीराम

क्रान्तिकारी खुदीराम वोस को फाँसी होने वाली थी। एक अंग्रेज़ अफसर उनके पास आया। उसने देखा कि, खुदीराम गीत गा रहा है। उसकी अलमस्ती देखकर वह अफसर वहुत चकित हुआ। उसके हाथ में आम था। उसने खुदीराम को आवाज़ देकर कहा—'लो खुदीराम आम खाओ।'

खुदीराम ने नि:संकोच आम ले लिया। फिर वह अफसर आगे वढ़ गया।

कुछ देर वाद वह अफसर लौटा, तो उसने देखा कि वह आम खिड़की में सींखचे के ऊपर रखा हुआ है। वह पास आकर बोला—

'खुदीराम! तुमने वह आम नहीं खाया?' कहते हुए उसने उस आम को स्वयं उठा लिया। उठाया तो वह आम पिचक गया।

वस्तुतः खुदीराम ने आम चूसने के वाद उसे फिर फुलाकर वहाँ खिड़की पर रख दिया था; जो ताजा आम दिखाई देता था।

जव उस अफसर के हाथ में वह आम पिचक गया, तो खुदीराम ठहाका लगाकर हँस पड़ा। चन्द घण्टों वाद जिसे फाँसी होने वाली थी। उसकी अलमस्ती देखकर अफसर अपने को रोक न सका।

विस्मित मन में उसने खुदीराम से पूछ ही लिया— "खुदीराम! तुम्हें मौत से डर नहीं लगता?"

खुदीराम ने उसी मस्ती में हँसते हुए जवाव दिया— "आजादी के दीवाने मौत से डरते नहीं, मौत खुद ऐसे लोगों से डरने लगती है।"

□

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लाँस नायक अल्बर्ट एक्का

लांस नायक अल्बर्ट एक्का १४ गार्डज की वाई अग्रिम कम्पनी का एक अंग था, जव उसने पूर्वी मोर्चे पर गंङ्गा सागर में शत्रु की रक्षा पंक्तियों पर आक्रमण किया था। शत्रु ने मज़वूत मोर्चावन्दी की हुई थी। आक्रमणकारी सैनिकों की तोपों की गोलीवारी तथा भारी छोटे अस्त्रों की गोलियों का सामना करना था, किन्तु वे अपने लक्ष्य की ओर वढ़ते गए। उन्हें प्रवल आमने-सामने युद्ध का भी सामना करना पड़ा लाँस नायक अल्वर्ट ने देखा कि शत्रु की एक हल्की मशीनगन उनकी कम्पनी को भारी प्राण हानि पहुँचा रही है तो उन्होंने अपनी सुरक्षा और जान की परवाह न करते हुए, शत्रु के वंकर पर हल्ला वोल दिया, दो शत्रु सैनिकों को संगीन से मौत के घाट उतार कर लाइट मशीनगन को मौन कर दिया। यद्यपि लाँस नायक अल्वर्ट एक्का गंभीर रूप से घायल हो गये थे, फिर भी वह अपने साथियों के साथ लड़ते हुए शत्रुपक्ष में एक मील तक अन्दर लक्ष्य की ओर वढ़ते चले गये – असीम साहस के साथ एक के वाद दूसरे वंकर को समाप्त करते हुए लक्ष्य एक के उत्तरी छोर की ओर से शत्रु नें मध्यम मशीनगन के मोर्चेवन्दी के भवन की दूसरी मंजिल से फायरिंग आरम्भ कर दी, जिसमें भारी संख्या में सैनिक हताहत हुए और आक्रमण की गति रुक गई।

इस वार पुनः यह वीर सैनिक अपनी जान की परवाह न करते हुए तथा अपने गम्भीर घावों और शत्रु की भारी गोलावारी की भी परवाह न करते हुए, रेंगता गया तव तक जव तक वे मोर्चेवन्दी के भवन तक न पहुँच गया। इस वीर सैनिक ने वंकर के वचाव मार्ग द्वारा एक गोला फैंका जिससे एक शत्रु सैनिक मारा

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गया और दूसरा घायल हो गया। उधर मध्यम मशीनगन ने अपनी गोलियों की बरसात जारी रखी। उल्लेखनीय साहस और दृढ़ संकल्प के साथ लांस नायक अल्वर्ट एक्का ने एक तरफ से दीवार को पार किया और वंकर में दाखिल होकर एक शत्रु को संगीन घोपकर मार डाला, जो अभी भी फायरिंग कर रहा था उन्होंने मशीनगन को वन्द कर दिया, जिससे उसकी कम्पनी की और प्राण हानि न हो और इस पर अपने आक्रमण की सफलता को सुनिश्चित वनाया।

इस आक्रमण में चाहे वह गम्भीर रूप से घायल हो गया और अपने लक्ष्य पर कब्जा करने के वाद घावों की ताव न ला सका लेकिन इस आक्रमण के दौरान इस वीर नान कमिशन्ड अफसर ने शत्रु के समक्ष वार-वार अपने अदम्य साहस, वीरता तथा धैर्य का प्रदर्शन किया। उसकी वीरता तथा सर्वोच्च वलिदान की भावना, कर्तव्य के आह्वान से भी परे हैं।"

□

शरीर के लिए जैसे प्राण शक्ति अनिवार्य है उसी तरह राष्ट्र के लिए उसकी स्वतंत्रता

—लाल वहादुर शास्त्री

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बिस्मिल की वीर माता

काकोरी क्रांतिकारी षडयंत्र में १९ दिसम्बर सन् १९२७ को प्रातः ६ वजे 'भारत माता की जय' 'वन्दे मातरम्' और 'व्रिटिश साम्राज्य का अन्त हो' के नारे लगाते हुए श्री रामप्रसाद जी 'विस्मिल' फाँसी के फंदे पर निर्भय झूल गए।

इससे ठीक एक दिन पूर्व दिनांक १८ दिसम्बर सन् १९२७ ई. को उनकी माँ तथा उनके पूज्य पिताजी गोरखपुर ज़िला जेल में अपने पुत्र से अंतिम वार मिलने आए।

वीरवर रामप्रसाद जी को अपने माता-पिता के अंतिम-दर्शन के लिए जेल के मुख्य द्वार पर लाया गया, तो माँ को देखकर उनकी आँखों में सहसा आँसू आ गए। उनकी दोनों आँखें वरवस भर आईं।

रामप्रसाद जी की आँखों में आँसू की वूंद देखकर उनकी माँ सहसा चीख उठी। सिंहनी के समान वह वोली—

'राम! यह मैं क्या देख रही हूँ? अरे! आज तुम्हारी आँखों में आँसू? सुनो, वाहर जितने भी लोग मुझसे मिलने आते रहे हैं, मैंने सीना तानकर उनसे गौरव से कहा है कि— "मेरा वेटा अपनी मातृभूमि भारत देश के लिए फाँसी चढ़ने जा रहा है। तुम लोग देख लेना, मेरा वेटा हँसते-हँसते फाँसी पर चढ़ेगा, वह रोएगा नहीं। पर . . . पर. . . . हाय! आज तुम्हारी इन वड़ी-वड़ी रक्तरंजित आँखों में . . . हाय ये आँसू—आँसू देखकर अरे विस्मिल मैं शर्म से मरी जा रही हूँ ओह!"

हतप्रभ रामप्रसाद का अपनी माता को दिया गया उत्तर भी

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उतना ही ऐतिहासिक था।

विस्मिल ने करवद्ध कहा— "माँ तुम गलत समझ रही हो, माँ! ये तो खुशी के आँसू हैं। हाँ, भला कहो तो तुझ-सी-वीर माता मुझे कहाँ मिलेगी, जो फाँसी से एक दिन पूर्व अपने लाड़ले बेटे की आँखों में अश्रुकण देखकर उसे डाँटे। अहोभाग्य! हे माता! सुनो, भगवान से मेरी अन्तिम प्रार्थना यही है कि, पुनः मेरा जन्म ऐसी ही वीर माता की कोख से हो।"

❑

हम ऐसा जीवन जीने की कोशिश करें कि जब हमारी मौत की घड़ी आ पहुँचे तो हर कोई अफसोस करे।

—मार्क ट्वेन

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विश्वास की परीक्षा

अमर शहीद चंद्रशेखर आजाद व उनके अन्य क्रान्तिकारी साथियों के बीच आगरा में गुप्त बैठक हो रही थी। आजाद अपने साथियों को वता रहे थे कि गिरफ्तार किये गये क्रान्तिकारियों से अंग्रेज वहुत ही अमानवीय व पीड़ादायक व्यवहार करते हैं।

आजाद की वात सुनकर राजगुरू को लगा कि उनका आत्मविश्वास डिगने लगा है और वे अपने साथियों के लिए चाय वनाने के लिए दूसरे कमरे में चले गये जहाँ पर अंगीठी जल रही थी। चाय वनाते समय राजगुरु ने धधकती आग में सँडासी डाल दी। जव सँड़ासी लाल हो गयी तो फौरन उसे अपने सीने से लगा डाला। खाल जलने लगी पर उन्होंने उफ़ तक नहीं की और अपना सीना सात वार छेद डाला। जव काफी देर तक राजगुरु चाय लेकर नहीं आये तो चंद्रशेखर और उनके साथी, जहाँ राजगुरु बैठे थे, वहीं आ गये। कमरे का दृश्य देखकर आज़ाद स्तब्ध खड़े रह गये। हाय रे। 'ये तूने क्या कर डाला।' यह कहते हुए आज़ाद व उनके साथी रोने लगे। आज़ाद ने राजगुरु को अपनी छाती से लगाया। मुझे तुम पर गर्व है राजगुरु, आजाद ने कहा। ऐसे थे अमर शहीद क्रांतिकारी राजगुरु।

❑

CC-0 Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जापानियों की देशभक्ति

अमरीका में वेदाँत का प्रचार करके भारत लौटते हुए स्वामी रामतीर्थ जी जापान गए। वहाँ उनका भव्य-स्वागत हुआ।

उन्हें वहां एक विद्यालय में आमन्त्रित किया गया। वहाँ के एक नन्हें विद्यार्थी से स्वामी जी ने सप्रेम पूछा—"वच्चे! तुम किस धर्म को मानते हो?"

"वौद्ध धर्म को।" उस छात्र ने सादर उत्तर दिया।

स्वामी जी ने पुनः उससे पूछा— "बुद्ध के विषय में तुम्हारे क्या विचार हैं?"

विद्यार्थी ने सादर उत्तर दिया—

"वुद्ध तो भगवान हैं।" इतना कहकर उसने वुद्ध का ध्यान करके अपने देश की प्रथा के अनुसार भगवान वुद्ध को सम्मान के साथ प्रणाम किया।

तव स्वामी जी ने उस विद्यार्थी से पुनः पूछा — "अच्छा, वताओ तुम कनफ़्यूशियस को क्या समझते हो?"

विद्यार्थी ने वड़ी वुद्धिमानी से स्वामी जी के प्रश्न का उत्तर दिया— "कनफ़्यूशियस एक महान सन्त है।" और उसने पूर्ववत् वुद्ध की तरह, कनफ्यूशियस का ध्यान करके उन्हें भी सादर प्रणाम किया।

अन्त में स्वामी जी ने सवाल कि— "वच्चों! सुनो! अगर किसी दूसरे देश से जापान को जीतने के लिए एक भारी सेना आए और उसके सेनापति वुद्ध या कनफ्यूशियस ही हों तो उस समय तुम क्या करोगे।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इतना सुनना था कि उस छात्र का चेहरा तमतमा उठा। स्वामी जी की बात पर वह सहसा खड़ा हो गया। उसकी भुजायें फड़क उठीं। उसने अपनी आँखों से घूरते हुए जोश के साथ कहा—

"तव . . .तव . . . मैं अपनी तलवार से बुद्ध का सिर काट लूँगा और . . . और कनफ़्यूशियस को पैरों से रौंद दूँगा।"

उस छात्र का जोशीला उत्तर सुनकर स्वामी जी गद्‌गद् हो गए। उन्होंने उस वीर विद्यार्थी को प्यार से अपनी भुजाओं में भर लिया। उनके मुँह से सहसा निकल पड़ा—

"शावाश! वाह!! जिस देश के वच्चे ऐसे देशभक्त हों, वह देश कभी किसी का गुलाम नहीं हो सकता और उनकी उन्नति को कोई नहीं रोक सकता।"

❑

जो स्वदेशी राज्य होता है वह सर्वोपरि उत्तम होता है।

—स्वामी दयानन्द

CC-0 Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सावरकर का वसीयतनामा

भारतीय स्वाधीनता के इतिहास में वीर सावरकर का नाम वड़े आदर से लिया जाता है। मातृभूमि को गुलामी के वन्धनों से मुक्त करने के लिए वे हिंसा अहिंसा के विवादों में कभी नहीं पड़े, परन्तु उन्होंने सदा शान्तिपूर्ण प्रतिरोध किया।

स्वाधीनता की आवाज़ वुलन्द करने के कारण उन्हें कालेपानी की सज़ा भुगतनी पड़ी और वे तरह-तरह की यंत्रणाओं के शिकार हुए।

स्वाधीनता के वाद भी सावरकर को हर क्षण देश की चिंता रहती थी। अपनी व्यक्तिगत सुख सुविधा को वे हमेशा गौण स्थान देते थे। देश विभाजन से जो खून खरावा हुआ उस से सावरकर को गहरा आघात पहुँचा। चीन तथा पाकिस्तानी हमले का तो उन पर इतना घातक प्रभाव पड़ा कि वे फिर सम्भल ही न सके।

जब वे समझ गए कि उनका स्वास्थ्य गिर चुका है और देश के कुछ काम नहीं आ सकते तो उन्होंने दवा लेना भी छोड़ दिया और चिकित्सक से कहा कि उन्हें परम शांति की दवा दी जाए।

सावरकर में जन-कल्याण की भावना इस कदर कूट-कूट कर भरी थी कि अन्तिम क्षणों में भी वे देश और जनता को नहीं भूले। अपने वसीयतनामें में उन्होंने जब सब वातें लिखवा दीं तो अन्त में यह भी लिखवाया कि मेरे निधन पर हड़ताल करके तथा काम काज वन्द कर के राष्ट्रीय हानि न की जाए।

उन के इस अनुकरणीय उदाहरण को आज भुला दिया गया है, परन्तु उनकी अद्वितीय देशसेवा को नहीं भुलाया जा सकता। □

CC-0 Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्राणों से बढ़कर देश

भारत के प्रथम प्रधानमंत्री पण्डित जवाहरलाल नेहरू को स्वतन्त्रता संग्राम के दौरान वार-वार जेल यात्रा करनी पड़ी थी। उन्हें देहरादून, वरेली, अलमोड़ा, नैनी आदि जेलों में रखा गया।

इन्हीं में से एक जेलयात्रा के दौरान उन की पत्नी श्रीमती कमला नेहरू गम्भीर रूप से वीमार पड़ गई। डाक्टरों ने उन्हें क्षयरोग से पीड़ित घोषित कर दिया। जव भुवाली सैनिटोरियम में भर्ती कराने के वाद भी कोई सफलता नहीं मिली तो डाक्टरों ने उन्हें इलाज के लिए स्विट्ज़रलैंड ले जाने की सलाह दी।

पत्नी की वीमारी का हाल जान कर जवाहरलाल नेहरू को काफ़ी वेचैनी हुई। वे चाहते थे कि स्वयं अपनी देखरेख में विदेशों में उनका इलाज करवाएँ। ऐसी परिस्थिति में अनेक लोगों ने व्रिटिश सरकार से अनुरोध किया कि वह जवाहरलाल जी को जेल से रिहा कर दें, ताकि वे पत्नी का इलाज करा सकें। व्रिटिश सरकार ने यह शर्त रखी कि जवाहरलाल नेहरू स्वयं पैरोल के लिए प्रार्थनापत्र दें और इस दौरान राजनीतिक गतिविधियों से दूर रहने का वचन भी दें तो वह उन्हें रिहा कर देगी।

श्रीमती कमला नेहरू को जब यह पता चला तो उन्होंने जवाहरलाल नेहरू को स्पष्ट लिखा कि देश के आत्मसम्मान के विरुद्ध किसी भी शर्त को न मानें, क्योंकि देश का आत्मसम्मान उनके प्राणों से अधिक मूल्यवान हैं। पंडित नेहरू की दुविधा समाप्त हो गई। उन्होंने देश के आत्मसम्मान को सर्वोच्च स्थान दिया और पेरोल का प्रार्थनापत्र देने से इन्कार कर दिया। अन्ततः उन की पत्नी श्रीमती कमला नेहरू ने स्विट्ज़रलैंड के एक अस्पताल में दम तोड़ दिया। जवाहरलाल उस वक्त जेल की ही कोठरी में वन्द थे।

CC-0 Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और रस्सा काट दिया

मराठों के इतिहास की एक घटना है। मराठों ने सिँहगढ़ पर हमला किया और गोह की कमन्द के सहारे वे किले पर चढ़ गये। संयोग से लड़ाई में तानाजी मारे गये। इससे मराठों की सेना में भगदढ़ मच गई और वह भागकर उसी रस्से से नीचे उतरने को तैयार हो गई, जिससे ऊपर चढ़ कर आयी थी।

तानाजी के छोटे भाई सूर्याजी ने यह देखा तो उन्होंने उस रस्से को काट दिया और चिल्ला कर कहा, "वहादुरो, कहाँ जाते हो! रस्सा तो मैंने काट डाला।"

मराठों की सेना ने यह देखा तो वड़ी हैरानी हुई। उसके भागने का रास्ता ही वन्द हो गया था। तव उसने सोचा कि अब हम भागें या लड़ें, दोनों हालत में मरना ही होगा। ऐसा है तो भागें क्यों? लड़कर क्यों न मरें!"

इतना सोचते ही सेना में खोई हिम्मत फिर से आ गई। वह वहादुरी से लड़ाई से जुट गई। खूब लड़ी और अन्त में जीत मराठों की हुई। सिँहगढ़ उनके हाथ में आ गया।

यदि सूर्याजी ने रस्सा न काटा होता तो मराठों का इतिहास कुछ और ही होता। □

CC-0 Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ऐसे बनी राष्ट्र पताका

सम्मेलन में आये विश्व के एक हज़ार प्रतिनिधि इस भारतीय क्रान्तिकारी महिला की शान्तिवाणी को मन्त्रमुग्ध होकर सुन रहे थे। उसने कहा "भारत में व्रिटिश साम्राज्यवाद का वना रहना हम भारतीयों के लिए घोर अपमान और भारत के लिए सर्वनाश का कारण है। मैं समस्त स्वतन्त्रता-प्रेमियों का आह्वान करती हूँ कि विश्व की चौथाई से भी अधिक जनसंख्या वाले इस दलित राष्ट्र की स्वाधीनता में सभी सहयोग दें।" भारतीय क्रांतिकारी महिला भीकाजी कामा के इनं शव्दों ने जर्मनी के इस विश्व समाजवादी सम्मेजन में उपस्थित नेताओं और जनसमुदाय को आन्दोलित कर दिया। उन्होंने भावुक होकर पूछा, "आपके इस गौरवशाली राष्ट्र की पताका कहाँ है मैडम। "मैडम भीकाजी कामा ने एक क्षण आन्दोलित जनसमुदाय की ओर देखा और अपनी साड़ी का पल्लू फाड़कर हवा में लहराते हुए वोल उठीं "यह है मेरे राष्ट्र की पताका — राष्ट्र की पताका हमारे दृढ़ सङ्कल्प में है।"

मैडम कामा के इस प्रथम सङ्कल्प से ही तिरंगे राष्ट्रीय ध्वज का विकास हुआ। विश्वभर में भारतीय स्वतन्त्रता का शंख फूंकने वाली क्रांतिकारी महिला से व्रिटिश सरकार आतङ्कित हो उठी। गोरी सरकार ने सोचा था कि लंदन से निष्कासन और भारत में प्रवेश पर प्रतिवन्ध के वाद कामा का स्वातन्त्र्यस्वर वन्द हो जायेगा। किन्तु भीकाजी कामा ने यह सिद्ध कर दिया कि कर्मवीरों के सम्मुख कोई वाधा टिक नहीं सकती है। व्रिटेन से निष्कासन के पश्चात् कामा ने फ्रान्स को अपना कार्यक्षेत्र वनाया।

कामा ने विश्वभर के क्रान्तिकारियों का मन्च वनाकर भारतीय स्वातन्त्र्य सन्देश को विश्वभर में गुञ्जित कर प्रवल विश्व जनमत तैयार किया। □

CC-0 Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सिख-गुरु का महान बलिदान

पाँचवें सिख गुरु अर्जुनदेव अतीव उच्चकोटि के बलिदानी हुए हैं और उनका यह महान बलिदान हिन्दूधर्म के रक्षार्थ ही हुआ। मुगल बादशाह ने हिन्दू द्वेष से प्रेरित हो कर उन्हें कैद कराकर लाहौर के किले में डाल दिया और उन पर दो लाख रुपये का जुर्माना कर दिया। गुरु अर्जुनदेव ने स्पष्ट कह दिया कि मैं जुर्माना क्यों दूँ? क्या जुर्म किया है मैंने? बादशाह ने चिढ़कर उन्हें यातना देने की नयी युक्ति की। हुक्म दिया, "गर्म तवे पर भून दो इसे।

एक भारी और विशाल तवा, नीचे मनों लकड़ियाँ सुलगा कर गर्म किया गया, वह तपकर सुर्ख हो गया तो उस पर सिख-गुरु बलात् बैठा दिया गया। वे होँठ दृढ़ता से भींचे रहे, न आह भरी और चीखे-चिल्लाए, जैसे वे आत्मा हों, देह नहीं। देह झुलस कर स्याह पड़ गयी। बड़े-बड़े फ़फोले पड़ गये लेकिन मुँह से "उफ" तक न निकली। एक देवता सरीखा इन्सान जिन्दा ही भूना जा रहा है ज़ालिम मुगल हुकूमत में कोई पुर्साहाल नहीं। बड़े-बड़े काज़ी, मुल्ले मौलवी, दाँतों तले ऊँगली दबाकर उस महाप्राण गुरु को गर्म तवे पर शाँत से बैठे रहना देख रहे हैं लेकिन उनका दिल पसीजा, न ईमान और न ज़मीर।

गुरुजी ध्यान-मुद्रा में थे, वैसे ही अविचल रहे। खुद बादशाह हैरत में तमाशाई दँग था। फिर हुक्म हुआ - इसे गाय की कच्ची खाल में सी दिया जाये"।

कसाईयों ने वहीं गाय काटी, उसकी खाल खींची और गुरुजी को उस में जिन्दा ही सी देने की तैयारी होने लगी - तब तो गुरुजी

CC-0 Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

ओ३म्
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विचलित हो उठे। हिन्दू होकर गौ की खाल में कैसे सिलनें दें अपने शरीर को। वे तो गौरक्षक हैं। गौ भक्त हैं, बोले,

"वेशक मेरी देह का जो चाहे करना लेकिन मरने से पहले एक इच्छा है मेरी। मुझे दरिया में नहा लेने दें।"

उनकी वात मान ली गयी। जल्लाद उन्हें नहलाने दरिया ए-रावी की तरफ ले चले, उन दिनों पास ही लाहौर के किले के नीचे वहती थी रावी। गुरुजी ने उनके प्रवाह में और नहाते-नहाते जो एक गोता लगाया, तो गायव, जल्लाद और शाही पहरेदार सन्तरी वहुत भागे-दौड़े लेकिन गुरुजी उन्हें फिर नदी में न मिले। उनकी लाश की खोज वहुत की गई पर न मिली कहीं। हिन्दुत्व और हिन्दू धर्म की वेदी पर सिख-गुरु का यह प्रथम वलिदान था। "श्री गुरुग्रंथ साहिव" को उन्हीं की देन समझा जाता है।

□

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मेजर ध्यानचन्द की राष्ट्रभक्ति

आज वर्लिन में वड़ा अभूतपूर्व समारोह है। एक भारतीय सेनाधिकारी का इस देश का सर्वेसर्वा हिटलर अभिनन्दन करेगा। वड़ी वात है। एक पराधीन देश के सामान्य सैनिक अफ़सर ने ऐसा कौन सा पौरुष किया, चमत्कार कर दिखलाया कि जो शख्स दुनियाँ को झुकाने पर आमादा है।

वह क्षण भी आ गया। विपुल जन-संकुल समुदाय के बीच गाने-वजाने से गुंजित व्यापक समारोह में वह भारतीय धीर किन्तु दृढ़ पगों से आकर हिटलर के समक्ष आ खड़ा हुआ है। सामान्य व्यक्तित्व वाला वह पुरुष हिटलर से हाथ मिला रहा है और आत्मगौरव से उसका प्रशस्त ललाट देदीप्यमान हो रहा है। हिटलर वहुत आश्चर्याभिभूत होकर कुछ एकटक उस भारतीय को देखता रहा है, फिर एक सज्जित सुवर्ण पदक उस भातीय के हाथों में ससंभ्रम रखा देता है। भारतीय सुशीलतावश मन्द स्मिति करता हुआ किञ्चित् अभिवादन की मुद्रा में झुकता है। अतः हिटलर कुछ सोच उसके समक्ष प्रस्ताव रखता है—

"मेजर! तुम हिन्दुस्तान छोड़ दो, जर्मनी चले आओ। हम तुम्हें आमन्त्रित करते हैं।

"धन्यवाद! लेकिन किस लिए? आप मुझे अपने देश में बुलाना चाहते हैं?" भारतीय की जिज्ञासा मुखरित होती है।

"ओ मेजर तुम्हें अपने बीच पाकर हम जर्मन वहुत खुश होंगे" तुम्हें अपनी सेना का फील्ड मार्शल वनाएंगे, हिन्दुस्तान में तो सिर्फ तुम मेजर का ही पद पा सके हो।" — हिटलर ने कहा

CC-0 Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

ओ३म्
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विनय किन्तु स्वाभिमान से पुनः मुस्करा उठा वह भारतीय, बोला – "आप के प्रस्ताव के प्रति आभारी रहूँगा, किन्तु मैं इसे स्वीकार नहीं कर सकता, क्योंकि उस स्थिति में मैं अपने प्रिय स्वदेश की कुछ भी सेवा न कर सकूँगा।"

फिर एक दिन जब वही भारतीय स्वदेश लौटा और उसे एक बार पटियाला जाने का मौका मिला तो उसने अत्यन्त सहज भाव से हिटलर द्वारा प्रदत्त वही पदक वहाँ के नौजवान खिलाड़ियों को समर्पित कर दिया। उससे पूछा गया "इसे आप क्यों दिये दे रहे हैं? यह तो आपकी निजी धरोहर है, यश की धरोहर . . ." तब उसने कहा – "निःसन्देह यह यश की धरोहर ही है, किन्तु यह मेरी व्यक्तिगत नहीं, पूरे राष्ट्र की अमानत है, उसे मैं आज राष्ट्र को सौंपता हूँ।"

वे थे हाकी के विश्वविख्यात जादूगर मेजर ध्यानचन्द, जिन्होंने सन् १९३६ के बर्लिन ओलंपिक में अकेले ही ६ गोल कर दिये थे तथा भारत ने जर्मनी को ८–१ से परास्त कर दिया था। ४०० से भी अधिक गोल करने वाले उस महान खिलाड़ी को अपने देश में अत्यन्त अभावग्रस्त रहकर अनेक "ध्यानचन्द" निर्माण करना अभिप्रेत था। जर्मनी में फील्ड मार्शल की पदगरिमा गवारा नहीं थी।

□

CC-0 Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

व्यक्ति सीखता है महान पुरुषों के आदर्श जीवन से। कभी कोई घटना संयोग या व्यक्ति विशेष का संयोग किसी–किसी को झकझोर देता है। घटनाओं से प्रेरित हो कुछ लोग महान तथा आदर्श बने। महानपुरुषों के जीवन में घटी घटनाओं से कुछ साधारण लोग उद्बुद्ध हुए और असाधारण व्यक्तित्व के धनी बने।

जीवन के प्रेरक प्रसंग जन मानस के लिए अमूल्य निधि है, जीवन की कठिन घड़ियों में भी नव–जीवन की आशा भरी किरण हैं। उद्बोधक, शिक्षाप्रद व गरिमापूर्ण झलकियाँ हमारे मन मस्तिष्क को आलोकित व आन्दोलित करती हुई जीवन का पाथेय बनेंगी।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

विचार प्रकाशन